Open Bible Stories Translation Questions

संस्करण 8.2

[hi]

कॉपीराइट और लाइसेंसिंग

Open Bible Stories Translation Questions
तारीख: 2023-04-19
संस्करण: 8.2
द्वारा प्रकाशित: BCS

Hindi Open Bible Stories
तारीख: 2023-04-24
संस्करण: 8.2
द्वारा प्रकाशित: BCS

License

Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International (CC BY-SA 4.0)

This is a human-readable summary of (and not a substitute for) the license.

You are free to:

- **Share** — copy and redistribute the material in any medium or format
- **Adapt** — remix, transform, and build upon the material

for any purpose, even commercially.

The licensor cannot revoke these freedoms as long as you follow the license terms.

Under the following conditions:

- **Attribution** — You must attribute the work as follows: "Original work available at https://door43.org/." Attribution statements in derivative works should not in any way suggest that we endorse you or your use of this work.
- **ShareAlike** — If you remix, transform, or build upon the material, you must distribute your contributions under the same license as the original.

No additional restrictions — You may not apply legal terms or technological measures that legally restrict others from doing anything the license permits.

Notices:

You do not have to comply with the license for elements of the material in the public domain or where your use is permitted by an applicable exception or limitation.

No warranties are given. The license may not give you all of the permissions necessary for your intended use. For example, other rights such as publicity, privacy, or moral rights may limit how you use the material.

विषयसूची

Open Bible Stories Translation Questions 5
1. सृष्टि 5
2. पाप संसार में प्रवेश करता है 10
3. बाढ़ 14
4. अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा 19
5. प्रतिज्ञा का पुत्र 23
6. परमेश्वर इसहाक के लिए प्रबंध करता है 27
7. परमेश्वर याकूब को आशीष देता है 30
8. परमेश्वर यूसुफ और उसके परिवार को बचाता है 33
9.परमेश्वर मूसा को बुलाता है 38
10. दस विपत्तियाँ 43
11. फसह 47
12. निर्गमन 50
13. इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा 54
14. जंगल में भटकना 59
15. प्रतिज्ञा का देश 64
16. छुड़ाने वाले 69
17. दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा 75
18. विभाजित राज्य 80
19. भविष्यद्वक्ता 84
20. बंधुआई और लौटना 90
21. परमेश्वर मसीह का प्रतिज्ञा करता है 94
22. यूहन्ना का जन्म 99
23. यीशु का जन्म 102
24. यूहन्ना यीशु को बपतिस्मा देता है 106
25. शैतान यीशु की परीक्षा करता है 109
26. यीशु ने अपनी सेवकाई आरम्भ की 112
27. दयालु सामरी की कहानी 116
28. धनी जवान शासक 120
29. निर्दयी दास की कहानी 123
30. यीशु का पाँच हजार लोगों को भोजन खिलाना 126
31. यीशु का पानी पर चलना 129
32. यीशु का दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति और एक बीमार स्त्री को चंगा करना 132
33. एक किसान की कहानी 137
34.यीशु दूसरी कहानियों की शिक्षा देता है 140
35. दयालु पिता की कहानी 144
36. रूपान्तरण 148
37. यीशु द्वारा लाज़र को मृतकों में से जिलाया जाना 151
38. यीशु के साथ विश्वासघात 155
39. यीशु का परीक्षण किया जाता है। 160
40. यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाता है 164
41. परमेश्वर यीशु को मरे हुओं में से जिलाया 167
42. यीशु स्वर्ग को लौट जाता है 170
43. कलीसिया का आरम्भ 174
44. पतरस और यूहन्ना द्वारा एक भिखारी को चंगा करना 178
45.स्तिफनुस और फिलिप्पुस 181
46. शाऊल (पौलुस) का यीशु का अनुयायी बनना 185
47. फिलिप्पी में पौलुस और सीलास 189

48.यीशु ही प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह है 193
49. परमेश्वर की नई वाचा 198
50. जब यीशु वापस लौटेगा 204

योगदानकर्ताओं 210
Open Bible Stories Translation Questions योगदानकर्ताओं 210
Hindi Open Bible Stories योगदानकर्ताओं 210

Open Bible Stories Translation Questions

1. सृष्टि

01:01

इस प्रकार से आरम्भ में परमेश्वर ने सब चीजों की सृष्टि की। उसने छः दिनों में संसार की और जो कुछ उसमें है उन सब की सृष्टि की। परमेश्वर द्वारा पृथ्वी की रचना के बाद वह अंधकारमय और खाली थी, क्योंकि अभी तक परमेश्वर ने उसमें किसी भी चीज को नहीं बनाया था। परन्तु परमेश्वर का आत्मा पानी के ऊपर मंडराता था।

संसार में सब कुछ कहां से आया?

परमेश्वर ने सब कुछ बनाया।

परमेश्वर को सब कुछ बनाने में कितना समय लगा?

उसने छह दिन का समय लिया।

01:02

फिर परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो!" और उजियाला हो गया। परमेश्वर ने देखा कि उजियाला अच्छा है और उसे "दिन" कहा। और उसने उसे अंधकार से अलग किया जिसे उसने "रात" कहा। परमेश्वर ने सृष्टि करने के पहले दिन में उजियाले की रचना की।

पहले दिन बनाए गए दिन और रात के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया क्या थी?

उसने कहा कि वे अच्छे थे।

01:03

सृष्टि करने के दूसरे दिन में परमेश्वर ने कहा, "पानी के ऊपर एक अंतर हो।" और एक अंतर हो गया। परमेश्वर ने उस अंतर को "आकाश" कहा।

01:04

तीसरे दिन में परमेश्वर ने कहा, "पानी एक स्थान पर इकट्ठा हो जाए और सूखी भूमि दिखाई दे।" उसने सूखी भूमि को "पृथ्वी" कहा और पानी को "समुद्र" कहा। परमेश्वर ने देखा कि जो उसने बनाया था वह अच्छा था।

तीसरे दिन बनाए गए पृथ्वी और समुद्रों के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया क्या थी?

उसने कहा कि वे अच्छे थे।

01:05

फिर परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी सब प्रकार के पेड़ और पौधे उगाए।" और ऐसा ही हुआ। परमेश्वर ने देखा कि जो उसने बनाया था वह अच्छा था।

तीसरे दिन बनाए गए पेड़ों और पौधों के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया क्या थी?

उसने कहा कि वे अच्छे थे।

01:06

सृष्टि करने के चौथे दिन में परमेश्वर ने कहा, "आकाश में ज्योतियाँ हों।" और सूर्य, चंद्रमा और तारागण प्रकट हुए। परमेश्वर ने उनको पृथ्वी पर प्रकाश देने के लिए और दिन और रात, मौसमों और वर्षों में भेद करने के लिए बनाया। परमेश्वर ने देखा कि जो उसने बनाया था वह अच्छा था।

चौथे दिन बनाए गए सूर्य, चंद्रमा और तारों के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया क्या थी?

उसने कहा कि वे अच्छे थे।

01:07

पाँचवें दिन परमेश्वर ने कहा, "पानी जीवित प्राणियों से भर जाये और आकाश में पक्षी उड़ने लगें।" इस प्रकार से उसने पानी में तैरने वाले सब जन्तुओं को और सभी पक्षियों को बनाया। परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा था और उसने उनको आशीष दी।

समुद्र की चीज़ों और पाँचवें दिन बनाए गए पक्षियों के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया क्या थी?

उसने कहा कि वे अच्छे थे।

01:08

सृष्टि के छठवें दिन में परमेश्वर ने कहा, "भूमि पर रहने वाले सभी प्रकार के जानवर हों।" और परमेश्वर के कहे अनुसार ऐसा हो गया। कुछ जानवर पालतू थे, कुछ भूमि पर रेंगने वाले, और कुछ जंगली जानवर थे। और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा था।

छठे दिन बनाए गए ज़मीन के जानवरों के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया क्या थी?

उसने कहा कि वे अच्छे थे।

01:09

फिर परमेश्वर ने कहा, "आओ हम मनुष्य को अपने स्वरूप में और अपनी समानता में बनाएँ। वे पृथ्वी पर और सब जानवरों पर अधिकार रखें।"

परमेश्वर ने मनुष्य को किस प्रकार पशुओं से भिन्न बनाया?

उसने मनुष्य को अपने स्वरूप और समानता में बनाया।

परमेश्वर ने क्या कहा कि मनुष्य की जिम्मेदारी होगी?

उनका पृथ्वी और पशुओं पर अधिकार होगा, और वे उनकी देखभाल करेंगे।

01:10

अत: परमेश्वर ने कुछ मिट्टी लेकर उससे मनुष्य को बनाया और उसमें जीवन के श्वांस को फूँक दिया। इस मनुष्य का नाम आदम था। परमेश्वर ने एक बड़ा बगीचा लगाया जहाँ आदम रह सकता था, और उसकी देखभाल करने के लिए आदम को वहाँ रख दिया।

परमेश्वर ने पहले मनुष्य को कैसे बनाया?

परमेश्वर ने उसे मिट्टी से बनाया।

मनुष्य जिवित कैसे हुआ?

परमेश्वर ने उसमें प्राण फूंक दिए।

आदमी का नाम क्या था?

उसका नाम आदम था।

परमेश्वर ने आदम को कहाँ रखा?

उसने आदम को उस वाटिका में रखा जिसे परमेश्वर ने लगाया था।

01:11

उस बगीचे के मध्य में परमेश्वर ने दो विशेष पेड़ लगाए – जीवन का पेड़ और भले और बुरे के ज्ञान का पेड़। परमेश्वर ने आदम से कहा कि वह उस बगीचे के जीवन के पेड़ और भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ को छोड़ कर अन्य किसी भी पेड़ के फल को खा सकता है। अगर उसने उस पेड़ का फल खाया तो वह मर जाएगा।

किस विशेष पेड़ से आदम को खाने की अनुमति नहीं थी?

वह भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल नहीं खा सकता था।

क्या होगा यदि आदम भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाए?

वह मर जाएगा।

01:12

फिर परमेश्वर ने कहा, "पुरुष के लिए अकेला रहना अच्छा नहीं है।" लेकिन कोई भी जानवर आदम का साथी न हो सका।

हर तरह के जानवर होते हुए आदम अकेला क्यों था?

जानवर आदम के लिए **सहायक** नहीं बन पा रहे थे।

01:13

इसलिए परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद में डाल दिया। फिर परमेश्वर ने आदम की एक पसली लेकर उससे एक स्त्री की रचना की और उसे आदम के पास लेकर आया।

परमेश्वर ने औरत को कैसे बनाया?

उसने उसे आदम की पसली से बनाया।

01:14

जब आदम ने उसे देखा तो उसने कहा, "कम से कम यह तो मेरे जैसी है! यह 'स्त्री' कहलाएगी, क्योंकि यह पुरुष में से बनाई गई है।" इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़ देता है और अपनी पत्नी के साथ एक हो जाता है।

स्त्री नाम से आदम के लिए क्या अर्थ था?

इसका अर्थ था कि वह आदमी से बनी थी।

एक आदमी की पत्नी होने का उद्देश्य क्या है?

उन्हें एक होना है।

01:15

परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को अपने स्वरूप में बनाया। उसने उनको आशीष दी और उनसे कहा, "बहुत सारी संतानें और पोते-परपोते उत्पन्न करो और पृथ्वी को भर दो!" और परमेश्वर ने देखा कि जो कुछ भी उसने बनाया था वह बहुत अच्छा था, और वह उन सब से बहुत प्रसन्न था। यह सब कुछ सृष्टि करने के छठवें दिन हुआ था।

परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के बारे में क्या कहा जब उसने इसे पूरा किया?

उन्होंने कहा कि यह बहुत अच्छी थी।

01:16

जब सातवाँ दिन आया तो जो कुछ परमेश्वर कर रहा था उसने उस सारे काम को समाप्त किया। उसने सातवें दिन को आशीष दी और उसे पवित्र ठहराया, क्योंकि उस दिन उसने सब चीजों की सृष्टि करने को समाप्त किया था। इस प्रकार से परमेश्वर ने संसार की और जो कुछ उसमें है उन सब की सृष्टि की।

परमेश्वर ने सातवें दिन क्या किया?

उसने अपना सब काम पूरा किया और सातवें दिन को आशीर्वाद दिया और पवित्र ठहराया।

2. पाप संसार में प्रवेश करता है

02:01

आदम और उसकी पत्नी परमेश्वर द्वारा उनके लिए बनाए गए उस सुंदर बगीचे में रहते हुए बहुत खुश थे। उनमें से कोई भी कपड़े नहीं पहनता था, फिर भी इस बात ने उनमें से किसी को शर्मिन्दा नहीं किया था, क्योंकि संसार में पाप नहीं था। वे अक्सर उस बगीचे में टहला करते थे और परमेश्वर से बात किया करते थे।

आदम और हव्वा को अपने नंगे होने पर लज्जित क्यों नहीं होना पड़ा?

दुनिया में कोई पाप नहीं था।

02:02

लेकिन उस बगीचे में एक साँप था। वह बहुत धूर्त था। उसने उस स्त्री से पूछा, "क्या सचमुच परमेश्वर ने तुमसे इस बगीचे के किसी भी पेड़ के फल को खाने से मना किया है?"

हव्वा से साँप का पहला प्रश्न क्या था?

उसने पूछा, “क्या सचमुच परमेश्वर ने तुम से कहा है, कि तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?”

02:03

उस स्त्री ने उत्तर दिया, "परमेश्वर ने हम से कहा है कि हम उस भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ के अलावा किसी भी पेड़ के फल को खा सकते हैं। परमेश्वर ने हम से कहा है कि अगर तुमने उस फल को खाया या उसे छुआ भी, तो तुम मर जाओगे।"

आदम और उसकी पत्नी को किस पेड़ का फल खाने की अनुमति नहीं थी?

उन्हें भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल नहीं खाना था।

परमेश्वर ने क्या कहा कि यदि आदम और उसकी पत्नी भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाएंगे तो क्या होगा?

उसने कहा कि वे मर जाएंगे।

02:04

उस साँप ने स्त्री को जवाब दिया, "यह सच नहीं है! तुम नहीं मरोगे। परमेश्वर जानता है कि जैसे ही तुम उस फल को खाओगे, तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे और उसके समान भले और बुरे को समझने लगोगे।"

साँप ने क्या कहा कि परमेश्वर क्यों नहीं चाहता था कि वे फल खाएँ?

उसने कहा कि परमेश्वर झूठ बोल रहे थे क्योंकि परमेश्वर नहीं चाहते थे कि वे चीजों को समझें जैसा परमेश्वर खुद समझते थे।

02:05

उस स्त्री ने देखा कि वह फल मनभावना था और स्वादिष्ट दिखाई देता था। वह भी समझदार बनना चाहती थी, इसलिए उसने फल को तोड़ कर खा लिया। फिर उसने अपने पति को जो उसके साथ था वह फल दिया और उसने भी खा लिया।

स्त्री ने फल क्यों खाया?

उसने देखा कि यह सुंदर और स्वादिष्ट था, और वह बुद्धिमान बनना चाहती थी।

क्या आदम और उसकी पत्नी को फल खाने के लिए विवश किया गया था?

नहीं, उन्होंने स्वेच्छा से फल खाना और परमेश्वर की अवज्ञा करना चुना।

02:06

अचानक ही, उनकी आँखें खुल गईं, और उनको मालूम हुआ कि वे नंगे थे। उन्होंने पत्तों को एक साथ सिलकर उनके कपड़े बनाकर उनसे अपने शरीरों को ढाँकने की कोशिश की।

पुरुष और स्त्री ने क्या किया जब उन्हें पता चला कि वे नंगे हैं?

उन्होंने कपड़े बनाने के लिए पत्तों को एक साथ सिल दिया।

02:07

तब पुरुष और उसकी पत्नी ने उस बगीचे में टहलते हुए परमेश्वर की आवाज को सुना। वे दोनों परमेश्वर से छिप गए। तब परमेश्वर ने पुरुष को आवाज लगाई, "तू कहाँ है?" आदम ने जवाब दिया, "मैंने आपको बगीचे में टहलते हुए सुना, और मैं डर गया था, क्योंकि मैं नंगा था। इसलिए मैं छिप गया।"

02:08

फिर परमेश्वर ने पूछा, "तुझे किसने बताया कि तू नंगा है? क्या तूने वह फल खाया है जिसे खाने के लिए मैंने तुझे मना किया था?" पुरुष ने जवाब दिया, "आपने मुझे जो यह स्त्री दी है इसने ही मुझे वह फल दिया।" तब परमेश्वर ने स्त्री से पूछा, "तूने यह क्या किया है?" वह स्त्री बोली, "साँप ने मुझे धोखा दिया है।"

उस पुरुष ने कैसी प्रतिक्रिया दी जब परमेश्वर ने उसके पाप के बारे में उससे सामना किया?

उसने स्त्री पर आरोप लगाया।

जब परमेश्वर ने उसके पाप के बारे में उससे सामना किया तो स्त्री ने कैसी प्रतिक्रिया दी?

उसने सांप को दोष दिया।

02:09

परमेश्वर ने साँप से कहा, "तू श्रापित है! तू अपने पेट के बल चला करेगा और मिट्टी चाटेगा। तू और यह स्त्री एक दूसरे से घृणा करेंगे, और तेरी संतानें और उसकी संतानें भी एक दूसरे से घृणा करेंगी। इस स्त्री का वंशज तेरे सिर को कुचलेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।"

साँप पर परमेश्वर का क्या श्राप था?

तू पेट के बल चला करेगा, और स्त्री की सन्तान तेरा सिर कुचलेगी।

02:10

तब परमेश्वर ने स्त्री से कहा, "मैं तेरे संतान जन्माने को बहुत पीड़ादायक करूँगा। तू अपने पति से लालसा करेगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।"

स्त्री पर परमेश्वर का क्या श्राप था?

तेरा प्रसव पीड़ादायक होगा, हालाँकि तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।

02:11

परमेश्वर ने पुरुष से कहा, "तूने अपनी पत्नी की सुनी है और मेरी आज्ञा नहीं मानी है। इसलिए भूमि श्रापित हुई है, और तुझे भोजन उगाने के लिए कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता होगी। उसके बाद तू मर जाएगा, और तेरा शरीर मिट्टी में मिल जाएगा।" उस पुरुष ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रखा, जिसका अर्थ है "जीवन देने वाली", क्योंकि वह सब जातियों की माता होगी। और परमेश्वर ने आदम और हव्वा को जानवर की खाल से बने कपड़े पहनाए।

पुरुष पर परमेश्वर का क्या श्राप था?

तुम अन्न उपजाने के लिये कठिन परिश्रम करोगे, और तुम मरकर मिट्टी में मिल जाओगे।

02:12

फिर परमेश्वर ने कहा, "अब भले और बुरे को जानने से मनुष्य हमारे समान हो गया है, इसलिए उनको उस जीवन के पेड़ के फल को नहीं खाने देना चाहिए कि वे सदा के लिए जीवित रहें।" इसलिए परमेश्वर ने आदम और हव्वा को उस बगीचे से बाहर निकाल दिया। और परमेश्वर ने किसी को भी उस जीवन के पेड़ के फल को खाने से रोकने के लिए उस बगीचे के प्रवेशद्वार पर शक्तिशाली स्वर्गदूतों को रख दिया।

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को सदा जीवित रहने से कैसे रोका?

उसने उन्हें जीवन के वृक्ष वाले बगीचे से बाहर भेज दिया और शक्तिशाली स्वर्गदूतों के साथ प्रवेश द्वार की रक्षा की।

3. बाढ़

03:01

बहुत समय के बाद, संसार में बहुत से लोग रहते थे। वे बहुत दुष्ट और उपद्रवी हो गए थे। यह इतना बुरा था कि परमेश्वर ने एक बड़ी बाढ़ से इस पूरे संसार को नष्ट करने का निर्णय लिया।

परमेश्वर ने संसार को नष्ट करने का निर्णय क्यों लिया?

लोग बहुत दुष्ट और हिंसक हो गए थे।

परमेश्वर ने दुनिया को नष्ट करने की योजना कैसे बनाई?

वह एक बड़ी बाढ़ भेजेगा।

03:02

परन्तु परमेश्वर नूह से प्रसन्न था। वह दुष्ट मनुष्यों के बीच रहने वाला एक धर्मी व्यक्ति था। परमेश्वर ने नूह को बताया कि वह एक विशाल बाढ़ को लाने वाला है। इस कारण, उसने नूह से एक बड़ी नाव बनाने के लिए कहा।

नूह किस प्रकार का मनुष्य था?

वह एक धर्मी व्यक्ति थे।

03:03

परमेश्वर ने नूह को लगभग 140 मीटर लंबी, 23 मीटर चौड़ी और 13.5 मीटर ऊँची नाव बनाने के लिए कहा। नूह को उसे लकड़ी से बनाना था और उसमें तीन तल, बहुत से कमरे, एक छत और एक खिड़की बनानी थी। वह नाव नूह, उसके परिवार, और भूमि के हर प्रकार के जानवरों को उस बाढ़ से सुरक्षित रखेगी।

परमेश्वर ने नूह से क्या करने को कहा?

परमेश्वर ने उसे एक विशाल नाव बनाने के लिए कहा।

नाव का उद्देश्य क्या था?

नाव नूह, उसके परिवार और जानवरों को बाढ़ के दौरान सुरक्षित रखेगी।

03:04

नूह ने परमेश्वर की बात मानी। उसने और उसके पुत्रों ने वैसी ही नाव बनाई जैसी परमेश्वर ने बताई थी। क्योंकि वह नाव बहुत बड़ी थी इसलिए उसे बनाने में कई वर्ष लगे। नूह ने लोगों को आने वाली बाड़ के विषय में चेतावनी दी और उनको परमेश्वर की ओर फिरने के लिए कहा, परन्तु उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया।

दूसरे लोगों ने क्या किया जब नूह ने उनसे कहा कि जलप्रलय आएगा?

उन्हें विश्वास नहीं हुआ।

03:05

परमेश्वर ने नूह और उस के परिवार को अपने लिए और जानवरों के लिए पर्याप्त भोजन इकट्ठा करने का आदेश भी दिया। जब सब कुछ तैयार था, तो परमेश्वर ने नूह से कहा कि यह समय उसके, उसकी पत्नी के, उसके तीन पुत्रों के, और उनकी पत्नियों के – कुल मिलाकर आठ जनों के नाव में जाने का था।

03:06

परमेश्वर ने हर जानवर और पक्षी के नर और मादा को नूह के पास भेजा ताकि वे नाव में जा सकें और बाढ़ के दौरान सुरक्षित रह सकें। परमेश्वर ने ऐसे हर प्रकार के जानवरों के सात नर और सात मादाओं को भेजा जिनको बलि चढ़ाने के लिए उपयोग किया जा सके। जब वे सब नाव में पहुँच गए तो स्वयं परमेश्वर ने नाव के द्वार को बंद कर दिया।

बाढ़ से पहले कौन से जानवर नाव में आ गए थे?

और सब प्रकार के पशुओं में से एक नर और एक मादा, और सब प्रकार के पशुओं के सात नर और सात मादा, जो बलि के लिये उपयोग किए जा सकते थे, नाव पर आए।

नूह के परिवार और जानवरों के अंदर आने के बाद नाव का दरवाजा किसने बंद किया?

परमेश्वर ने दरवाजा बंद कर दिया।

03:07

तब बारिश होना आरम्भ हुआ, और बारिश होती गई, होती गई। बिना रुके चालीस दिन और चालीस रातों तक बारिश होती रही। सारे संसार की हर एक चीज, यहाँ तक कि ऊँचे से ऊँचे पर्वत भी पानी में डूब गए।

कब तक बारिश हुई?

40 दिन और 40 रात बारिश हुई।

03:08

सूखी भूमि पर रहने वाली हर एक चीज मर गई, उन लोगों और जानवरों को छोड़ कर जो नाव में थे। वह नाव पानी पर तैरती रही और नाव के भीतर की हर एक चीज को डूबने से सुरक्षित रखा।

बाढ़ का पानी कितना ऊपर पहुंचा?

इसने पूरी दुनिया में सब कुछ कवर किया, यहां तक कि सबसे ऊंचे पहाड़ भी।

जमीन पर रहने वाली हर चीज का क्या हुआ?

सब कुछ नष्ट हो गया।

03:09

बारिश के रुक जाने के बाद, पाँच महीने तक वह नाव पानी पर तैरती रही, और उस समय के दौरान पानी कम होने लगा था। तब एक दिन वह नाव एक पर्वत की चोटी पर जा टिकी, लेकिन संसार अभी भी पानी से ढका हुआ था। तीन महीने के बाद, पर्वतों की चोटियाँ दिखाई देने लगी थीं।

03:10

फिर और चालीस दिनों के बाद, नूह ने एक कौवे को यह देखने के लिए बाहर भेजा कि क्या पानी सूख गया था। वह कौवा सूखी भूमि की खोज में इधर-उधर उड़ता रहा, परन्तु उसे ऐसा कोई स्थान न मिला।

03:11

फिर बाद में नूह ने एक कबूतरी को बाहर भेजा। परन्तु उसे भी कोई सूखी भूमि न मिली, इसलिए वह नूह के पास वापिस आ गई। एक सप्ताह के बाद उसने उस कबूतरी को फिर से भेजा, और वह अपने चोंच में जैतून की एक शाखा लिए हुए वापिस आई। पानी घट रहा था, और पौधे फिर से उगने लगे थे।

03:12

नूह ने एक सप्ताह और प्रतीक्षा की और तीसरी बार उस कबूतरी को बाहर भेजा। इस बार, उसे ठहरने का स्थान मिल गया और वह वापिस नहीं आई। पानी सूख रहा था।

नूह को कैसे पता चला कि पानी सूख गया है?

उसने एक कबूतर उड़ाया और वह वापस नहीं आया।

03:13

दो महीने बाद परमेश्वर ने नूह से कहा, "अब तू और तेरा परिवार और सारे जानवर नाव से निकल आओ। बहुत सारी संतानें और पोते-परपोते उत्पन्न करो और पृथ्वी को भर दो।" अतः नूह और उसका परिवार नाव से बाहर निकल आया।

नूह और उसके परिवार के नाव से उतर जाने पर परमेश्वर ने क्या करने को कहा?

उसने उन्हें बहुत से बच्चे और पोते पैदा करने और पृथ्वी को भरने के लिए कहा।

03:14

नूह के नाव से बाहर आने के बाद, उसने एक वेदी बनाई और बलि के लिए उपयोग किए जा सकने वाले हर प्रकार के जानवरों में से कुछ को लेकर बलि चढ़ाई। परमेश्वर उस बलि से प्रसन्न हुआ और नूह और उसके परिवार को आशीष दी।

नाव से उतरने के बाद नूह ने किस प्रकार परमेश्वर की आराधना की?

उसने एक वेदी बनाई और कुछ जानवरों की बलि दी।

03:15

परमेश्वर ने कहा, "मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मनुष्यों द्वारा किए जाने वाले बुरे कामों के कारण मैं फिर कभी भूमि को श्राप नहीं दूँगा या बाढ़ द्वारा संसार को नष्ट नहीं करूँगा, हालाँकि मनुष्य अपने बचपन के समय से ही पापी हैं।

परमेश्वर ने क्या वादा किया था कि वह फिर कभी नहीं करेगा?

वह फिर कभी भूमि को शाप नहीं देगा या जलप्रलय से संसार को नष्ट नहीं करेगा।

03:16

फिर परमेश्वर ने अपनी वाचा के चिन्ह के रूप में प्रथम मेघधनुष को बनाया। जब कभी भी आकाश में मेघधनुष दिखाई देता है, तो परमेश्वर स्मरण करेगा कि उसने क्या प्रतिज्ञा की है और वैसे ही उसके लोग भी स्मरण करेंगे।

परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा के चिन्ह के रूप में क्या बनाया?

उसने आसमान में एक मेघधनुष बनाया।

4. अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा

04:01

बाढ़ के कई वर्षों के बाद, संसार में बहुत से लोग रहा करते थे, और उन्होंने फिर से परमेश्वर के और एक दूसरे के विरुद्ध पाप किया। क्योंकि वे सब एक ही भाषा बोला करते थे, इसलिए वे एक साथ इकट्ठा हुए और संसार को भर देने के परमेश्वर के आदेश के बजाए एक नगर को बनाया।

जलप्रलय के बाद, क्या लोगों ने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार पृथ्वी को भर दिया?

नहीं, उन्होंने इकट्ठे होकर एक नगर बसाया।

उस समय दुनिया में कितनी अलग-अलग भाषाएं थीं?

एक ही भाषा थी।

04:02

वे बहुत घमंडी थे, और उनको कैसा जीवन जीना चाहिए इस बारे में वे परमेश्वर के आदेश का पालन करना नहीं चाहते थे। यहाँ तक कि उन्होंने एक ऐसी मीनार को बनाना आरम्भ किया जो स्वर्ग तक पहुँचेगी। परमेश्वर ने देखा कि अगर वे एक साथ मिल कर बुराई करते रहेंगे, तो वे बहुत से पापी कामों को कर सकते हैं।

पृथ्वी पर फैलने के बजाय लोगों ने मिलकर क्या किया?

उन्होंने एक लंबा गुम्मट बनाना शुरू किया जो स्वर्ग तक पहुंच सके।

04:03

इसलिए परमेश्वर ने उनकी भाषा को बहुत सी विभिन्न भाषाओं में बदल दिया और उन लोगों को सारे संसार में फैला दिया। जिस नगर को उन्होंने बनाना आरम्भ किया था वह बाबेल कहलाया, जिसका अर्थ है "गड़बड़ी"।

लोगों को पूरी दुनिया में फैलाने के लिए परमेश्वर ने क्या किया?

उन्होंने अपनी भाषा को कई अलग-अलग भाषाओं में बदल दिया।

वे जिस नगर का निर्माण कर रहे थे उसका क्या नाम था?

इसका नाम **बाबेल** रखा गया।

बाबेल नाम का अर्थ क्या होता है?

इसका अर्थ है 'भ्रमित'।

04:04

कई सौ वर्षों के बाद, परमेश्वर ने अब्राम नाम के एक मनुष्य से बात की। परमेश्वर ने उससे कहा, "अपने देश और परिवार को छोड़ कर उस देश को चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। मैं तुझे आशीष दूँगा और तुझसे एक बड़ी जाति बनाऊँगा। मैं तेरा नाम महान करूँगा। जो तुझे आशीष दे मैं उसे आशीष दूँगा, और जो तुझे श्राप दे मैं उसे श्राप दूँगा। तेरे कारण संसार के सारे कुल आशीष पाएँगे।"

परमेश्वर ने अब्राम से क्या करने को कहा?

परमेश्वर ने अब्राम से कहा कि वह अपना देश और परिवार छोड़कर दूसरे देश में चला जाए।

परमेश्वर ने अब्राम के लिए क्या करने का वादा किया?

उसने अब्राम को वह सारी भूमि देने का वचन दिया जो वह देख सकता था, और उसका नाम महान करेगा, और उसके वंश से एक बड़ी जाति बनाएगी, और उसके द्वारा पृथ्वी के सारे कुलों को आशीष देगी।

04:05

अतः अब्राम ने परमेश्वर की बात मानी। उसने अपने सारे सेवकों और अपनी सारी सम्पत्ति समेत अपनी पत्नी सारै को लिया और कनान देश को चला गया जो परमेश्वर ने उसे दिखाया था।

अब्राम किस देश में गया था?

वह कनान देश को गया।

04:06

जब अब्राम कनान पहुँचा तो परमेश्वर ने उससे कहा, "अपने चारों ओर देख। मैं तुझे यह सारा देश दूँगा और तेरे वंशज हमेशा के लिए इस पर अधिकार रखेंगे।" तब अब्राम उस देश में बस गया।

कनान के बारे में परमेश्वर ने अब्राम से क्या प्रतिज्ञा की?

परमेश्वर इसे अब्राम को देगा और उसके वंशज हमेशा उसके पास रहेंगे।

04:07

मलिकिसिदक नाम का एक पुरुष था जो सर्वोच्च परमेश्वर का याजक था। एक दिन जब अब्राम युद्ध करने के बाद आ रहा था तो वह और अब्राम मिले। मलिकिसिदक ने अब्राम को आशीष दी और कहा "सर्वोच्च परमेश्वर जो स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी है वह तुझे आशीष दे।" फिर अब्राम ने युद्ध में जीती हुई सब चीजों का दशमांश मलिकिसिदक को दिया।

मलिकिसिदक कौन था?

वह परमप्रधान परमेश्वर का याजक था।

मलिकिसिदक ने अब्राम के लिए क्या किया?

उसने अब्राम को आशीर्वाद दिया।

अब्राम ने मलिकिसिदक को क्या दिया?

उसने उसे अपनी सारी सम्पत्ति का दसवाँ भाग दिया।

04:08

कई वर्ष बीत गए, परन्तु अभी भी अब्राम और सारै के कोई पुत्र नहीं था। परमेश्वर ने अब्राम से बात की और फिर से प्रतिज्ञा की कि उसका एक पुत्र उत्पन्न होगा और जैसे आकाश में तारे हैं वैसे ही उसके बहुत से वंशज होंगे। अब्राम ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया। परमेश्वर ने घोषणा की कि अब्राम एक धर्मी जन था क्योंकि उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया था।

कनान में कई वर्षों तक रहने के बाद परमेश्वर ने अब्राम से क्या वादा किया था?

अब्राम का एक पुत्र होगा और उसकी सन्तान आकाश के तारों के समान होगी।

परमेश्वर ने अब्राम को धर्मी क्यों कहा?

उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि अब्राम ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया।

04:09

तब परमेश्वर ने अब्राम से एक वाचा बाँधी। सामान्य रूप से, एक वाचा दो दलों के बीच में एक दूसरे के लिए कामों को करने का एक समझौता होता है। परमेश्वर ने अब्राम से वह प्रतिज्ञा तब की थी जब अब्राम सो रहा था, परन्तु वह तब भी परमेश्वर को सुन सकता था। परमेश्वर ने कहा, "मैं तेरे शरीर से उत्पन्न करके तुझे तेरा एक निज पुत्र दूँगा। मैं तेरे वंशजों को यह कनान देश देता हूँ।" परन्तु अभी भी अब्राम को कोई पुत्र नहीं था।

एक वाचा क्या है?

एक वाचा दो पक्षों के बीच एक समझौता है।

5. प्रतिज्ञा का पुत्र

05:01

अब्राम और सारै के कनान पहुँचने के दस वर्ष के बाद, अभी तक भी उनके कोई संतान नहीं थी। इसलिए, अब्राम की पत्नी सारै ने उससे कहा, "चूँकि परमेश्वर ने अभी तक मुझे संतान जन्माने में सक्षम नहीं किया है और अब मैं संतान जन्माने के लिए बहुत बूढ़ी हूँ, देख, मेरी दासी हाजिरा यहाँ है। उससे भी विवाह कर ले कि वह मेरे लिए एक संतान उत्पन्न कर सके।"

सारै ने क्यों सोचा कि उसके बच्चे नहीं होंगे?

वह बहुत बूढ़ी थी।

सारै ने अब्राम को बच्चा पैदा करने के लिए क्या करने को कहा?

उसकी दासी हाजिरा से विवाह कर ले, जिससे हाजिरा उसके लिए एक सन्तान उत्पन्न कर सके।

05:02

अतः अब्राम ने हाजिरा से विवाह कर लिया। हाजिरा का एक पुत्र जन्मा, और अब्राम ने उसका नाम इश्माएल रखा। परन्तु सारै हाजिरा से जलने लगी। जब इश्माएल तेरह वर्ष का था, परमेश्वर ने फिर से अब्राम से बात की।

हाजिरा के बच्चे का क्या नाम था?

उसका नाम **इश्माएल** था।

सारै और हाजिरा के बीच क्या समस्या हुई?

सारै हाजिरा से जलने लगी।

05:03

परमेश्वर ने कहा, "मैं सर्व-शक्तिमान परमेश्वर हूँ। मैं तेरे साथ एक वाचा बाँधूँगा।" तब अब्राम ने भूमि पर गिर कर दंडवत किया। परमेश्वर ने अब्राम से यह भी कहा, "तू बहुत सी जातियों का पिता होगा। मैं तुझे और तेरे वंशजों को उनकी निज भूमि होने के लिए कनान देश दूँगा और मैं सदा के लिए उनका परमेश्वर होऊंगा। तुझे अपने घराने के हर पुरुष का खतना करना है।"

परमेश्वर ने अब्राम से कौन सी वाचा बाँधी?

अब्राम बहुत सी जातियों का पिता होगा, और परमेश्वर उसे और उसके वंश को कनान देश देगा।

उनके बीच की वाचा के चिन्ह के रूप में परमेश्वर ने अब्राम से क्या करने को कहा?

अब्राम को अपने परिवार के सभी पुरुषों का खतना करना चाहिए।

05:04

"तेरी पत्नी सारै एक पुत्र जनेगी – वह प्रतिज्ञा का पुत्र होगा। उसका नाम इसहाक रखना। मैं उसके साथ अपनी वाचा को बनाए रखूँगा और वह एक बड़ी जाति बन जाएगा। मैं इश्माएल को भी एक बड़ी जाति बनाऊँगा, परन्तु मेरी वाचा इसहाक के साथ रहेगी।" तब परमेश्वर ने अब्राम का नाम बदलकर अब्राहम कर दिया, जिसका अर्थ है "बहुतों का पिता"। परमेश्वर ने सारै का नाम भी बदलकर सारा कर दिया, जिसका अर्थ है "मूलमाता"।

परमेश्वर ने किसके बारे में कहा कि वह प्रतिज्ञा का पुत्र होगा?

इसहाक, सारै का पुत्र, प्रतिज्ञा का पुत्र होगा।

परमेश्वर ने किसके बारे में कहा था कि एक महान जाति बनेगा?

इसहाक और इश्माएल दोनों ही महान जातियाँ बनेंगे।

अब्राम के नए नाम, अब्राहम का क्या अर्थ था?

उसके नाम का अर्थ **बहुतों का पिता** है।

05:05

उस दिन अब्राहम ने अपने घराने के सभी पुरुषों का खतना किया। लगभग एक वर्ष के बाद, जब अब्राहम 100 वर्ष की आयु का था और सारा 90 वर्ष की थी, तब सारा ने अब्राहम के पुत्र को जन्म दिया। जैसा परमेश्वर ने उनको कहा था उन्होंने उसका नाम इसहाक रखा।

05:06

जब इसहाक जवान हुआ तो परमेश्वर ने यह कह कर अब्राहम के विश्वास की परीक्षा की, "अपने एकलौते पुत्र को ले, और उसे मेरे लिए बलि के रूप में मार डाल।" फिर से अब्राहम ने परमेश्वर की बात मानी और अपने पुत्र को बलि करने के लिए तैयार किया।

जब इसहाक जवान था तो परमेश्वर ने अब्राहम से इसहाक के साथ क्या करने को कहा?

परमेश्वर ने अब्राहम से इसहाक को उसके लिए बलिदान करने के लिए कहा।

परमेश्वर ने अब्राहम से इसहाक की बलि देने को क्यों कहा?

परमेश्वर ने अब्राहम के विश्वास की परीक्षा लेने के लिए ऐसा किया।

05:07

जब अब्राहम और इसहाक बलि चढ़ाने के स्थान की ओर जाने लगे तो इसहाक ने पूछा, "हे पिता, हमारे पास बलि के लिए लकड़ियाँ तो हैं, परन्तु बलि करने का मेमना कहाँ है?" अब्राहम ने जवाब दिया, "हे मेरे पुत्र, परमेश्वर बलि करने के लिए मेमने का प्रबंध करेगा।"

अब्राहम ने इसहाक को क्या कारण बताया कि उनके पास बलिदान के लिए मेमना नहीं था?

अब्राहम ने कहा कि परमेश्वर बलिदान के लिए मेमना प्रदान करेगा।

05:08

जब वे बलि चढ़ाने के स्थान पर पहुँच गए, तो अब्राहम ने इसहाक को बाँध कर वेदी पर लिटा दिया। वह अपने पुत्र को मारने ही वाला था कि परमेश्वर ने कहा, "रुक जा! लड़के को नुकसान न पहुँचा! अब मैं जान गया हूँ कि तू मेरा भय मानता है क्योंकि तूने अपने एकलौते पुत्र को भी मुझसे बचाकर नहीं रखा।"

क्या परमेश्वर चाहता था कि अब्राहम इसहाक को मार डाले?

नहीं, वह केवल यह देखना चाहता था कि अब्राहम उसकी बात मानेगा या नहीं।

05:09

पास ही अब्राहम ने एक मेढ़े को देखा जो झाड़ियों में फँसा हुआ था। इसहाक के बदले बलि के लिए परमेश्वर ने मेढ़े का प्रबंध किया था। अब्राहम ने खुशी-खुशी मेढ़े की बलि चढ़ा दी।

इसहाक के स्थान पर परमेश्वर ने बलिदान के रूप में क्या प्रदान किया?

उसने झाड़ी में फंसा एक मेढ़ा प्रदान किया।

05:10

तब परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, "क्योंकि तू मेरे लिए सब कुछ देने को इच्छुक था, यहाँ तक कि अपने एकलौते पुत्र को भी, इसलिए मैं तुझे आशीष देने की प्रतिज्ञा करता हूँ। तेरे वंशज आकाश के तारों से भी अधिक होंगे। क्योंकि तूने मेरी आज्ञा को माना है इसलिए मैं तेरे परिवार के द्वारा संसार के सब कुलों को आशीष दूँगा।"

परमेश्वर ने अब्राहम के लिए क्या करने की प्रतिज्ञा की क्योंकि अब्राहम ने उसकी आज्ञा मानी थी?

उसने प्रतिज्ञा की कि अब्राहम का वंश आकाश के तारों से भी अधिक होगा, और यह कि संसार के सभी परिवार उसके परिवार के द्वारा आशीषित होंगे।

6. परमेश्वर इसहाक के लिए प्रबंध करता है

06:01

जब अब्राहम बहुत बूढ़ा हो गया था तब उसका पुत्र, इसहाक, एक पुरुष की आयु का हो गया था। इसलिए अब्राहम ने अपने एक सेवक को अपने पुत्र इसहाक के लिए उस देश से एक पत्नी लाने के लिए भेजा जहाँ उसके रिश्तेदार रहते थे।

अब्राहम ने अपने नौकर को अब्राहम के रिश्तेदारों की भूमि पर वापस क्यों भेजा?

उसने उसे अपने अब्राहम के बेटे इसहाक के लिए एक पत्नी वापस लाने के लिए भेजा।

06:02

जहाँ अब्राहम के रिश्तेदार रहते थे उस देश को जाने की एक बड़ी लंबी यात्रा के बाद परमेश्वर उस सेवक को रिबका के पास ले गया। वह अब्राहम के भाई की पोती थी।

दास ने रिबका को कैसे ढूँढा?

परमेश्वर उसे उसके पास ले गए।

रिबका अब्राहम से कैसे संबंधित थी?

रिबका अब्राहम के भाई की पोती थी।

06:03

रिबका अपने परिवार को छोड़ कर उस सेवक के साथ वापिस जाने के लिए मान गई। जैसे ही वे पहुँचे इसहाक ने उससे विवाह कर लिया।

क्या इसहाक से शादी करने के लिए रिबका को नौकर के साथ जाने के लिए मजबूर किया गया था?

नहीं, वह जाने को तैयार हो गई।

06:04

एक लंबे समय के बाद, अब्राहम मर गया। तब परमेश्वर ने अब्राहम के पुत्र इसहाक को, अब्राहम के साथ बाँधी गई वाचा की वजह से आशीष दी। उस वाचा में परमेश्वर की एक प्रतिज्ञा थी कि अब्राहम के अनगिनत वंशज होंगे। परन्तु इसहाक की पत्नी रिबका के संतान उत्पन्न नहीं हुईं।

जब अब्राहम की मृत्यु हुई तो इसहाक को परमेश्वर की कौन सी प्रतिज्ञाएँ दी गईं?

वे सारी प्रतिज्ञाएँ जो परमेश्वर ने अब्राहम से की थीं, जिसमें यह भी शामिल था कि उसके अनगिनत वंशज होंगे, इसहाक को दे दी गईं।

ऐसा क्यों लगा कि अनगिनत वंशजों का वादा इसहाक के ज़रिए पूरा नहीं होगा?

रिबका के बच्चे नहीं हो सकते थे।

06:05

इसहाक ने रिबका के लिए प्रार्थना की, और परमेश्वर ने उसे जुड़वाँ बच्चों का गर्भ धारण करने में सक्षम किया। जिस समय वे बच्चे रिबका के गर्भ में ही थे वे आपस में लड़ने लगे, इसलिए जो कुछ हो रहा था रिबका ने वह परमेश्वर को बता दिया।

06:06

परमेश्वर ने रिबका से कहा, "तू दो पुत्रों को जन्म देगी। उनके वंशज दो अलग-अलग जातियाँ बनेंगे। वे एक दूसरे से लड़ेंगे। परन्तु बड़े पुत्र से उत्पन्न होने वाली जाति को छोटे पुत्र से आने वाली जाति की आज्ञा माननी होगी।"

परमेश्वर ने रिबका को उसके दो जुड़वाँ पुत्रों के जन्म से पहले उनके बारे में क्या बताया?

वे दो जातियाँ बन जाएँगी, और बड़ा पुत्र छोटे की सेवा करेगा।

06:07

जब रिबका के बच्चों का जन्म हुआ, तो बड़ा पुत्र लाल और रोएँदार था, और उन्होंने उसका नाम एसाव रखा। तब छोटा पुत्र एसाव की एड़ी को पकड़े हुए जन्मा, और उन्होंने उसका नाम याकूब रखा।

बड़े बेटे का नाम क्या था?

उसका नाम **एसाव** था।

छोटे बेटे का नाम क्या था?

उसका नाम **याकूब** था।

7. परमेश्वर याकूब को आशीष देता है

07:01

जब वे बच्चे बड़े हुए तो याकूब को घर पर रहना अच्छा लगा, परन्तु एसाव को जानवरों को शिकार करना भाया। रिबका ने याकूब से स्नेह किया, परन्तु इसहाक ने एसाव से प्रीति रखी

07:02

एक दिन, जब एसाव शिकार करके वापिस आया तो वह बहुत भूखा था। एसाव ने याकूब से कहा, "जो तूने पकाया है उसमें से थोड़ा भोजन मुझे दे।" याकूब ने जवाब दिया, "पहले मुझसे यह प्रतिज्ञा कर कि पहलौठा होने के कारण से हर एक चीज जो तुझे मिलनी चाहिए, वह सब तू मुझे देगा।" अतः एसाव ने उन सब चीजों को याकूब को देने की प्रतिज्ञा कर दी। तब याकूब ने उसे कुछ भोजन दिया।

एसाव बड़ा पुत्र था। उसने वह सब कुछ क्यों दिया जो उसे छोटे बेटे याकूब को मिलना चाहिए?

जो कुछ एसाव को बड़े पुत्र के रूप में प्राप्त होना चाहिए था, उसने भोजन के बदले में याकूब को दिया।

07:03

इसहाक एसाव को आशीष देना चाहता था। परन्तु इससे पहले कि उसने ऐसा किया, रिबका और याकूब ने याकूब के एसाव होने को ढोंग करके उसके साथ धोखा किया। इसहाक बूढ़ा था और अब देख नहीं पाता था। इसलिए याकूब ने एसाव के कपड़े पहने और बकरी की खाल को अपने गले और हाथों पर लपेट लिया।

इसहाक अपना औपचारिक आशीर्वाद किसे देना चाहता था?

उसने इसे एसाव को दे दिया।

याकूब ने इसहाक को किस प्रकार बरगलाया कि वह उसे आशीष दे?

उसने बकरी की खाल पहनकर एसाव होने का नाटक किया ताकि इसहाक यह सोचे कि वह एसाव है।

07:04

याकूब इसहाक के पास आया और कहा, "मैं एसाव हूँ। मैं इसलिए आया हूँ कि तू मुझे आशीष दे।" जब इसहाक ने बकरी के बालों को महसूस किया और कपड़ों को सूँघा, तो उसने सोचा कि वह एसाव है और उसे आशीष दी।

07:05

एसाव ने याकूब से ईर्ष्या की क्योंकि याकूब ने उसके पहले पुत्र के अधिकार को और साथ ही उसकी आशीषों को भी चुरा लिया था। अतः उसने उनके पिता के मरने के बाद याकूब को मार डालने की योजना बनाई।

क्योंकि याकूब ने एसाव का आशीर्वाद चुरा लिया, एसाव ने उसके साथ क्या करने की योजना बनाई?

इसहाक के मरने के बाद एसाव ने याकूब को मारने की योजना बनाई।

07:06

परन्तु रिबका ने एसाव की योजना को सुन लिया। इसलिए उसने और इसहाक ने याकूब को उसके रिश्तेदारों के साथ रहने के लिए बहुत दूर भेज दिया।

इसहाक और रिबका ने क्या किया जब रिबका ने एसाव की याकूब को मारने की योजना के बारे में सुना?

उन्होंने याकूब को रिबका के सम्बन्धियों के पास रहने के लिए दूर भेज दिया।

07:07

याकूब कई वर्षों तक रिबका के रिश्तेदारों के साथ रहा। उस समय के दौरान उसने विवाह किया और उसके बारह पुत्र और एक पुत्री उत्पन्न हुई। परमेश्वर ने उसे बहुत धनी बना दिया।

अगले बीस वर्षों के दौरान याकूब के साथ क्या हुआ?

उसने शादी की, उसके 12 बेटे और एक बेटी थी, और परमेश्वर ने उसे अमीर बनाया।

07:08

बीस वर्षों तक कनान में अपने घर से दूर रहने के बाद, याकूब अपने परिवार, अपने सेवकों, और अपने सभी भेड़-बकरियों और पशुओं के झुंडों के साथ वहाँ वापिस लौटा।

07:09

याकूब इसलिए बहुत भयभीत था क्योंकि उसने सोचा कि एसाव अब भी उसे मार डालना चाहता था। इसलिए उसने उपहार स्वरूप जानवरों के झुंडों को एसाव के पास भेजा। जो सेवक उन झुंडों को लेकर गए थे उन्होंने एसाव से कहा, "तेरा दास याकूब, इन जानवरों को तुझे देता है। वह जल्दी ही आ रहा है।"

जब याकूब कनान लौटा तो वह क्यों डर गया?

उसने सोचा कि एसाव उसे मार डालेगा।

एसाव के क्रोध को शांत करने के लिए याकूब ने क्या किया?

उसने उपहार के रूप में जानवरों के झुंड एसाव को भेजे।

07:10

परन्तु एसाव अब याकूब को नुकसान पहुँचाना नहीं चाहता था। इसके बजाए, वह उसे एक बार फिर से देख कर बहुत प्रसन्न था। उसके बाद याकूब कनान में शान्तिपूर्वक रहा। फिर इसहाक मर गया और याकूब और एसाव ने उसे दफनाया। वाचा की प्रतिज्ञाएँ जो परमेश्वर ने अब्राहम से की थीं वे अब इसहाक से याकूब पर आ गई थीं।

क्या एसाव अब भी याकूब से नाराज़ था?

नहीं, वह अब याकूब को हानि नहीं पहुँचाना चाहता था।

याकूब कहाँ रहने लगा?

वह कनान में बस गया।

इसहाक की मृत्यु के बाद, किसने उन वाचाई प्रतिज्ञाओं को प्राप्त किया जो परमेश्वर ने मूल रूप से अब्राहम को दी थीं?

याकूब ने उन्हें प्राप्त किया।

8. परमेश्वर यूसुफ और उसके परिवार को बचाता है

08:01

कई वर्षों के बाद, जब याकूब बूढ़ा हो गया था, तो उसने अपने प्रिय पुत्र यूसुफ को उसके भाइयों की जाँच करने के लिए भेजा जो जानवरों के झुंडों की देखभाल कर रहे थे।

08:02

यूसुफ के भाइयों ने उससे ईर्ष्या करते थे क्योंकि उनका पिता उससे अधिक प्रेम करता था और इसलिए भी कि यूसुफ ने स्वप्न देखा था कि वह उनका शासक हो जाएगा। जब यूसुफ अपने भाइयों के पास आया तो उन्होंने उसे बंधक बना लिया और उसे दासों का व्यापार करने वालों को बेच दिया।

यूसुफ के भाई उससे नफरत क्यों करते थे?

क्योंकि यूसुफ याकूब का प्रिय पुत्र था, और क्योंकि यूसुफ ने स्वप्न देखा था कि वह उनका शासक होगा।

यूसुफ के भाइयों ने उसके साथ कौन-सी बुराई की?

उन्होंने उसे बंदी बना लिया और कुछ दास व्यापारियों को बेच दिया।

08:03

घर वापिस लौटने से पहले यूसुफ के भाइयों ने यूसुफ के वस्त्र को फाड़ कर बकरी के लहू में भिगो दिया। फिर उन्होंने वह वस्त्र अपने पिता को दिखाया ताकि वह यह सोचे कि किसी जंगली जानवर ने यूसुफ को मार डाला है। याकूब बहुत उदास था।

यूसुफ के भाइयों ने याकूब को उसके लापता होने के बारे में कैसे बताया?

उन्होंने यूसुफ के लबादे पर बकरे का लहू लगाया ताकि याकूब समझे कि किसी जंगली जानवर ने उसे मार डाला है।

08:04

दासों का व्यापार करने वाले वे लोग यूसुफ को मिस्र ले गए। नील नदी के किनारे पर बसा हुआ मिस्र एक विशाल और शक्तिशाली देश था। उन दासों का व्यापार करने वालों ने यूसुफ को एक धनी सरकारी अधिकारी को दास के रूप में बेच दिया। यूसुफ ने अपने स्वामी की अच्छी तरह से सेवा की, और परमेश्वर ने यूसुफ को आशीष दी।

क्या परमेश्वर ने यूसुफ को मिस्र में छोड़ दिया था?

नहीं, यूसुफ ने जो कुछ किया उसमें परमेश्वर ने उसे आशीष दी।

08:05

उसके स्वामी की पत्नी ने यूसुफ के साथ सोने की कोशिश की, परन्तु यूसुफ ने इस रीति से परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने से इंकार कर दिया। वह क्रोधित हो गई और यूसुफ पर झूठा आरोप लगा दिया, इसलिए उसे गिरफ्तार करके बन्दीगृह भेज दिया गया। यहाँ तक कि बन्दीगृह में भी, यूसुफ परमेश्वर के प्रति सच्चा रहा, और परमेश्वर ने उसे आशीष दी।

यूसुफ को मिस्र में जेल क्यों भेजा गया?

यूसुफ ने अपने स्वामी की पत्नी के साथ सोने से इन्कार किया, इसलिए उसने उस पर झूठा दोष लगाया।

08:06

दो वर्षों के बाद, यूसुफ अभी भी बन्दीगृह में था, भले ही वह निर्दोष था। एक रात, फिरौन, जैसा कि मिस्री लोग अपने राजाओं को पुकारते थे, ने दो स्वप्न देखे जिन्होंने उसे अत्यन्त विचलित कर दिया। उसका कोई भी सलाहकार उसे उन स्वप्नों का अर्थ नहीं बता पाया।

08:07

परमेश्वर ने यूसुफ को स्वप्नों का अर्थ बताने की क्षमता प्रदान की थी, इसलिए फिरौन ने यूसुफ को बन्दीगृह से अपने पास बुलाया। यूसुफ ने उसे उन स्वप्नों का अर्थ बताया और कहा, "परमेश्वर भरपूरी की फसलों वाले सात वर्षों के बाद अकाल के सात वर्ष भेजने वाला है।"

परमेश्वर ने यूसुफ को क्या क्षमता दी थी?

उसने उसे सपनों की व्याख्या करने की क्षमता दी।

फिरौन के सपने का क्या मतलब था?

परमेश्वर सात वर्षों के लिए भरपूर फसल भेजने वाला था जिसके बाद सात वर्ष का अकाल आने वाला था।

08:08

फिरौन यूसुफ से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उसे मिस्र का दूसरा सबसे शक्तिशाली पुरुष नियुक्त कर दिया।

यूसुफ के स्वप्न का अर्थ बताने के बाद फिरौन ने यूसुफ को क्या प्रतिफल दिया?

उसने यूसुफ को मिस्र का दूसरा सबसे शक्तिशाली व्यक्ति बनाया।

08:09

यूसुफ ने लोगों से अच्छी फसलों वाले सात वर्षों के दौरान बड़ी मात्रा में भोजन को जमा करने के लिए कहा। जब सात वर्षों का अकाल आया तब यूसुफ ने लोगों को वह भोजन बेचा ताकि उनके पास खाने के लिए पर्याप्त हो।

यूसुफ ने अकाल के लिए कैसे तैयारी की?

यूसुफ ने मिस्रियों से कहा कि वे सात अच्छे वर्षों के दौरान बड़ी मात्रा में खाद्य पदार्थ जमा करें, और फिर अकाल के सात वर्षों के दौरान उन्होंने लोगों को भोजन बेचा।

08:10

वह अकाल केवल मिस्र में ही नहीं, परन्तु कनान में भी भयंकर था जहाँ याकूब और उसका परिवार रहता था।

08:11

इसलिए, याकूब ने अपने सबसे बड़े पुत्रों को भोजन खरीदने के लिए मिस्र को भेजा। जब वे भोजन खरीदने के लिए यूसुफ के सामने खड़े हुए तो उन भाइयों ने यूसुफ को नहीं पहचाना। परन्तु यूसुफ ने उनको पहचान लिया।

यूसुफ के भाई मिस्र क्यों आए?

वे अन्न मोल लेने आए थे, क्योंकि कनान देश में भी भारी अकाल था।

08:12

यह मालूम करने के लिए कि क्या वे बदल गए हैं उनकी जाँच करने के बाद, यूसुफ ने उनसे कहा, "मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूँ! डरो मत। जब तुमने मुझे दास के रूप में बेचा था तो तुमने बुरा करने की ठानी थी, परन्तु परमेश्वर ने उस बुराई को भलाई के लिए उपयोग किया! आओ और मिस्र में रहो ताकि मैं तुम्हारे और तुम्हारे परिवारों के लिए भोजन का प्रबंध कर सकूँ।"

इससे पहले कि यूसुफ अपने भाइयों को बताए कि वह कौन है, उसने उनकी परीक्षा क्यों ली?

उसने यह देखने के लिए उनका परीक्षण किया कि क्या वे बदल गए हैं।

परमेश्वर ने यूसुफ के भाइयों को दास के रूप में बेचने से कैसे भलाई की?

यूसुफ मिस्र में एक शक्तिशाली शासक बन गया, और परमेश्वर ने अकाल के दौरान उसके परिवार और कई अन्य लोगों के लिए भोजन उपलब्ध कराने के लिए उसका उपयोग किया।

08:13

जब यूसुफ के भाई घर वापिस लौटे और अपने पिता याकूब को बताया कि यूसुफ अभी भी जीवित है तो वह बहुत प्रसन्न हुआ।

08:14

हालाँकि याकूब एक बूढ़ा व्यक्ति था तौभी वह अपने पूरे परिवार के साथ मिस्र को चला गया, और वे वहाँ बस गए। याकूब के मरने से पहले, उसने अपने प्रत्येक पुत्र को आशीषित किया।

जब याकूब को पता चला कि यूसुफ जीवित है तो उसने क्या किया?

वह अपने पूरे परिवार को मिस्र ले गया।

08:15

वाचा की वह प्रतिज्ञाएँ जो परमेश्वर ने अब्राहम से की थीं वे इसहाक पर और उसके बाद याकूब, और उसके बाद उसके बारह पुत्रों और उनके परिवारों पर आ गई थीं। उन बारह पुत्रों के वंशज इस्राएल के बारह गोत्र बन गए।

याकूब के मरने के बाद, परमेश्वर ने अब्राहम से जो प्रतिज्ञाएँ की थीं, उन्हें किसने प्राप्त किया?

याकूब के 12 पुत्रों ने उन्हें ग्रहण किया।

याकूब के बारह पुत्रों के वंशज क्या बने?

वे इस्राएल के 12 गोत्र बन गए।

9.परमेश्वर मूसा को बुलाता है

09:01

यूसुफ के मरने के बाद उसके सब रिश्तेदार मिस्र में बस गए। वे और उनके वंशज कई वर्षों तक मिस्र में ही रहे और उन्होंने बहुत संतानें उत्पन्न कीं। वे इस्राएली कहलाए।

09:02

कई सौ वर्षों के बाद, इस्राएलियों की संख्या बहुत बढ़ गई थी। और मिस्री लोग अब इस बात के लिए आभारी नहीं थे कि उनकी सहायता करने के लिए यूसुफ ने बहुत कुछ किया था। वे इस्राएलियों से डर गए क्योंकि वे संख्या में उनसे बहुत अधिक थे। इसलिए उस समय मिस्र पर शासन करने वाले फिरौन ने इस्राएलियों को मिस्रियों का दास बना दिया।

मिस्री इस्राएलियों से क्यों डरते थे?

वे डर गए क्योंकि वहाँ बहुत से इस्राएली थे।

फिरौन ने इस्राएलियों से क्या किया, क्योंकि वह उन से डरता था?

उसने उन्हें मिस्रियों का दास बना दिया।

09:03

मिस्रियों ने इस्राएलियों को बहुत सी इमारतें और यहाँ तक कि कई नगरों को बनाने के लिए मजबूर किया। उस कठिन परिश्रम ने उनके जीवनों को बड़ा दुःखदायी बना दिया, परन्तु परमेश्वर ने उनको आशीष दी और उनके और अधिक संतानें उत्पन्न हुईं।

09:04

फिरौन ने देखा कि इस्राएलियों के बहुत संतानें उत्पन्न हो रही थीं, इसलिए उसने अपने लोगों को इस्राएलियों के सभी नर बच्चों को नील नदी में फेंक कर मार डालने का आदेश दिया।

फ़िरौन ने इस्राएलियों को गिनती में बढ़ने से कैसे रोकने की कोशिश की?

उसने सभी इस्राएली बच्चों को नील नदी में फेंकने का आदेश दिया।

09:05

एक इस्राएली स्त्री ने एक नर बच्चे को जन्म दिया। उसने और उसके पति ने जितना उनसे हो सका उस बच्चे को छिपा कर रखा।

09:06

जब उस बालक के माता-पिता उसे और अधिक न छिपा सके, तो उन्होंने उसे मारे जाने से बचाने के लिए एक तैरने वाली टोकरी में नील नदी के किनारे पर सरकंडों के बीच रख दिया। उसकी बड़ी बहन ने यह देखने के लिए उसकी निगरानी की कि उसके साथ क्या होगा।

09:07

फिरौन की पुत्री ने उस टोकरी को देख कर उसके भीतर झाँका। जब उसने एक बच्चे को देखा तो उसने उसे अपने बच्चे के रूप में ले लिया। उसने एक इस्राएली स्त्री को उसे दूध पिलाने के लिए काम पर रख लिया, बिना यह जाने कि वह उस बच्चे की वास्तविक माता थी। जब वह बच्चा इतना बड़ा हो गया कि अब उसे अपनी माता के दूध की आवश्यकता नहीं थी, तो उसने फिरौन की पुत्री के पास उसे लौटा दिया, उसका नाम मूसा था।

नदी में टोकरी में बच्चे का क्या हुआ?

फिरौन की एक बेटी ने उसे देखा, और उसे अपना पुत्र मान लिया, और उसका नाम मूसा रखा।

09:08

एक दिन, जब मूसा बड़ा हो गया था, तो उसने देखा कि एक मिस्री एक इस्राएली को पिट रहा है। मूसा ने अपने साथी इस्राएली को बचाने का प्रयास किया।

09:09

जब मूसा ने सोचा कि उसे कोई नहीं देखेगा तो उसने उस मिस्री को मार डाला और उसके शव को दफन कर दिया। परन्तु मूसा ने जो किया था उसे किसी ने देख लिया था।

एक साथी इस्राएली को बचाने के लिए मूसा ने क्या किया?

उसने एक मिस्री को मार डाला जो उसे पीट रहा था, और मिस्रियों के शव को गाड़ दिया।

09:10

फिरौन को मालूम हो गया कि मूसा ने क्या किया है। उसने उसे मार डालने का प्रयास किया, परन्तु मूसा मिस्र से जंगल में भाग गया। फिरौन के सैनिक उसे वहाँ खोज न सके।

मूसा को मिस्र से भागना क्यों पड़ा?

जब फिरौन को पता चला कि उसने मिस्री को मार डाला है, तो वह मूसा को मार डालना चाहता था।

फिरौन से बचने के लिये मूसा कहाँ गया?

वह जंगल में चला गया।

09:11

मिस्र से दूर जंगल में मूसा एक चरवाहा बन गया था। उसने वहाँ एक स्त्री से विवाह कर लिया और दो पुत्र उत्पन्न किए।

09:12

मूसा अपने ससुर के भेड़ों के झुंड की देखभाल करता था। एक दिन, उसने एक जलती हुई झाड़ी को देखा जो भस्म हुए बिना जल रही थी। उसे देखने के लिए वह उस झाड़ी के समीप गया। जब वह उसके बहुत समीप था तो परमेश्वर ने उससे बात की। उसने कहा, "हे मूसा, अपने जूतों को उतार दे। तू एक पवित्र स्थान पर खड़ा है।"

मूसा ने जंगल में अपनी भेड़ों की देखभाल करते वक्त कौन-सी अनोखी बात देखी?

उसने एक झाड़ी को देखा जिसमें आग लगी हुई थी, परन्तु वह नहीं जली।

जलती हुई झाड़ी के पास जाते समय परमेश्वर ने मूसा से क्या कहा?

परमेश्वर ने कहा, “मूसा, अपने जूते उतारो। तुम पवित्र भूमि पर खड़े हो।”

09:13

परमेश्वर ने कहा, "मैंने अपने लोगों के दु:खों को देखा है। मैं तुझे फिरौन के पास भेजूँगा ताकि तू इस्राएलियों को मिस्र के दासत्व से निकाल लाए। मैं उनको कनान देश दूँगा, वह देश जिसका मैंने अब्राहम, इसहाक और याकूब से प्रतिज्ञा की है।"

हम कैसे जानते हैं कि परमेश्वर ने मिस्र में इस्राएलियों की परवाह की?

परमेश्वर ने मूसा से कहा, “मैंने अपने लोगों की पीड़ा देखी है।”

परमेश्वर ने मूसा को इस्राएलियों के लिए क्या करने के लिए भेजा?

परमेश्वर ने उसे फिरौन के पास जाने और इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से बाहर लाने के लिए कहा।

परमेश्वर ने इस्राएलियों को कौन सी भूमि देने के लिए कहा?

परमेश्वर उसे कनान देश देगा, जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक, और याकूब से की थी।

09:14

मूसा ने पूछा, "अगर लोगों ने जानना चाहा कि मुझे किसने भेजा है तो मैं क्या कहूँ?" परमेश्वर ने कहा, "जो मैं हूँ सो मैं हूँ। उनसे कहो, 'मैं हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।' उनसे यह भी कहो, 'मैं तुम्हारे पूर्वजों अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर यहोवा हूँ।' मेरा यह नाम सदा का है।"

परमेश्वर ने कौन सा नाम बताया जो हमेशा के लिए उसका होगा?

उसने कहा कि उसका नाम यहोवा होगा।

09:15

मूसा डरता था और फिरौन के पास जाना नहीं चाहता था क्योंकि उसने सोचा कि वह अच्छे से नहीं बोल पाएगा, इसलिए परमेश्वर ने मूसा के भाई, हारून, को उसकी सहायता करने के लिए भेजा।

परमेश्वर ने मूसा की सहायता के लिए किसे भेजा?

परमेश्वर ने मूसा के भाई हारून को उसकी सहायता के लिए भेजा।

10. दस विपत्तियाँ

10:01

परमेश्वर ने मूसा और हारून को चेतावनी दी कि फिरौन हठीला हो जाएगा। जब वे फिरौन के पास गए तो उन्होंने कहा, "इस्राएल का परमेश्वर यों कहता है, 'मेरे लोगों को जाने दे!'" परन्तु फिरौन ने उनकी नहीं सुनी और इस्राएलियों को जाने के लिए स्वतंत्र करने के बजाए उसने उनको और कठिन परिश्रम करने के लिए मजबूर किया।

मूसा और हारून ने फ़िरौन को परमेश्वर का क्या सन्देश दिया?

फ़िरौन के लिए परमेश्वर का सन्देश था, "मेरे लोगों को जाने दो!"

यह आज्ञा सुनकर फिरौन ने क्या किया?

उसने इस्राएलियों को और भी कठिन परिश्रम करने के लिए विवश किया।

10:02

फिरौन उन लोगों को जाने देने से लगातार इंकार करता रहा, इसलिए परमेश्वर ने मिस्र पर दस भयंकर विपत्तियाँ भेजीं। इन विपत्तियों के द्वारा, परमेश्वर ने फिरौन को दिखाया कि वह फिरौन और मिस्र के देवताओं से अधिक शक्तिशाली है।

परमेश्वर ने क्या किया जब फिरौन ने इस्राएलियों को जाने से मना कर दिया?

उसने मिस्र पर दस भयानक विपत्तियाँ भेजीं।

इन विपत्तियों के द्वारा परमेश्वर ने फिरौन को क्या दिखाया?

उसने दिखाया कि वह फिरौन और मिस्र के सभी देवताओं से अधिक शक्तिशाली है।

10:03

परमेश्वर ने नील नदी को लहू में परिवर्तित कर दिया, परन्तु फिरौन ने अभी भी इस्राएलियों को जाने नहीं दिया।

परमेश्वर ने नील नदी के पानी के साथ क्या किया?

परमेश्वर ने नील नदी के जल को लहू में बदल दिया।

10:04

परमेश्वर ने सम्पूर्ण मिस्र में मेंढक भेजे। फिरौन ने मेढकों दूर करने के लिए मूसा से अनुरोध किया। परन्तु सब मेंढकों को मर जाने के बाद, फिरौन ने अपने मन को कठोर कर लिया और इस्राएलियों को मिस्र से निकल कर जाने नहीं दिया।

10:05

इसलिए परमेश्वर ने कुटकियों की विपत्ति भेजी। उसके बाद उसने डांसों की विपत्ति भेजी। फिरौन ने मूसा और हारून के बुलाया और उनसे कहा कि यदि वे उस विपत्ति को रोक दें तो इस्राएली मिस्र को छोड़ कर जा सकते हैं। जब मूसा ने प्रार्थना की तो परमेश्वर ने मिस्र पर से डांसों को हटा दिया। परन्तु फिरौन ने अपने मन को कठोर कर लिया और उन लोगों को स्वतंत्र होकर जाने नहीं दिया।

10:06

इसके आगे, परमेश्वर ने मिस्रियों के सब पालतू जानवरों को बीमार होकर मर जाने दिया। परन्तु फिरौन का मन कठोर हो गया था और उसने इस्राएलियों को जाने नहीं दिया।

10:07

तब परमेश्वर ने मूसा से फिरौन के सामने हवा में राख फेंकने के लिए कहा। जब उसने ऐसा किया तो मिस्र के लोगों की त्वचा पर पीड़ादायक फोड़े निकल आए, परन्तु इस्राएलियों को कुछ नहीं हुआ। परमेश्वर ने फिरौन के मन को कठोर कर दिया, और फिरौन ने इस्राएलियों को स्वतंत्र होकर जाने नहीं दिया।

दर्दनाक त्वचा के घावों के प्लेग से कौन प्रभावित हुआ था?

मिस्रियों पर फोड़े दिखाई दिए, परन्तु इस्राएलियों पर नहीं।

10:08

इसके बाद, परमेश्वर ने ओले गिराए और मिस्र की अधिकांश फसलों को नष्ट कर दिया और जो कोई भी बाहर निकला उसे मार डाला। फिरौन ने मूसा और हारून को बुलाया और उनसे कहा, "मैंने पाप किया है। तुम लोग जा सकते हो।" अतः मूसा ने प्रार्थना की, और आकाश से ओले गिरना रुक गया।

10:09

परन्तु फिरौन ने फिर से पाप किया और अपने मन को कठोर कर लिया। उसने इस्राएलियों को स्वतंत्र होकर जाने नहीं दिया।

10:10

अतः परमेश्वर ने मिस्र पर टिड्डियों के दलों को आने दिया। इन टिड्डियों ने उन सारी फसलों को खा लिया जिनको ओलों ने नाश नहीं किया था।

10:11

फिर परमेश्वर ने अंधकार कर दिया जो तीन दिनों तक बना रहा। यह इतना घोर था कि मिस्री लोग अपने घरों से न निकल पाए। परन्तु जहाँ इस्राएली लोग रहते थे वहाँ उजियाला था।

क्या अन्धकार की विपत्ति ने सभी को समान रूप से प्रभावित किया?

नहीं, जहां मिस्री रहते थे वहां अंधेरा था, परन्तु जहां इस्राएली रहते थे वहां उजियाला था।

10:12

इन नौ विपत्तियों के बाद भी, फिरौन ने इस्राएलियों को स्वतंत्र होकर जाने देने से इंकार कर दिया। चूँकि फिरौन ने नहीं सुना था इसलिए परमेश्वर ने एक अन्तिम विपत्ति को भेजने की योजना बनाई। यह फिरौन के मन को बदल देगी।

पहली नौ विपत्तियों में से प्रत्येक पर फिरौन ने कैसी प्रतिक्रिया दी?

उसने लोगों को आज़ाद होने से मना कर दिया।

फिरौन द्वारा पहली नौ विपत्तियों का उत्तर न देने के बाद परमेश्वर ने क्या किया?

परमेश्वर ने एक अन्तिम विपत्ति भेजने की योजना बनाई।

यह आखिरी विपत्ति क्या करेगी जो पहले नौ ने नहीं की थी?

यह फिरौन के मन को बदल देगा।

11. फसह

11:01

परमेश्वर ने मूसा और हारून को फिरौन के पास यह कहने के लिए भेजा कि इस्राएलियों को जाने दे। उन्होंने उसे चेतावनी दी कि यदि वह उनको नहीं जाने देगा, तो परमेश्वर मिस्र के लोगों के और जानवरों के सब पहिलौठों को मार डालेगा। फिरौन ने यह सुनकर भी परमेश्वर पर विश्वास करने से और उसकी बात मानने से इंकार कर दिया।

परमेश्वर ने क्या कहा कि यदि फिरौन ने इस्राएलियों को जाने न दिया तो वह मिस्रियों के साथ क्या करेगा?

वह इंसानों और जानवरों दोनों के सभी पहलौठों को मार डालेगा।

11:02

परमेश्वर ने उस पर विश्वास करने वाले किसी भी व्यक्ति के पहिलौठे पुत्र को बचाने के लिए एक रास्ते का प्रबंध किया। हर परिवार को एक निष्कलंक मेमने को लेकर उसका वध करना था।

लोग अपने पहिलौठे पुत्र को कैसे बचा सकते थे?

उन्हें एक सिद्ध मेमने को मारना था।

11:03

परमेश्वर ने इस्राएलियों से उस मेमने के लहू को लेकर अपने घरों के चौखटों पर लगाने के लिए कहा। उनको उसके माँस को भूनना था और फिर उनको अखमीरी रोटी के साथ उसे फुर्ती से खाना था। उसने उस भोजन को खाने के बाद उनको तत्काल मिस्र को छोड़ने को भी तैयार रहने के लिए कहा।

परमेश्वर ने इस्राएलियों से मेमने के लहू का क्या करने को कहा?

परमेश्वर ने उन्हें मेम्ने के लहू को अपने घर के द्वार के चारों ओर लगाने को कहा।

भुने हुए मेमने के साथ खाने के लिए परमेश्वर ने इस्राएलियों को कौन सा विशिष्ट भोजन दिया?

उन्हें अख़मीरी रोटी खानी थी।

जब इस्राएली खा रहे थे तो उन्हें क्या करने के लिए तैयार रहना था?

उन्हें मिस्र छोड़ने के लिए तैयार होना था।

11:04

जैसा करने के लिए परमेश्वर ने इस्राएलियों को आदेश दिया था उन्होंने उसके अनुसार सब कुछ किया। मध्यरात्रि में, परमेश्वर हर एक पहिलौठे पुत्र को घात करते हुए मिस्र के बीच में से होकर गुजरा।

11:05

इस्राएलियों के हर एक घर के द्वारों पर लहू लगा हुआ था, इसलिए परमेश्वर ने उन घरों को छोड़ दिया। उनके भीतर के सब लोग सुरक्षित थे। वे मेमने के लहू के कारण बच गए थे।

परमेश्वर ने उन घरों के साथ क्या किया जिनके दरवाजों के चारों ओर लहू था?

वह उन घरों के ऊपर से गुजरा और अंदर सभी लोग सुरक्षित थे।

11:06

लेकिन मिस्रियों ने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया था और उसकी आज्ञाओं को नहीं माना था। इसलिए परमेश्वर ने उनके घरों को नहीं छोड़ा। परमेश्वर ने मिस्रियों के हर एक पहिलौठे पुत्रों को मार दिया।

मिस्र के प्रत्येक घर में परमेश्वर ने क्या किया?

उसने पहिलौठों को मार डाला।

11:07

जेल के कैदियों के पहिलौठों से लेकर, फिरौन के पहिलौठे तक, मिस्रियों का हर एक पहिलौठा नर मर गया था। अपनी गहरी वेदना के कारण मिस्र के बहुत से लोग रो रहे थे और विलाप कर रहे थे।

मिस्रियों के कितने पहलौठे पुत्र मारे गए?

वे सब फिरौन के पुत्र समेत मर गए।

11:08

उसी रात, फिरौन ने मूसा और हारून को बुलाया और कहा, "इस्राएलियों को लेकर तुरन्त ही मिस्र से निकल जाओ!" मिस्र के लोगों ने भी इस्राएलियों से तुरन्त निकल जाने का आग्रह किया।

इस विपत्ति के बाद फिरौन ने मूसा और हारून से क्या कहा?

उसने उनसे कहा कि इस्राएलियों को ले जाओ और मिस्र को तुरंत छोड़ दो!

12. निर्गमन

12:01

इस्राएली लोग मिस्र से निकल कर बहुत खुश थे। वे अब दास नहीं थे, और वे प्रतिज्ञा के देश को जा रहे थे! जो कुछ भी इस्राएलियों ने माँगा, मिस्रियों ने उन्हें वह सब कुछ दिया, यहाँ तक कि सोना और चाँदी और अन्य मूल्यवान वस्तुएँ। दूसरे देशों के कुछ लोगों ने परमेश्वर पर विश्वास किया और जब इस्राएली लोग मिस्र से निकले तो वे भी उनके साथ हो लिए।

मिस्र छोड़ने पर मिस्रियों ने इस्राएलियों को क्या दिया?

उन्होंने जो कुछ माँगा, सोना, चाँदी और अन्य बहुमूल्य वस्तुएँ भी उन्हें दीं।

और कौन इस्राएलियों के साथ मिस्र छोड़ गया?

परमेश्वर में विश्वास करने वाले अन्य राष्ट्रों के कुछ लोग उनके साथ चले गए।

12:02

दिन के दौरान बादल का एक विशाल खम्भा उनके आगे-आगे चला। और रात के समय यह आग का खम्भा बन गया। परमेश्वर जो कि उस बादल के खम्भे में और आग के खम्भे में था, हमेशा उनके साथ था और उसने यात्रा करते समय उनकी अगुवाई की। उनको केवल इतना करना था कि उसके पीछे चलें।

परमेश्वर ने इस्राएलियों की अगुवाई कैसे की?

वह दिन के समय बादल के खम्भे में और रात के समय आग के खम्भे में होकर उनकी अगुवाई करता था।

12:03

थोड़े समय के बाद, फिरौन और उसके लोगों ने अपने मन को बदल दिया। वे इस्राएलियों को फिर से अपना दास बनाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने इस्राएलियों का पीछा किया। यह परमेश्वर ही था जिसने उनके मनों को बदल दिया था। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह चाहता था कि हर कोई यह जान ले कि फिरौन से और मिस्रियों के सब देवताओं से वह, यहोवा, अधिक शक्तिशाली है।

परमेश्वर ने फ़िरौन को हठी क्यों बनाया और इस्राएलियों का पीछा क्यों किया?

परमेश्वर ने यह दिखाने के लिए ऐसा किया कि वह एक सच्चा परमेश्वर है जो फिरौन और उसके देवताओं से अधिक शक्तिशाली है।

12:04

जब इस्राएलियों ने मिस्र की सेना को आते देखा तो उनको मालूम हुआ कि वे फिरौन की सेना और लाल समुद्र के बीच में फँस गए। वे बहुत डर गए और रोने लगे, "हमने मिस्र को क्यों छोड़ा? हम मरने वाले हैं!"

जब इस्राएली समुद्र और फिरौन की सेना के बीच फँसे हुए थे, तब उन्होंने क्या किया?

उन्होंने कहा, “हमने मिस्र क्यों छोड़ा? हम मरने जा रहे हैं!"

12:05

मूसा ने इस्राएलियों से कहा, "डरना बंद करो! परमेश्वर आज तुम्हारे लिए लड़ेगा और तुमको बचाएगा।" तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "इन लोगों से लाल समुद्र की ओर आगे बढ़ने के लिए कह।"

मूसा ने इस्राएलियों के डर को शांत करने के लिए उनसे क्या कहा?

उसने उनसे कहा कि डरना बंद करो! परमेश्वर उस दिन उनके लिए लड़ेगा और उन्हें बचाएगा।

12:06

तब परमेश्वर ने उस बादल के खम्भे को लेकर इस्राएलियों और मिस्रियों के बीच में रख दिया ताकि मिस्री लोग इस्राएलियों को देख न पाएँ।

परमेश्वर ने मिस्रियों को इस्राएलियों के पास आने से कैसे रोका जब वे भागने लगे?

उसने उनके बीच मेघ का खम्भा खड़ा किया।

12:07

परमेश्वर ने मूसा से समुद्र पर अपना हाथ बढ़ाने के लिए कहा। फिर परमेश्वर ने हवा से समुद्र के पानी को बाईं और दाईं ओर करवा दिया, जिससे कि समुद्र से होकर एक रास्ता बन गया।

इस्राएलियों के लिए बचने का मार्ग बनाने के लिए परमेश्वर ने मूसा से क्या करने को कहा?

परमेश्वर ने उससे कहा कि वह अपना हाथ समुद्र के ऊपर उठाए ताकि जल विभाजित हो जाए।

12:08

इस्राएली लोग अपने दोनों तरफ पानी की दीवारों के साथ सूखी भूमि पर समुद्र से होकर बढ़ चले।

इस्राएली समुद्र को कैसे पार कर पाए?

वे सूखी भूमि पर उसके बीच से होकर चले।

12:09

तब परमेश्वर ने उस रास्ते से बादल को उठा लिया ताकि मिस्री लोग इस्राएलियों को बच कर जाते हुए देखें। मिस्रियों ने उनको पकड़ने के लिए उनका पीछा करने का निर्णय लिया।

12:10

अतः उन्होंने समुद्र के माध्यम से उस रास्ते पर इस्राएलियों का पीछा किया, परन्तु परमेश्वर ने मिस्रियों को घबरा दिया और उनके रथों को अटका दिया। वे चिल्लाने लगे, "भागो! इस्राएलियों की ओर से परमेश्वर लड़ रहा है!"

मिस्रियों का क्या हुआ जब उन्होंने समुद्र के द्वारा इस्राएलियों का पीछा किया?

उसने मिस्रियों को भयभीत कर दिया और उनके रथों को फँसा दिया।

12:11

सारे इस्राएली समुद्र की दूसरी तरफ पहुँच गए। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह फिर से पानी पर हाथ बढ़ाए। जब मूसा ने ऐसा किया, तो पानी मिस्री सेना पर आ पड़ा और अपनी सामान्य स्थिति में हो गया। सारी मिस्री सेना डूब गई।

परमेश्वर ने मिस्र की सेना को कैसे नष्ट किया?

पानी ने मिस्र की सेना को ऐसा ढक लिया कि वे डूब गए।

12:12

जब इस्राएलियों ने देखा कि मिस्री मर गए थे तो उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया। उन्होंने विश्वास किया कि मूसा परमेश्वर की ओर से भविष्यद्वक्ता था।

जब इस्राएलियों ने मिस्रियों को मरा हुआ देखा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया थी?

वे परमेश्वर पर भरोसा करते थे और विश्वास करते थे कि मूसा परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता था।

12:13

इस्राएली लोग इसलिए भी बहुत आनन्दित थे क्योंकि परमेश्वर ने उनको मरने से और दास होने से बचा लिया था। अब वे परमेश्वर की आराधना करने और उसकी आज्ञा का पालन करने के लिए स्वतंत्र थे। इस्राएलियों ने अपनी स्वतंत्रता का उत्सव मनाने के लिए और परमेश्वर के प्रशंसा करने के लिए कई गीतों को गाया क्योंकि उसने उनको मिस्रियों की सेना से बचाया था।

इस्राएलियों ने गाकर परमेश्वर की स्तुति क्यों की?

उन्होंने उसकी स्तुति की, क्योंकि उस ने उन्हें मिस्रियोंके हाथ से छुड़ाया या।

12:14

परमेश्वर ने इस्राएलियों को हर वर्ष एक पर्व मनाने का आदेश दिया यह स्मरण करने के लिए कि कैसे परमेश्वर ने मिस्रियों को पराजित किया और उनको दास होने से स्वतंत्र किया। यह फसह का पर्व कहलाया था। इसमें उनको इसका उत्सव मनाने के लिए एक स्वस्थ मेमने को बलि करना था, उसे भूनना था, और उसे बिना खमीर वाली रोटी के साथ खाना था।

मिस्रियों पर अपनी जीत को याद करने के लिए परमेश्वर ने इस्राएलियों से क्या करने को कहा?

उसने उन्हें हर वर्ष फसह पर्व मनाने की आज्ञा दी।

13. इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा

13:01

इस्राएलियों को लाल समुद्र से पार लेकर जाने के बाद, परमेश्वर उनको जंगल में से होकर सीनै नाम के पर्वत की ओर लेकर चला। यह वही पर्वत था जहाँ पर मूसा ने जलती हुई झाड़ी को देखा था। उन लोगों ने उस पर्वत के नीचे अपने तम्बुओं को स्थापित किया।

लाल समुद्र पार करने के बाद परमेश्वर इस्राएलियों को कहाँ ले गया?

वह उन्हें सीनै नामक पर्वत पर ले गया।

13:02

परमेश्वर ने मूसा से और इस्राएल के सब लोगों से कहा, "तुमको हमेशा मेरी बातों को मानना है और जो वाचा मैं तुम्हारे साथ बाँधता हूँ उसे बनाए रखना है। यदि तुम ऐसा करते हो, तो तुम मेरी बहुमूल्य संपत्ति, याजकों का राज्य, और एक पवित्र जाति ठहरोगे।"

परमेश्वर ने इस्राएलियों से क्या प्रतिज्ञा की कि यदि वे उसकी आज्ञा मानेंगे तो वे बन जाएँगे?

वे उसकी बेशकीमती संपत्ति, याजकों का राज्य और पवित्र राष्ट्र होंगे।

13:03

परमेश्वर द्वारा उनके पास आने के लिए लोगों ने तीन दिन तक स्वयं को तैयार किया। तब परमेश्वर सीनै पर्वत की चोटी पर नीचे उतरा। जब वह आया तो भूकम्प हुआ, बिजलियाँ चमकी, धूँआ उठा, और तुरहियों का जोरदार शब्द हुआ। तब मूसा स्वयं ऊपर पर्वत पर चढ़ गया।

जब परमेश्वर सीनै पर्वत पर उतरा तो उसके साथ कौन-से चिह्न आए?

गर्जना, बिजली, धुँआ, और तुरही का एक बहुत गंभीर स्वर परमेश्वर के साथ था जब वह नीचे आया।

13:04

तब परमेश्वर ने लोगों के साथ एक वाचा बाँधी। उसने कहा, "मैं तुम्हारा परमेश्वर, यहोवा हूँ। मैं ही हूँ जिसने तुमको मिस्र के दासत्व से छुड़ाया। किसी अन्य देवता की उपासना मत करना।"

13:05

"मूर्तियाँ न बनाना और उनकी उपासना मत करना, क्योंकि मैं, यहोवा, तुम्हारा एकमात्र परमेश्वर हूँ। अनुचित रीति से मेरे नाम का उपयोग मत करना। सब्त के दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना। दूसरे शब्दों में, छः दिनों में अपने सारे काम करना, सातवाँ दिन तुम्हारे लिए विश्राम करने और मुझे स्मरण करने का दिन है।"

13:06

"अपने माता और पिता का आदर करना। हत्या न करना। व्यभिचार न करना। चोरी न करना। अपने पड़ोसी की पत्नी, उसके घर, या उसके किसी भी सामान को ले लेने की इच्छा न करना।"

13:07

परमेश्वर ने उन लोगों को जो नियम दिए थे वे उनका पालन करने के लिए सहमत हुए। वे केवल परमेश्वर के लोग होने को और केवल उसकी आराधना करने के लिए सहमत हुए।

यदि इस्राएलियों ने उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं किया तो परमेश्वर इस्राएलियों के साथ क्या करेगा?

वह उन्हें दण्ड देगा।

13:08

परमेश्वर ने इस्राएलियों से एक विशाल तंबू बनाने के लिए भी कहा – मिलापवाला तंबू। उसने उनको ठीक ठीक बताया कि इस तंबू को कैसे बनाना है, और उसके भीतर किन चीजों को रखना है। उसने उनको उस तंबू को दो कमरों में विभाजित करने के लिए एक

विशाल पर्दे को बनाने के लिए भी कहा। परमेश्वर उस पर्दे के पीछे वाले कमरे में आएगा और वहाँ रहेगा। जहाँ परमेश्वर था उस कमरे में जाने की अनुमति केवल महायाजक को थी।

परमेश्वर ने इस्राएलियों से उसके लिए क्या बनाने को कहा?

उसने उनसे मिलापवाले तम्बू को बनाने को कहा।

जिस पर्दे के पीछे परमेश्वर था उस कमरे में कौन प्रवेश कर सकता था?

सिर्फ महायाजक ही वहां प्रवेश कर सकता था।

13:09

उन लोगों को उस मिलापवाले तंबू के सामने एक वेदी को बनाना होगा। कोई भी जो परमेश्वर की व्यवस्था की अवज्ञा करे वह उस वेदी पर एक जानवर को लेकर आए। तब याजक उसे बलि करेगा और वेदी पर परमेश्वर के लिए बलि के रूप में जलाएगा। परमेश्वर ने कहा कि उस जानवर का लहू उस व्यक्ति के पापों को ढाँप लेगा। इस रीति से, अब परमेश्वर उस पाप को नहीं देखेगा। वह व्यक्ति परमेश्वर की दृष्टि में "शुद्ध" ठहरेगा। परमेश्वर ने मूसा के भाई हारून को और हारून के वंशजों को अपने याजक होने के लिए चुना।

लोग अपने पाप को कैसे ढाँप सकते हैं?

वे याजकों के बलिदान के लिए एक जानवर ला सकते थे। बलिदान का लहू उनके पाप को ढक देगा।

परमेश्वर ने अपना याजक बनने के लिए किसे चुना?

उसने हारून और उसके वंशजों को चुना।

13:10

तब परमेश्वर ने इन दस आज्ञाओं को पत्थर की दो तख्तियों पर लिख कर मूसा को दे दिया। परमेश्वर ने पालन करने के लिए लोगों को अन्य बहुत सी व्यवस्थाएँ दीं। यदि उन्होंने इन व्यवस्थाओं का पालन किया तो परमेश्वर ने उन लोगों को आशीष देने और उनकी सुरक्षा करने की प्रतिज्ञा की। परन्तु उसने कहा कि यदि उन्होंने इनका पालन नहीं किया तो वह उनको दंडित करेगा।

13:11

कई दिनों तक, मूसा सीनै पर्वत की चोटी पर ही रहा। वह परमेश्वर से बात कर रहा था। परन्तु लोग मूसा के वापस आने का इंतजार करते हुए थक गए। इसलिए वे हारून के पास सोना लेकर आए और उससे एक मूर्ति बनाने के लिए कहा ताकि वे परमेश्वर के बजाए उसकी उपासना कर सकें। इस रीति से, उन्होंने भयंकर रूप से परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया।

लोगों ने क्या किया जब वे सीनै पर्वत से मूसा के लौटने की प्रतीक्षा करते-करते थक गए?

उन्होंने हारून से सोने की मूर्ति बनाने को कहा, और तब उन्होंने उसकी उपासना की और उसके आगे बलिदान चढ़ाए।

13:12

हारून ने बछड़े के आकार में सोने की एक मूर्ति बनाई। उन लोगों ने उस मूर्ति की उपासना करना आरम्भ कर दिया और उसे बलि चढ़ाई! उनके पाप की वजह से परमेश्वर उनसे बहुत क्रोधित हुआ था। वह उनको नष्ट कर देना चाहता था। परन्तु मूसा ने उनको नहीं मारने का परमेश्वर से अनुरोध किया। परमेश्वर ने उसके अनुरोध को सुना और उनको नष्ट नहीं किया।

जब इस्राएलियों ने आज्ञा न मानी तो परमेश्वर ने उन्हें नष्ट क्यों नहीं किया?

उसने उन्हें नष्ट नहीं किया क्योंकि मूसा ने उनके लिए प्रार्थना की थी।

13:13

आखिरकार मूसा सीनै पर्वत से नीचे उतर आया। वह उन दो पत्थर की तख्तियों को लिए हुए था जिन पर परमेश्वर ने दस आज्ञाओं को लिखा था। फिर उसने उस मूर्ति को देखा। वह इतना क्रोधित हुआ कि उसने उन तख्तियों को चकनाचूर कर दिया।

उन पत्थरों का क्या हुआ जिन पर परमेश्वर ने दस आज्ञाएँ लिखी थीं?

मूसा को क्रोध आया और उसने पत्थरों को तोड़ डाला।

13:14

फिर मूसा ने उस मूर्ति को पीस कर उसका बुरादा बना दिया, और उस बुरादे को पानी में मिलाकर उन लोगों को वह पानी पिला दिया। परमेश्वर ने उन लोगों पर एक विपत्ति भेजी और उनमें से बहुत लोग मर गए।

मूसा ने मूर्ति के साथ क्या किया?

और उस ने मूरत को जलाकर पीस डाला, और लोगों को जल पिलाया।

13:15

जिन तख्तियों को मूसा ने तोड़ दिया था उनका स्थान लेने के लिए मूसा ने उन दस आज्ञाओं की पत्थर की नई तख्तियों को बनाया। तब वह फिर से पर्वत पर चढ़ गया और प्रार्थना की कि परमेश्वर उन लोगों को क्षमा करे। परमेश्वर ने मूसा की सुनी और उनको क्षमा कर दिया। नई तख्तियों पर दस आज्ञाओं को लिए हुए मूसा पर्वत से नीचे उतर आया। तब परमेश्वर ने सीनै पर्वत से लेकर प्रतिज्ञा के देश तक इस्राएलियों की अगुवाई की।

सीनै पर्वत के पीछे इस्राएली कहाँ गए?

परमेश्वर इस्राएलियों को प्रतिज्ञा की भूमि की ओर ले गया।

14. जंगल में भटकना

14:01

परमेश्वर ने इस्राएलियों को उन नियमों को बताना समाप्त किया जिनका उनको बाँधी गई उसकी वाचा के कारण पालन करना है। फिर उसने सीनै पर्वत से आगे उनकी अगुवाई की। वह उनको प्रतिज्ञा के देश में ले जाना चाहता था। यह देश कनान भी कहलाता था। परमेश्वर बादल के खम्भे में उनके आगे-आगे चला, और वे उसके पीछे-पीछे चले।

सीनै पर्वत को छोड़ने के बाद परमेश्वर इस्राएलियों को कहाँ ले गया?

वह उन्हें कनान, प्रतिज्ञात देश की ओर ले गया।

14:02

परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक और याकूब से प्रतिज्ञा की थी कि वह प्रतिज्ञा का वह देश उनके वंशजों को देगा, परन्तु इस समय वहाँ पर बहुत सी जाति रह रही थीं। वे कनानी कहलाते थे। ये कनानी लोग परमेश्वर की आराधना नहीं करते थे और उसकी आज्ञा को नहीं मानते थे। वे झूठे देवताओं की उपासना किया करते थे और बहुत से बुरे काम करते थे।

14:03

परमेश्वर ने इस्राएलियों से कहा, "जब तुम उस वाचा के देश में जाओ तो वहाँ के सब कनानियों से छुटकारा पा लेना। उनके साथ संधि मत करना और उनसे विवाह मत करना। तुमको उनकी सभी मूर्तियों को पूरी तरह से नष्ट कर देना है। यदि तुम मेरी आज्ञा नहीं मानोगे, तो तुम मेरे बजाए उनके देवताओं की उपासना करने लगोगे।"

परमेश्वर ने इस्राएलियों से कनानियों से क्या करने को कहा?

उसने उनसे कहा कि वे उन सभी से छुटकारा पा लें, उनके साथ मेल न करें, उनसे विवाह न करें और उनकी सभी मूर्तियों को नष्ट कर दें।

14:04

जब इस्राएली कनान की सीमा पर पहुँचे, मूसा ने इस्राएल के प्रत्येक गोत्र में से एक-एक करके बारह पुरुषों को चुना। उसने उनको जाकर उस देश का भेद लेने के निर्देश दिए कि देखें कि वह कैसा देश है। उनको उन कनानियों का भेद भी लेना था कि देखें कि वे बलशाली थे या निर्बल थे।

14:05

उन बारह पुरुषों ने पूरे कनान से होते हुए चालीस दिन की यात्रा की और फिर वे वापिस लौट आए। उन्होंने लोगों को बताया, "वह देश बहुत उपजाऊ है और फसलें बहुतायत की हैं!" परन्तु दस भेदियों ने कहा, "उनके नगर बहुत दृढ़ हैं और वे लोग लंबे-चौड़े हैं! यदि हम उन पर हमला करते हैं, तो निश्चित रूप से वे हमें पराजित कर देंगे और हमें मार डालेंगे।"

कनान देश के बारे में 12 जासूसों ने क्या कहा?

भूमि बहुत उपजाऊ है और फसलें बहुतायत से हैं।

दस भेदियों ने क्यों कहा कि इस्राएलियों को कनान के लोगों पर आक्रमण नहीं करना चाहिए?

उन्होंने कहा, “शहर मजबूत हैं और वहाँ के लोग राक्षसों की तरह हैं। यदि हम उन पर आक्रमण करते हैं, तो वे हमें हरा देंगे और हमें मार डालेंगे!”

14:06

तुरन्त ही कालेब और यहोशू और अन्य दो भेदियों ने कहा, "यह सच है कि कनान के लोग लंबे और बलशाली हैं, परन्तु निश्चित रूप से हम उनको पराजित कर सकते हैं! परमेश्वर हमारे लिए लड़ेगा!"

कालेब और यहोशू ने कनान के लोगों के बारे में क्या कहा?

उन्होंने कहा, “लोग शक्तिशाली हैं, लेकिन हम उन्हें हरा सकते हैं। परमेश्वर हमारे लिए लड़ेंगे!

14:07

परन्तु लोगों ने कालेब और यहोशू की नहीं सुनी। वे मूसा और हारून पर क्रोधित हो गए और कहा, "तुम हमें इस भयानक स्थान पर क्यों लेकर आए हो? हमें मिस्र में ही रहना चाहिए था। यदि हम उस देश में जाते हैं तो हम युद्ध में मारे जाएँगे, और कनान के लोग हमारी पत्नियों और बच्चों को दास बना लेंगे।" वे लोग उनको वापिस मिस्र में लेकर जाने के लिए एक अन्य अगुवे को चुनना चाहते थे।

गुप्तचरों की रिपोर्ट सुनने के बाद लोग क्या करना चाहते थे?

वे दूसरे नेता को चुनना चाहते थे और मिस्र वापस जाना चाहते थे।

14:08

जब उन लोगों ने ऐसा कहा तो परमेश्वर बहुत क्रोधित हो गया था। वह मिलापवाले तंबू में आया और कहा, "तुमने मेरे विरुद्ध बलवा किया है, इसलिए तुम सबको इस जंगल में भटकना होगा। हर एक जन जो बीस वर्ष या उससे अधिक आयु का है वहाँ मर जाएगा और कभी भी उस देश में प्रवेश नहीं कर पाएगा जो मैं तुमको देता हूँ। केवल कालेब और यहोशू उसमें प्रवेश करेंगे।"

परमेश्वर ने कैसे कहा कि वह लोगों को उनकी अवज्ञा के लिए दण्ड देगा?

वे तब तक जंगल में भटकते रहे जब तक कि कालेब और यहोशू को छोड़कर बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के सभी लोग मर नहीं गए।

14:09

जब लोगों ने परमेश्वर को ऐसा कहते सुना, तो वे दुखी हुए क्योंकि उन्होंने पाप किया था। इसलिए उन्होंने कनान के लोगों पर हमला करने का निर्णय किया। मूसा ने उनको नहीं जाने के लिए चेतावनी दी क्योंकि परमेश्वर उनके साथ नहीं जाएगा, परन्तु उन्होंने उसकी नहीं सुनी।

14:10

परमेश्वर इस युद्ध में उनके साथ नहीं गया था, इसलिए कनानियों ने उनको पराजित कर दिया और उनमें से बहुतों को मार डाला। तब इस्राएली लोग कनान से वापिस मुड़ गए। अगले चालीस वर्षों तक, वे जंगल में इधर-उधर भटकते रहे।

जब इस्राएलियों ने कनानियों पर आक्रमण किया तब वे क्यों पराजित हुए?

वे पराजित हुए क्योंकि परमेश्वर उनके साथ युद्ध में नहीं गया था।

14:11

इस्राएली लोगों द्वारा जंगल में भटकने के चालीस वर्षों के दौरान, परमेश्वर ने उनकी आवश्यकताओं को पूरा किया। उसने उनको स्वर्ग से "मन्ना" कहलाने वाली रोटी दी। उसने बटेरों के झुंड भी (जो कि मध्यम आकार के पक्षी होते हैं) उनकी छावनी में भेजे ताकि उनके पास खाने के लिए माँस हो। उस पूरे समय, परमेश्वर ने उनके कपड़ों और जूतों को फटने से बचाए रखा।

इस्राएली कब तक जंगल में भटकते रहे?

वे 40 साल तक भटकते रहे।

परमेश्वर ने इस्राएलियों को जंगल में कैसे प्रदान किया?

उसने उन्हें मन्ना दिया, बटेरों के झुंड भेजे, और उनके कपड़े और जूते पुराने होने से बचाए।

14:12

यहाँ तक कि परमेश्वर ने उनके पीने के लिए चमत्कारी रूप से चट्टान में से पानी निकाला। परन्तु इन सब के उपरान्त, इस्राएली लोगों ने परमेश्वर के विरुद्ध और मूसा के विरुद्ध शिकायत की और कुड़कुड़ाए। तौभी, परमेश्वर विश्वासयोग्य था। उसने जो प्रतिज्ञा की थी कि वह अब्राहम, इसहाक, और याकूब के वंशजों के लिए करेगा उसने वह किया।

जब लोगों ने शिकायत की और कुड़कुड़ाए तो परमेश्वर ने कैसी प्रतिक्रिया दी?

परमेश्वर अभी भी अब्राहम, इसहाक और याकूब से की गई अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य था।

14:13

एक और समय जब उन लोगों के पास पानी नहीं था, परमेश्वर ने मूसा से कहा, "चट्टान से बातें कर, और उससे पानी निकलेगा।" परन्तु मूसा ने चट्टान से बातें नहीं की। बजाए इसके, उसने छड़ी से चट्टान पर दो बार मारा। इस रीति से उसने परमेश्वर का निरादर किया। सबके पीने के लिए चट्टान में से पानी तो निकल आया, परन्तु परमेश्वर मूसा से क्रोधित हो गया। उसने कहा, "क्योंकि तूने ऐसा किया है, इसलिए तू प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश नहीं करने पाएगा।"

जब मूसा ने चट्टान पर मारा तो परमेश्वर क्रोधित क्यों हुआ?

परमेश्वर क्रोधित था क्योंकि मूसा ने चट्टान से बात न करने के द्वारा परमेश्वर का अपमान किया जैसा कि परमेश्वर ने उसे करने के लिए कहा था।

परमेश्वर ने मूसा को उसकी अनाज्ञाकारिता के लिए कैसे दण्ड दिया?

परमेश्वर ने कहा कि मूसा प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश नहीं करेगा।

14:14

जब इस्राएली लोग चालीस वर्षों तक जंगल में भटक चुके थे, तब जिन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध बलवा किया था वे सब मर गए थे। तब परमेश्वर उन लोगों को फिर से उस प्रतिज्ञा के देश के सिवाने तक ले गया। अब मूसा बहुत बूढ़ा हो गया था, इसलिए परमेश्वर ने लोगों की अगुवाई करने में उसकी सहायता करने के लिए यहोशू को चुना। परमेश्वर ने मूसा से यह प्रतिज्ञा भी की थी कि एक दिन वह उन लोगों के पास मूसा के जैसा एक भविष्यद्वक्ता भेजेगा।

परमेश्वर ने भविष्य में एक दिन भेजने का वादा किससे किया था?

वह मूसा के समान एक और भविष्यद्वक्ता भेजेगा।

14:15

तब परमेश्वर ने मूसा को एक पर्वत की चोटी पर जाने के लिए कहा ताकि वह प्रतिज्ञा के देश को देख सके। मूसा ने उस प्रतिज्ञा के देश को देखा परन्तु परमेश्वर ने उसे उसमें प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी। तब मूसा मर गया, और इस्राएलियों ने तीस दिन तक शोक मनाया। यहोशू उनका नया अगुवा बन गया। यहोशू एक अच्छा अगुवा था क्योंकि उसने परमेश्वर पर भरोसा किया और उसकी बातों को माना।

मूसा के मरने के बाद इस्राएलियों का नेतृत्व किसने किया?

यहोशू ने उनका नेतृत्व किया।

यहोशू किस प्रकार का अगुवा था?

वह एक अच्छा अगुवा था क्योंकि उसने परमेश्वर पर भरोसा किया और उसकी आज्ञा मानी।

15. प्रतिज्ञा का देश

15:01

अन्त में, अब वह समय आ गया था कि इस्राएली लोग प्रतिज्ञा के देश, कनान में प्रवेश करें। उस देश में यरीहो नाम का एक नगर था। उसकी सुरक्षा के लिए उसके चारों ओर मजबूत दीवारें थीं। यहोशू ने उस नगर में दो भेदियों को भेजा। उस नगर में राहाब नाम की एक वेश्या रहती थी। उसने इन भेदियों को छिपाया, और फिर बाद में उसने उनको नगर से बच कर निकलने में सहायता की। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह परमेश्वर में विश्वास करती थी। जिस समय इस्राएली लोग यरीहो को नाश करेंगे तब उन्होंने राहाब और उसके परिवार की रक्षा करने की प्रतिज्ञा की थी।

जब प्रतिज्ञात देश में प्रवेश करने का समय आया, तो यहोशू ने सबसे पहले क्या किया?

उसने दो जासूसों को जेरिको भेजा।

जासूसों ने वेश्या राहाब के लिए क्या करने का वादा किया?

उन्होंने राहाब और उसके परिवार की रक्षा करने का वादा किया जब इस्राएलियों ने शहर को नष्ट कर दिया।

15:02

इस्राएली लोगों को प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने के लिए यरदन नदी पार करनी थी। परमेश्वर ने यहोशू से कहा, "याजकों को पहले जाने दे।" जब याजकों ने यरदन नदी में अपने कदमों को रखा तो पानी की धारा का बहना थम गया, जिससे कि इस्राएली लोग नदी की दूसरी ओर सूखी भूमि पर पार जा सके।

इस्राएली यरदन नदी को कैसे पार कर पाए?

जब याजकों ने यरदन नदी में कदम रखना आरम्भ किया, तब जल का बहना बन्द हो गया।

15:03

उन लोगों के यरदन नदी पार कर ली तो परमेश्वर ने यहोशू से कहा कि यरीहो पर हमला करने के लिए तैयार रहे, यद्यपि वह बहुत दृढ़ नगर था। परमेश्वर ने उन लोगों से कहा कि उनके याजकों और सैनिकों को छः दिनों तक उस नगर के चारों ओर चक्कर लगाना है। अतः याजकों और सैनिकों ने ऐसा ही किया।

इस्राएलियों ने यरीहो पर आक्रमण कैसे किया?

उन्होंने छह दिनों तक दिन में एक बार शहर के चारों ओर चक्कर लगाया।

15:04

तब सातवें दिन, इस्राएलियों ने उस नगर के चारों ओर सात बार और चक्कर लगाए। उनके नगर के चारों ओर सातवीं बार चक्कर लगा लेने के बाद, याजकों ने अपनी तुरहियाँ फूँकी और सैनिकों ने जोरदार शब्द किया।

सातवें दिन इस्राएलियों ने यरीहो के साथ क्या किया?

सातवें दिन उन्होंने नगर के चारों ओर सात बार फिर चढ़ाई। जब वे अंतिम बार नगर के चारों ओर घूमे, तब याजकों ने तुरहियाँ बजाईं और सैनिकों ने जयजयकार की।

15:05

तब यरीहो के चारों ओर की दीवारें गिर गईं! जैसी परमेश्वर ने आज्ञा दी थी इस्राएलियों ने नगर की हर एक चीज को नष्ट कर दिया। उन्होंने केवल राहाब और उसके परिवार को छोड़ दिया, जो इस्राएलियों का भाग बन गए थे। जब कनान में रहने वाले अन्य लोगों ने सुना कि इस्राएलियों ने यरीहो को नष्ट कर दिया है, तो वे डर गए कि इस्राएली लोग उन पर भी हमला करेंगे।

क्या हुआ जब सैनिकों ने जयजयकार की और याजकों ने तुरहियाँ बजाईं?

यरीहो की शहरपनाह इसलिए गिर गई ताकि इस्राएली नगर में सब कुछ नष्ट कर सकें।

राहाब और उसके परिवार का क्या हुआ?

वे मारे नहीं गए, और वे इस्राएलियों का भाग बन गए।

15:06

परमेश्वर ने इस्राएलियों को आज्ञा दी थी कि कनान में रहने वाली किसी भी जाति के साथ शान्तिसंधि नहीं करनी है। परन्तु गिबोनियों नामक एक कनानी जाति ने यहोशू से झूठ बोला कि वे कनान से दूर एक स्थान के रहने वाले हैं। उन्होंने यहोशू से उनके साथ शान्तिसंधि करने का अनुरोध किया। यहोशू और अन्य इस्राएली अगुवों ने परमेश्वर से नहीं पूछा कि उनको क्या करना चाहिए। इसके बजाए, उन्होंने गिबोनियों के साथ शान्तिसंधि कर ली।

गिबोनियों ने इस्राएलियों को उनके साथ शान्ति सन्धि करने के लिए किस प्रकार बरगलाया?

उन्होंने कहा कि वे कनान से बहुत दूर के स्थान से हैं।

यहोशू और इस्राएली क्यों नहीं जानते थे कि गिबोनी झूठ बोल रहे हैं?

उन्होंने परमेश्वर से नहीं पूछा।

15:07

तीन दिन बाद, इस्राएलियों को मालूम हुआ कि गिबोनी लोग कनान में ही रहते थे। वे क्रोधित हो गए क्योंकि गिबोनियों ने उनको धोखा दिया था। परन्तु उन्होंने उनके साथ की गई उस शान्तिसंधि को बनाए रखा क्योंकि वह परमेश्वर के सामने की गई थी। तब कुछ समय के बाद, कनान में रहने वाली एक अन्य जाति, एमोरियों के राजाओं ने सुना कि गिबोनियों ने इस्राएलियों के साथ शान्तिसंधि कर ली है, इसलिए उन्होंने अपनी-अपनी सेनाओं को एक कर के एक बड़ी सेना बनाई और गिबोन पर हमला कर दिया। गिबोनियों ने उनकी सहायता करने के लिए यहोशू के पास एक संदेश भेजा।

इस्राएलियों ने शांति संधि का पालन क्यों किया और गिबोनियों का बचाव क्यों किया?

उन्होंने उन्हें इसलिए नहीं मारा क्योंकि इस्राएलियों ने परमेश्वर के सामने प्रतिज्ञा की थी।

15:08

अतः यहोशू ने इस्राएलियों की सेना को इकट्ठा किया और गिबोनियों के पास पहुँचने के लिए वे पूरी रात चले। सुबह भोर में उन्होंने एमोरियों की सेना को चकित कर दिया और उन पर हमला कर दिया।

15:09

उस दिन परमेश्वर इस्राएलियों के लिए लड़ा। उसने एमोरियों को घबरा दिया और उसने बड़े-बड़े ओले गिरा कर बहुत से एमोरियों को मार डाला।

और किस प्रकार परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिए एमोरियों से युद्ध किया?

उसने एमोरियों को भ्रमित किया और उन पर बड़े-बड़े ओले बरसाए।

15:10

परमेश्वर ने सूर्य को भी आकाश में एक स्थान पर थमा दिया ताकि इस्राएलियों को पर्याप्त समय मिल जाए कि एमोरियों को पूरी तरह से हरा दें। उस दिन, परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिए एक बड़ी विजय प्राप्त की।

और किस प्रकार परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिए एमोरियों से युद्ध किया?

उसने सूर्य को एक स्थान पर ठहरा दिया जिससे इस्राएलियों के पास उन्हें पूरी तरह पराजित करने के लिए पर्याप्त समय था।

15:11

जब परमेश्वर ने उन सेनाओं को हराने के बाद, बहुत से कनानी जाति के लोग इस्राएल पर हमला करने के लिए इकट्ठा हुए। यहोशू और इस्राएलियों ने हमला करके उनका सर्वनाश कर दिया।

यहोशू और इस्राएलियों ने अन्य कनानी लोगों के समूहों के साथ क्या किया जिन्होंने उन पर आक्रमण किया?

यहोशू और इस्राएलियों ने उन्हें नष्ट कर दिया।

15:12

इन युद्धों के बाद, परमेश्वर ने इस्राएल के प्रत्येक गोत्र को प्रतिज्ञा के उस देश में उनका भाग दिया। तब परमेश्वर ने इस्राएल को उसकी सभी सीमाओं पर शान्ति प्रदान की।

इस्राएल के प्रत्येक गोत्र को क्या मिला?

परमेश्वर ने इस्राएल के 12 गोत्रों में से प्रत्येक को प्रतिज्ञा की भूमि का अपना भाग दिया।

15:13

जब यहोशू बूढ़ा हो गया तो उसने इस्राएल के सभी लोगों को एक साथ बुलाया। तब यहोशू ने उन लोगों को स्मरण कराया कि उन्होंने उस वाचा का पालन करने की प्रतिज्ञा की थी जो परमेश्वर ने उनके साथ सीनै पर्वत पर बाँधी थी। उन लोगों ने परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने और उसकी व्यवस्थाओं का पालन करने का वादा किया।

जब यहोशू बूढ़ा हुआ, तब उसने इस्राएलियों को क्यों इकट्ठे किया?

परमेश्वर ने उनके साथ जो वाचा बाँधी थी, उसका पालन करने के अपने दायित्व की याद दिलाने के लिए उसने उन्हें एक साथ बुलाया।

इस्राएलियों ने यहोशू को क्या उत्तर दिया?

उन्होंने परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने और उसके नियमों का पालन करने की प्रतिज्ञा की।

16. छुड़ाने वाले

16:01

यहोशू के मरने के बाद इस्राएलियों ने परमेश्वर की अवज्ञा की। उन्होंने परमेश्वर के नियमों का पालन नहीं किया, और उन्होंने उस वाचा के देश से बचे हुए कनानियों को बाहर नहीं निकाला। इस्राएलियों ने अपने सच्चे परमेश्वर, यहोवा को छोड़ कर कनानियों के देवताओं की उपासना करना आरम्भ कर दिया। इस्राएलियों के पास कोई राजा नहीं था, इसलिए जिसे जो सही लगा उसने वही किया।

यहोशू के मरने के बाद इस्राएलियों ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन कैसे किया?

उन्होंने कनानियों को न निकाला, और वे सच्चे परमेश्वर यहोवा को छोड़ कनानी देवताओं को दण्डवत करने लगे।

16:02

परमेश्वर की आज्ञा न मानने के द्वारा इस्राएलियों ने एक पद्धति को आरम्भ कर दिया जिसे कई बार दोहराया गया था। यह पद्धति इस प्रकार से चली: कुछ वर्षों तक इस्राएली परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानेंगे, तब वह उनको उनके शत्रुओं से पराजित करवाने के द्वारा दंडित करेगा। ये शत्रु इस्राएलियों से उनकी चीजों को लूट लेंगे, उनकी सम्पत्ति को नष्ट कर देंगे, और उनमें से बहुतों को मार डालेंगे। फिर जब इस्राएलियों के शत्रु उन पर कई वर्षों तक अत्याचार करेंगे, उसके बाद इस्राएली अपने पापों का पश्चाताप करेंगे और परमेश्वर से उनको बचाने के लिए प्रार्थना करेंगे।

परमेश्वर ने इस्राएलियों को उनकी अनाज्ञाकारिता के लिए कैसे दण्ड दिया?

परमेश्वर ने उनके शत्रुओं को उन्हें पराजित करने की अनुमति दी।

16:03

हर बार जब इस्राएली पश्चाताप करेंगे तो परमेश्वर उनको बचाएगा। वह एक छुड़ाने वाले के द्वारा ऐसा करेगा – एक ऐसा जन जो उनके शत्रुओं के विरुद्ध लड़ेगा और उनको पराजित करेगा। तब देश में शान्ति होगी और वह छुड़ाने वाला उन पर अच्छे से शासन करेगा। परमेश्वर ने उन लोगों को बचाने के लिए बहुत से छुड़ाने वालों को भेजा। परमेश्वर ने पास ही की एक शत्रु जाति, मिद्यानियों के द्वारा इस्राएलियों को पराजित करवाने के द्वारा फिर से ऐसा किया।

जब इस्राएली मदद के लिए पुकारे तो परमेश्वर ने कैसी प्रतिक्रिया दी?

उसने एक उद्धारकर्ता प्रदान किया जिसने उन्हें बचाया और भूमि पर शांति लाया।

16:04

मिद्यानियों ने सात वर्षों तक इस्राएलियों की फसलों को लूटा। इस्राएली लोग बहुत डर गए थे, और वे गुफाओं में छिप गए ताकि मिद्यानी लोग उनको खोज न पाएँ। आखिरकार, उनको बचाने के लिए उन्होंने परमेश्वर को पुकारा।

16:05

गिदोन नाम का एक इस्राएली पुरुष था। एक दिन, वह एक गुप्त स्थान में गेहूँ झाड़ रहा था ताकि मिद्यानी लोग उसे चुरा न पाएँ। यहोवा के स्वर्गदूत ने गिदोन के पास आकर उससे कहा, "हे शूरवीर सूरमा, परमेश्वर तेरे साथ है। जा और इस्राएलियों को मिद्यानियों से बचा।"

जब यहोवा का दूत उसके पास आया तब गिदोन क्या कर रहा था?

गिदोन छिपकर अनाज दाँव रहा था कि मिद्यानी लोग उसे चुरा न लें।

16:06

गिदोन के पिता के पास मूर्ति को समर्पित एक वेदी थी। सबसे पहली बात जो परमेश्वर ने गिदोन को करने के लिए कही वह उस वेदी को तोड़ना था। परन्तु गिदोन लोगों से डरता था, इसलिए उसने रात होने की प्रतीक्षा की। तब उसने उस वेदी को तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। उसने परमेश्वर के लिए एक नई वेदी को बनाया और उस पर परमेश्वर के लिए बलि चढ़ाई।

16:07

अगली सुबह लोगों ने देखा कि किसी ने वेदी को तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया है, इसलिए वे बहुत क्रोधित हुए। वे गिदोन को मार डालने के लिए उसके घर गए, परन्तु गिदोन के पिता ने कहा, "तुम क्यों अपने देवता की सहायता करने का प्रयास कर रहे हो? यदि वह देवता है तो उसे अपनी सुरक्षा स्वयं करने दो!" क्योंकि उसने ऐसा कहा इसलिए लोगों ने गिदोन को नहीं मारा।

16:08

तब इस्राएलियों को लूटने के लिए मिद्यानी लोग फिर से आए। वे इतने सारे थे कि उनकी गिनती भी नहीं की जा सकती थी। गिदोन ने उनके विरुद्ध लड़ने के लिए इस्राएलियों को एक साथ बुलाया। गिदोन ने परमेश्वर से दो चिन्हों की माँग की ताकि उसे विश्वास हो जाए कि परमेश्वर सच में उसे इस्राएल को बचाने के लिए कह रहा है।

16:09

पहले चिन्ह के लिए, गिदोन ने भेड़ की ऊन को भूमि पर रख कर परमेश्वर से कहा कि सुबह की ओस केवल भेड़ के उस ऊन पर पड़े और भूमि पर न पड़े। परमेश्वर ने ऐसा ही किया। अगली रात, उसने परमेश्वर से कहा कि भूमि गीली हो जाए परन्तु भेड़ की ऊन सूखी रहे। परमेश्वर ने ऐसा भी किया। इन दो चिन्हों के कारण, गिदोन ने विश्वास किया कि परमेश्वर सच में चाहता है कि वह इस्राएलियों को मिद्यानियों से बचाए।

गिदोन के द्वारा इस्राएल को बचाने के लिए परमेश्वर ने कौन से दो चिन्ह दिखाए?

परमेश्वर ने सुबह की ओस केवल भेड़ की खाल पर डाली, न कि जमीन पर, और फिर ओस केवल जमीन पर गिरी भेड़ की खाल पर नहीं।

16:10

तब गिदोन ने सैनिकों को अपने पास बुलाया और 32,000 पुरुष आए। परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा कि ये बहुत अधिक हैं। अतः गिदोन ने उन सब 22,000 को घर वापिस भेज दिया जो लड़ने से डरते थे। परमेश्वर ने गिदोन से कहा कि ये पुरुष अभी भी बहुत अधिक थे। इसलिए गिदोन ने 300 सैनिकों को छोड़ कर उन सब को घर भेज दिया।

गिदोन ने 300 सैनिकों को छोड़कर सभी को घर क्यों भेज दिया?

उसने उन्हें घर भेज दिया क्योंकि परमेश्वर ने उससे कहा कि उसके पास बहुत से आदमी हैं।

16:11

उस रात परमेश्वर ने गिदोन से कहा, "मिद्यानियों की छावनी में जा और उनको बातें करते हुए सुन। जब तू सुने कि वे क्या बातें करते हैं तो तू उन पर हमला करने से न डरेगा।" इसलिए उस रात, गिदोन नीचे उनकी छावनी में गया और उसने एक मिद्यानी सैनिक को अपने मित्र को वह बात बताते हुए सुना जो उसने स्वप्न में देखी थी। उस पुरुष के मित्र ने कहा, "इस स्वप्न का अर्थ है कि गिदोन की सेना हम मिद्यानी सेना को पराजित कर देगी!" जब गिदोन ने यह सुना तो उसने परमेश्वर की स्तुति की।

परमेश्वर ने गिदोन को और कौन-सा चिन्ह दिया जिससे वह डरे नहीं?

गिदोन ने एक मिद्यानी सैनिक को अपने सपने के बारे में सुना कि गिदोन की सेना मिद्यानियों की सेना को हरा देगी।

गिदोन ने मिद्यानी सैनिक का स्वप्न सुनकर क्या किया?

उसने परमेश्वर की पूजा की।

16:12

तब गिदोन अपने सैनिकों के पास लौटा और उनमें से प्रत्येक को एक-एक नरसिंगा, एक मिट्टी का पात्र, और एक मशाल दी। उन्होंने उस छावनी को घेर लिया जहाँ मिद्यानी सैनिक सो रहे थे। गिदोन के 300 सैनिकों ने अपनी मशालों को पात्रों से ढका हुआ था इसलिए मिद्यानी लोग उन मशालों के प्रकाश को नहीं देख पाए थे।

16:13

तब गिदोन के सब सैनिकों ने अपने पात्रों को एक ही समय पर तोड़ कर अचानक से मशालों की आग को प्रकट कर दिया। उन्होंने अपने नरसिंगे फूँके और चिल्लाए, "यहोवा की और गिदोन की तलवार!"

गिदोन और उसके आदमियों ने मिद्यानियों पर कैसे आक्रमण किया?

उन्होंने मिद्यानियों की छावनी को घेर लिया, और उनके मशालों को दिखाने के हंडियों को तोड़ डाला, और नरसिंगों को फूंका, और चिल्ला उठे, यहोवा की तलवार और गिदोन की तलवार।

16:14

परमेश्वर ने मिद्यानियों को घबरा दिया, इसलिए वे एक दूसरे को मारने-काटने लगे। तुरन्त ही, गिदोन वे संदेशवाहकों को बहुत से अन्य इस्राएलियों को मिद्यानियों का पीछा करने में उनकी सहायता करने को बुलाने के लिए भेजा। उन्होंने उनमें से बहुतों को मार डाला और बाकियों का पीछा करके उनको इस्राएल देश से बाहर निकाल दिया। उस दिन 1,20,000 मिद्यानी मारे गए। इस तरह परमेश्वर ने इस्राएल को बचाया।

मिद्यानियों को हराने में गिदोन की मदद करने के लिए परमेश्वर ने क्या किया?

परमेश्वर ने मिद्यानियों को भ्रमित किया इसलिए उन्होंने हमला किया और एक दूसरे को मार डाला।

16:15

वे लोग गिदोन को अपना राजा बनाना चाहते थे, परन्तु गिदोन ने उनको ऐसा नहीं करने दिया, लेकिन उसने उनसे वह सोने के आभूषण माँगे जो उनमें से प्रत्येक ने मिद्यानियों से लूट लिए थे। उन लोगों ने बड़ी मात्रा में गिदोन को सोना दिया।

16:16

तब गिदोन ने उस सोने से एक विशेष वस्त्र बनाया जैसा कि महायाजक पहना करते थे। परन्तु लोगों ने उसकी उपासना करना आरम्भ कर दिया जैसे कि वह एक मूर्ति हो। तब परमेश्वर ने फिर से इस्राएल को दंडित किया क्योंकि उन्होंने मूर्ति की उपासना की थी। परमेश्वर ने उनके शत्रुओं को उन्हें पराजित करने में सक्षम किया। आखिरकार उन्होंने फिर से परमेश्वर से सहायता करने के लिए प्रार्थना की, और परमेश्वर ने उनके पास उनको बचाने के लिए एक अन्य छुड़ाने वाले को भेजा।

गिदोन ने ऐसा क्या किया कि बाद में लोग फिर से मूर्तिपूजा करने लगे?

उसने सोने का एक विशेष वस्त्र बनाया जिसे लोग बाद में मूर्ति के रूप में पूजने लगे।

16:17

यही बात कई बार घटित हुई: इस्राएली लोग पाप करेंगे, परमेश्वर उनको दंडित करेगा, वे पश्चाताप करेंगे, और परमेश्वर उनको छुड़ाने के लिए किसी को भेजेगा। कई वर्षों तक, परमेश्वर ने बहुत से छुड़ाने वालों को भेजा जिन्होंने इस्राएलियों को उनके शत्रुओं को बचाया।

इस्राएलियों ने कई बार क्या किया?

इस्राएली पाप करेंगे, परमेश्वर उन्हें दण्ड देगा, वे पश्चाताप करेंगे, और परमेश्वर उन्हें बचाने के लिए एक उद्धारकर्ता भेजेगा।

16:18

आखिरकार, उन लोगों ने अन्य देशों की तरह परमेश्वर से अपने लिए एक राजा की माँग की। वे एक ऐसा राजा चाहते थे जो लंबा और शक्तिशाली हो, और जो युद्ध में उनकी अगुवाई कर सके। परमेश्वर को यह निवेदन पसंद नहीं आया, परन्तु उसने उनको वैसा राजा दिया जैसी उन्होंने माँग की थी।

लोगों ने परमेश्वर से राजा क्यों मांगा?

अन्य सभी राष्ट्रों के राजा थे, और इस्राएली चाहते थे कि कोई उन्हें युद्ध में ले जाए।

परमेश्वर ने उनके अनुरोध का उत्तर कैसे दिया?

जैसा उन्होंने मांगा था, वैसा ही उसने उन्हें एक राजा दिया।

17. दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा

17:01

शाऊल इस्राएल का पहला राजा था। वह लंबा और सुंदर था, जैसा वे लोग चाहते थे एकदम वैसा। इस्राएल पर अपने शासन के पहले कुछ वर्षों में शाऊल एक अच्छा राजा था। परन्तु बाद में वह एक दुष्ट व्यक्ति बन गया जिसने परमेश्वर की बातों को नहीं माना, इसलिए परमेश्वर ने एक अन्य व्यक्ति को चुना जो कि एक दिन उसके स्थान पर राजा बनेगा।

शाऊल, इस्राएल का पहला राजा, एक अच्छा राजा या दुष्ट राजा था?

पहले कुछ साल तो वह अच्छा था, लेकिन फिर वह दुष्ट हो गया।

17:02

परमेश्वर ने दाऊद नाम के एक जवान इस्राएली पुरुष को चुन कर एक दिन शाऊल के स्थान पर राजा होने के लिए तैयार करना आरम्भ किया। दाऊद बैतलहम नगर का एक चरवाहा था। कई समयों पर, दाऊद ने सिंह और भालू दोनों को मार डाला था क्योंकि दाऊद द्वारा रखवाली करते समय उसके पिता की भेड़ों पर उन्होंने हमला किया था। दाऊद एक नम्र और धर्मी व्यक्ति था। उसने परमेश्वर पर भरोसा किया और उसकी बातों को माना।

राजा बनने से पहले दाऊद का व्यवसाय क्या था?

वह एक चरवाहा था जो भेड़ों की देखभाल करता था।

17:03

जब दाऊद अभी जवान पुरुष ही था, उसने लंबे-चौड़े गोलियत के विरुद्ध लड़ाई की। गोलियत एक बहुत अच्छा सैनिक था। वह बहुत मजबूत और लगभग तीन मीटर लंबा था! परन्तु परमेश्वर ने गोलियत को मारने और इस्राएल को बचाने में दाऊद की सहायता की। इसके बाद, दाऊद ने इस्राएल के शत्रुओं पर कई बार विजय प्राप्त की। दाऊद एक बड़ा सैनिक बन गया, और उसने बहुत से युद्धों में इस्राएली सेना की अगुवाई की। लोगों ने उसकी बहुत प्रशंसा की।

यह इतना आश्चर्यजनक क्यों था कि दाऊद गोलियत को मारने में समर्थ हुआ?

गोलियथ एक बहुत लंबा, बहुत मजबूत प्रशिक्षित सैनिक था जो युद्ध के लिए तैयार था। डेविड एक चरवाहा लड़का था जिसके पास गोफन के अलावा कोई हथियार नहीं था।

इस्राएल के लोगों ने दाऊद की स्तुति क्यों की?

उसने इस्राएल के शत्रुओं पर अनेक विजय प्राप्त की।

17:04

लोगों ने दाऊद से इतना स्नेह किया कि शाऊल उससे जलने गया। आखिरकार शाऊल उसे मार डालना चाहता था, इसलिए दाऊद उससे और उसके सैनिकों से छिपने के लिए जंगल में भाग गया। एक दिन, जब शाऊल और उसके सैनिक दाऊद की खोज में थे तो शाऊल एक गुफा में गया। यह वही गुफा थी जिसमें दाऊद छिपा हुआ था, परन्तु शाऊल ने उसे नहीं देखा। दाऊद शाऊल के पीछे उसके बहुत समीप चला गया और उसके वस्त्र से एक टुकड़ा काट लिया। बाद में, जब शाऊल उस गुफा से निकला तो दाऊद ने उसे पुकार कर उस पकड़े हुए वस्त्र के टुकड़े को दिखाया। इस रीति से, शाऊल जान गया कि दाऊद ने राजा बनने के लिए उसे मार डालने से इंकार कर दिया है।

जब दाऊद को गुफा में शाऊल को मारने का अवसर मिला तो उसने क्या किया?

उसने शाऊल को छोड़ दिया और उसके कपड़े का केवल एक टुकड़ा काट डाला।

17:05

कुछ समय के बाद, शाऊल युद्ध मैं मर गया, और दाऊद इस्राएल का राजा बन गया। वह एक अच्छा राजा था, और लोगों ने उससे प्रीति रखी। परमेश्वर ने दाऊद को आशीषित किया और उसे सफल बनाया। दाऊद ने कई युद्ध लड़े, और परमेश्वर ने इस्राएल के शत्रुओं को पराजित करने में उसकी सहायता की। दाऊद ने यरूशलेम नगर को जीत कर उसे अपनी राजधानी बनाया, जहाँ वह रहा और शासन किया। दाऊद चालीस वर्षों तक राजा रहा। इस समय के दौरान, इस्राएल सामर्थी और धनवान बन गया।

वह कौन सा नगर था जिसे दाऊद ने जीता और फिर अपनी राजधानी बनाया?

उसने यरूशलेम को अपनी राजधानी बनाया।

17:06

दाऊद एक मंदिर बनाना चाहता था जहाँ सारे इस्राएली परमेश्वर की आराधना कर सकें और उसके लिए बलिदान चढ़ा सकें। लगभग 400 वर्षों से, वे लोग मूसा के बनाए हुए मिलापवाले तंबू में परमेश्वर की आराधना कर रहे थे और उसके लिए बलिदान चढ़ा रहे थे।

दाऊद परमेश्वर के लिए क्या बनाना चाहता था?

दाऊद एक मंदिर बनाना चाहता था जहाँ सभी इस्राएली परमेश्वर की आराधना कर सकें और बलि चढ़ा सकें।

17:07

परन्तु वहाँ नातान नाम का एक भविष्यद्वक्ता था। परमेश्वर ने उसे दाऊद से यह कहने के लिए भेजा: "तूने बहुत से युद्ध लड़े हैं, इसलिए तू मेरे लिए इस मंदिर को नहीं बनाएगा। तेरा पुत्र इसे बनाएगा। तौभी, मैं तुझे बहुतायत से आशीषित करूँगा। तेरा एक वंशज सदा के लिए मेरे लोगों पर राजा के रूप में शासन करेगा।" सदा के लिए शासन करने वाला वह दाऊद का एकमात्र वंशज मसीह था। मसीह परमेश्वर का चुना हुआ जन था जो संसार के लोगों को उनके पापों से बचाएगा।

परमेश्वर ने दाऊद को मन्दिर बनाने की अनुमति क्यों नहीं दी?

दाऊद इसे नहीं बनाना चाहता था क्योंकि उसने बहुत से युद्ध लड़े थे।

भगवान ने किसने कहा था कि मंदिर का निर्माण करेगा?

दाऊद का पुत्र इसे बनाएगा।

परमेश्वर ने दाऊद को जो महान प्रतिज्ञा दी थी वह क्या थी?

परमेश्वर ने वादा किया कि दाऊद के वंशजों में से एक राजा के रूप में हमेशा के लिए परमेश्वर के लोगों पर शासन करेगा।

मसीहा कौन सा महान कार्य करेगा?

वह संसार के लोगों को उनके पाप से बचाएगा।

17:08

जब दाऊद ने नातान के संदेश को सुना तो उसने परमेश्वर का धन्यवाद किया और उसकी स्तुति की। परमेश्वर उसकी प्रतिष्ठा को बढ़ा रहा था और उसे बहुत सी आशीषें दे रहा था। बेशक, दाऊद नहीं जानता था कि परमेश्वर इन बातों को कब करेगा। इस समय हम जानते हैं कि इस्राएलियों को एक लंबे समय तक, लगभग 1,000 वर्ष तक मसीह के आने की प्रतीक्षा करनी होगी।

17:09

दाऊद ने कई वर्षों तक न्यायपूर्वक अपने लोगों पर शासन किया। उसने बड़ी निष्ठा से परमेश्वर की बातों को माना और परमेश्वर ने उसे आशीषित किया। हालाँकि, अपने जीवन के अंत में उसने परमेश्वर के विरुद्ध भयानक पाप किया था।

17:10

एक दिन दाऊद ने अपने महल से बाहर झाँका और एक सुंदर स्त्री को नहाते हुए देखा। वह उसे नहीं जानता था, लेकिन उसने मालूम कर लिया कि उसका नाम बतशेबा था।

17:11

अपनी दृष्टि को फेर लेने के बजाए, दाऊद ने उसे अपने पास लाने के लिए किसी को भेजा। वह उसके साथ सोया और उसे वापिस घर भेज दिया। थोड़े समय के बाद बतशेबा ने यह कह कर दाऊद के पास संदेश भेजा कि वह गर्भवती है।

बाद में दाऊद ने अपने जीवन में कौन-सा भयंकर पाप किया?

उसने बतशेबा के साथ व्यभिचार किया और उसके पति को मार डाला।

17:12

बतशेबा का पति ऊरिय्याह नाम का एक व्यक्ति था। वह दाऊद के उत्तम सैनिकों में से एक था। इस समय वह युद्ध करने के लिए बाहर गया हुआ था। दाऊद ने ऊरिय्याह को युद्ध से वापिस बुला कर उसे अपनी पत्नी के साथ रहने के लिए कहा। परन्तु अन्य सैनिक युद्ध में थे इसलिए ऊरिय्याह ने घर जाने से मना कर दिया। अतः दाऊद ने ऊरिय्याह को वापिस युद्ध में भेज दिया और सेनापति से उसे युद्ध में ऐसे स्थान पर रखने के लिए कहा जहाँ शत्रु सबसे शक्तिशाली हो ताकि वह मारा जाए। तो ऐसा हुआ कि ऊरिय्याह युद्ध में मारा गया।

दाऊद ने ऐसा क्या किया कि लोगों को पता न चले कि उसने पाप किया है?

उसका अपना सामान्य स्थान उरिय्याह था जहाँ वह युद्ध में मारा जाएगा।

17:13

ऊरिय्याह के युद्ध में मर जाने के बाद दाऊद ने बतशेबा से विवाह कर लिया। बाद में, उसने दाऊद के पुत्र को जन्म दिया। दाऊद ने जो किया उससे परमेश्वर बहुत क्रोधित था, इसलिए उसने नातान भविष्यद्वक्ता को दाऊद को यह बताने के लिए भेजा कि उसका पाप कितना बुरा था। दाऊद ने अपने पाप का पश्चाताप किया और परमेश्वर ने उसे क्षमा कर दिया। अपने शेष जीवन में, अपने कठिन समयों में भी दाऊद परमेश्वर के पीछे-पीछे चला और उसकी बातों को माना।

जब नातान ने दाऊद से उसके पाप के बारे में पूछा तो दाऊद ने क्या किया?

दाऊद ने अपने पाप का पश्चाताप किया और परमेश्वर की क्षमा प्राप्त की।

17:14

परन्तु दाऊद का बच्चा मर गया। इस रीति से परमेश्वर ने दाऊद को दंडित किया। इसके अलावा, दाऊद के मरने तक, उसके अपने परिवार के कुछ लोगों ने उसके विरुद्ध लड़ाई की, और दाऊद की अपनी शक्ति कम हो गई थी। परन्तु परमेश्वर विश्वासयोग्य था और अब भी उसने वह किया जो उसने दाऊद से करने का वादा किया था कि वह करेगा, भले ही दाऊद ने उसकी अवज्ञा की थी। बाद में, दाऊद और बतशेबा के दूसरी संतान उत्पन्न हुई, और उन्होंने उसका नाम सुलैमान रखा।

परमेश्वर ने दाऊद को उसके पाप के लिए कैसे दण्ड दिया?

दाऊद के बच्चे की मृत्यु हो गई, डेविड के परिवार में जीवन भर लड़ाई होती रही, और डेविड की शक्ति बहुत कमजोर हो गई।

क्या दाऊद के विश्वासघाती होने के बावजूद भी परमेश्वर ने दाऊद से किए अपने वादे पूरे किए?

हाँ, उसने अभी भी उन्हें रखा था।

उनके पुत्र का नाम क्या था जो दाऊद और बतशेबा के बाद में पैदा हुआ था?

उसका नाम सोलोमन था।

18. विभाजित राज्य

18:01

दाऊद राजा ने चालीस वर्षों तक शासन किया। तब वह मर गया, और उसके पुत्र सुलैमान ने इस्राएल पर शासन करना आरम्भ किया। परमेश्वर ने सुलैमान से बात की और उससे पूछा कि वह सबसे अधिक क्या चाहता है कि परमेश्वर उसके लिए करे। सुलैमान ने परमेश्वर से माँगा कि वह उसे बहुत बुद्धिमान बना दे। इस बात ने परमेश्वर को प्रसन्न किया, इसलिए परमेश्वर ने सुलैमान को संसार का सबसे बुद्धिमान पुरुष बना दिया। सुलैमान ने बहुत सी बातों को सीखा और वह एक बुद्धिमान शासक था। परमेश्वर ने उसे बहुत धनवान भी बना दिया था।

सुलैमान ने परमेश्वर से उसके लिए क्या करने को कहा?

उसने भगवान से उसे बहुत बुद्धिमान बनाने के लिए कहा।

18:02

यरूशलेम में सुलैमान ने उस मंदिर को बनाया जिसके लिए उसके पिता ने योजना बनाई थी और सामान को इकट्ठा किया था। अब लोग मिलापवाले तंबू के बजाए मंदिर में परमेश्वर की आराधना करते थे और उसके लिए बलि चढ़ाते थे। परमेश्वर आकर मंदिर में उपस्थित रहा करता था, और वहाँ वह अपने लोगों के साथ वास करता था।

सुलैमान ने जो मन्दिर बनवाया था उसका क्या उद्देश्य था?

यह लोगों के लिए भगवान की पूजा करने और बलि चढ़ाने का स्थान था।

18:03

परन्तु सुलैमान ने दूसरे देशों की स्त्रियों से प्रेम किया। उसने बहुत सी, लगभग 1,000 स्त्रियों से विवाह करके परमेश्वर की अवज्ञा की! इनमें से बहुत सी स्त्रियाँ पराए देशों से आईं और अपने साथ अपने देवताओं को लाईं और उनकी उपासना करना जारी रखा। जब सुलैमान बूढ़ा हो गया तो उसने भी उनके देवताओं की उपासना की।

सुलैमान ने कौन-से गंभीर पाप किए?

उसने कई विदेशी महिलाओं से शादी की और अपने बुढ़ापे में उनके देवताओं की पूजा की.

18:04

इस वजह से परमेश्वर सुलैमान से क्रोधित था। उसने कहा कि वह इस्राएल देश को दो राज्यों में विभाजित करने के द्वारा उसे दंड देगा। वह सुलैमान के मरने के बाद ऐसा करेगा।

परमेश्वर ने सुलैमान के पापों का दण्ड कैसे दिया?

परमेश्वर ने कहा कि वह सुलैमान की मृत्यु के बाद इस्राएल देश को दो राज्यों में विभाजित करेगा।

18:05

सुलैमान के मरने के बाद, रहूबियाम राजा बना। इस्राएल देश के सब लोग उसे अपने राजा के रूप में स्वीकार करने के लिए एक साथ इकट्ठा हुए। उन्होंने रहूबियाम से शिकायत की कि सुलैमान ने उनसे बहुत कठिन परिश्रम करवाया था और बहुत से कर वसूले थे। उन्होंने रहूबियाम से अनुरोध किया कि उनसे कम काम करवाए।

18:06

परन्तु रहूबियाम ने उनको बड़ी ही मूर्खता से जवाब दिया, "तुम कहते हो कि मेरे पिता सुलैमान ने तुमसे कठिन परिश्रम करवाया। परन्तु मैं तुमसे उससे भी अधिक कठिन परिश्रम करवाऊँगा, और मैं तुमको उससे भी अधिक पीड़ित करूँगा।"

रहूबियाम ने लोगों को क्या मूर्खतापूर्ण उत्तर दिया?

मैं तुझ से अधिक परिश्रम करवाऊंगा और तुझे अपने पिता सुलैमान से भी अधिक दण्ड दूंगा।

18:07

जब लोगों ने उसे ऐसा कहते सुना तो उनमें से कइयों ने उसके विरुद्ध बलवा किया। दस गोत्रों ने उसे छोड़ दिया; उसके साथ अब केवल दो गोत्र ही बचे। इन दो गोत्रों ने स्वयं को यहूदा का राज्य कहा।

रहूबियाम के साथ रहने वाले दो दक्षिणी गोत्रों द्वारा स्थापित राज्य का नाम क्या था?

इसे यहूदा राज्य का नाम दिया गया।

18:08

बाकी के दस गोत्रों ने यारोबाम नाम के एक पुरुष को अपना राजा बना लिया। ये गोत्र देश के उत्तर-पूर्वी भाग में थे। उन्होंने स्वयं को इस्राएल का राज्य कहा।

कितने गोत्रों ने रहूबियाम के विरुद्ध विद्रोह किया और उत्तरी राज्य का गठन किया?

दस जनजातियाँ इस्राएल के राज्य में शामिल हो गईं।

18:09

परन्तु यारोबाम ने परमेश्वर के विरुद्ध बलवा किया और लोगों से पाप करवाया। उसने अपने लोगों के द्वारा उपासना करने के लिए दो मूर्तियों को बनाया। वे अब यहूदा के राज्य में यरूशलेम में परमेश्वर के मंदिर में उसकी आराधना करने के लिए नहीं गए।

यारोबाम ने अपने लोगों को यहूदा जाने से रोकने के लिए क्या किया कि वह मन्दिर में उपासना न करे?

उसने अपने लोगों की पूजा करने के लिए इस्राएल के राज्य में दो मूर्तियाँ बनवाईं और रखीं।

18:10

यहूदा और इस्राएल के राज्य शत्रु बन गए और अक्सर एक दूसरे के विरुद्ध लड़ने लगे।

18:11

इस्राएल के नए राज्य में, सारे ही राजा दुष्ट थे। इनमें से कई राजा उनके स्थान पर राजा बनने की चाह रखने वाले अन्य इस्राएलियों के द्वारा मारे गए थे।

इस्राएल के कितने राजा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य थे?

उनमें से कोई भी वफादार नहीं था।

18:12

इस्राएल राज्य के सारे ही राजाओं ने और अधिकतर लोगों ने मूर्तियों की उपासना की। जब उन्होंने ऐसा किया, तो वे अक्सर वेश्याओं के साथ सोए और यहाँ तक कि कई बार मूर्तियों के आगे बच्चों को बलि भी किया।

मूर्तियों की पूजा में अक्सर शामिल होने वाली कुछ बुरी प्रथाएँ क्या थीं?

उन्होंने यौन अनैतिकता और बाल बलिदान में भाग लिया।

18:13

यहूदा राज्य के राजा, दाऊद के वंशज थे। इन राजाओं में से कई भले व्यक्ति थे जिन्होंने न्यायपूर्वक शासन किया और परमेश्वर की आराधना की। परन्तु यहूदा के अधिकांश राजा दुष्ट थे। उन्होंने दुष्टता से शासन किया, और मूर्तियों की उपासना की। यहाँ तक कि इनमें से कुछ राजाओं ने झूठे देवताओं के आगे अपने बच्चों को भी बलि कर दिया। यहूदा के अधिकतर लोगों ने भी परमेश्वर के विरुद्ध बलवा किया और अन्य देवताओं की उपासना की।

यहूदा के राजाओं का पूर्वज कौन था?

राजा दाऊद उनका पूर्वज था।

क्या यहूदा के कोई राजा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य थे?

हाँ, कुछ विश्वासयोग्य थे, परन्तु अधिकांश दुष्ट थे।

19. भविष्यद्वक्ता

19:01

परमेश्वर हमेशा इस्राएलियों के पास भविष्यद्वक्ताओं को भेजता रहता था। भविष्यद्वक्ता परमेश्वर से संदेशों को सुनते थे और फिर उसे लोगों को बताते थे।

भविष्यवक्ताओं को वे संदेश कहाँ से मिले जो उन्होंने लोगों से कहे थे?

उन्होंने परमेश्वर के सन्देश सुने।

19:02

जब अहाब इस्राएल राज्य पर राजा था तो उस समय एलिय्याह भविष्यद्वक्ता था। अहाब एक बुरा व्यक्ति था। उसने झूठे बाल देवता की उपासना करवाने के लिए लोगों को विवश किया था। इसलिए एलिय्याह ने अहाब से कहा कि परमेश्वर उन लोगों को दंडित करने जा रहा था। उसने उससे कहा, "जब तक मैं फिर से बारिश होने के लिए न कहूँ तब तक इस्राएल के राज्य में न बारिश होगी और न ही ओस गिरेगी।" इस बात ने अहाब को इतना क्रोधित कर दिया कि उसने एलिय्याह को मार डालने का निर्णय किया।

एलिय्याह ने क्या कहा कि परमेश्वर लोगों को दण्ड देने जा रहा है?

एलिय्याह ने कहा कि परमेश्वर इस्राएल के राज्य में वर्षा और ओस को तब तक रोकेगा जब तक एलिय्याह यह न कहे कि फिर से वर्षा होगी।

19:03

इसलिए परमेश्वर ने एलिय्याह से कहा कि वह जंगल में जाकर अहाब से छिप जाए। एलिय्याह जंगल में उस सोते के पास गया जहाँ जाने के लिए परमेश्वर ने उसे बताया था। हर सुबह और हर शाम, पक्षी एलिय्याह के लिए रोटी और माँस लेकर आते थे। इस सम्पूर्ण समय, अहाब और उसकी सेना एलिय्याह की खोज करते रहे, परन्तु वे उसे खोज न पाए।

परमेश्वर ने एलिय्याह को जंगल में जहाँ वह छिपा हुआ था कैसे प्रदान किया?

हर सुबह और शाम को, भगवान उसके लिए रोटी और मांस के साथ पक्षी भेजते थे।

19:04

बारिश न होने से कुछ समय के बाद वह सोता सूख गया। इसलिए एलिय्याह पास ही के एक देश में चला गया। उस देश में एक गरीब विधवा थी जिसके एक पुत्र था। उनके पास भोजन लगभग समाप्त हो चुका था क्योंकि वहाँ कोई फसल न हुई थी। परन्तु फिर भी, उस स्त्री ने एलिय्याह की देखभाल की, इसलिए परमेश्वर ने उसकी और उसके पुत्र की आवश्यकताओं को पूरा किया, इस कारण से उसके आटे का पात्र और उसके तेल की कुप्पी कभी खाली न हुई। उस पूरे अकाल के दौरान उनके पास भोजन था। एलिय्याह कुछ वर्षों तक वहाँ रहा।

एलिय्याह जब विधवा और उसके बेटे के साथ रहता था तो परमेश्वर ने उसकी देखभाल कैसे की?

परमेश्वर ने उनके आटे के घड़े और तेल की कुप्पी को कभी खाली नहीं होने दिया।

19:05

साढ़े तीन वर्षों के बाद, परमेश्वर ने एलिय्याह से कहा कि वह फिर से बारिश करेगा। उसने एलिय्याह से वापिस इस्राएल के राज्य में जाकर अहाब से बातें करने के लिए कहा। इसलिए एलिय्याह अहाब के पास गया। जब अहाब ने उसे देखा तो उसने कहा, "अच्छा तू है, मुसीबत पैदा करने वाला!" एलिय्याह ने जवाब दिया, "मुसीबत पैदा करने वाला तो तू है! तूने यहोवा को त्याग दिया है। वही सच्चा परमेश्वर है, लेकिन तू बाल की उपासना कर रहा है। अब तुझे इस्राएल राज्य के सब लोगों को कर्मेल पर्वत पर लेकर आना है।"

एलिय्याह ने कौन सी बड़ी बुराई कही जो अहाब ने की थी?

अहाब ने सच्चे परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया था, और बाल की पूजा की थी।

19:06

अत: सब लोग कर्मेल पर्वत को गए। वे पुरुष भी आए जो कहते थे कि वे बाल के संदेशों को बोलते हैं। ये बाल के भविष्यद्वक्ता थे। वे सब 450 थे। एलिय्याह ने लोगों से कहा, "कब तक तुम अपने मनों को फिराए रखोगे? यदि यहोवा परमेश्वर है तो उसकी आराधना करो! यदि बाल परमेश्वर है तो उसकी उपासना करो!"

एलिय्याह ने लोगों से क्या चुनाव करने को कहा?

उसने उनसे कहा कि यदि यहोवा परमेश्वर है, तो उन्हें उसकी सेवा करनी चाहिए, परन्तु यदि बाल परमेश्वर है, तो उन्हें बाल की सेवा करनी चाहिए।

19:07

तब एलिय्याह ने बाल के भविष्यद्वक्ताओं से कहा, "एक बैल को बलि करके उसके माँस को बलिदान होने को एक वेदी पर रखो, परन्तु आग मत लगाना। उसके बाद मैं भी वैसा ही करूँगा, और एक अलग वेदी पर मैं उस माँस को रखूँगा। तब यदि परमेश्वर वेदी पर आग गिराता है तो तुम जान लोगे कि वह सच्चा परमेश्वर है।" तब बाल के भविष्यद्वक्ताओं ने एक बलि को तैयार किया परन्तु आग नहीं लगाई।

19:08

तब बाल के भविष्यद्वक्ताओं ने बाल से प्रार्थना की, "हे बाल, हमारी सुन!" पूरे दिन उन्होंने प्रार्थना की और चिल्लाए और यहाँ तक कि स्वयं को चाकुओं से काट लिया, परन्तु बाल ने जवाब नहीं दिया, और उसने कोई आग नहीं गिराई।

19:09

बाल के भविष्यद्वक्ताओं ने बाल से प्रार्थना करने में लगभग पूरा दिन बिता दिया। अंततः उन्होंने प्रार्थना करना बंद कर दिया। तब एलिय्याह ने दूसरे बैल के माँस को परमेश्वर की वेदी पर रख दिया। उसके बाद, उसने लोगों से पानी के विशाल बरतनों को उस बलिदान पर तब तक उंडेलने के लिए कहा जब तक कि माँस, लकड़ियाँ, और यहाँ तक कि वेदी के आसपास की भूमि पूरी तरह से गीली न हो गई।

19:10

तब एलिय्याह ने प्रार्थना की, "हे यहोवा, अब्राहम, इसहाक, और याकूब के परमेश्वर, हमें दिखाओ कि आप इस्राएल के परमेश्वर हैं और यह कि मैं आपका दास हूँ। मुझे जवाब दीजिए जिससे कि ये लोग जान लेंगे कि आप ही सच्चे परमेश्वर हैं।"

19:11

तुरन्त ही, आकाश से आग गिरी और उसने माँस, लकड़ियाँ, चट्टानें, मिट्टी, और यहाँ तक कि वेदी के आसपास के पानी को भी जला दिया। जब लोगों ने यह देखा, वे भूमि पर गिर पड़े और बोले, "यहोवा ही परमेश्वर है! यहोवा ही परमेश्वर है!"

परमेश्वर ने कैसे दिखाया कि वह वास्तविक परमेश्वर है?

परमेश्वर ने आकाश से आग भेजी और मांस, लकड़ी, चट्टानें, मिट्टी और वेदी के चारों ओर का पानी जला दिया।

शक्ति के इस प्रदर्शन को देखकर लोगों ने कैसी प्रतिक्रिया दी?

वे भूमि पर गिर पड़े और बोले, “यहोवा परमेश्वर है! यहोवा परमेश्वर है!”

19:12

तब एलिय्याह ने कहा, "बाल का एक भी भविष्यद्वक्ता बच कर न जाने पाए!" इसलिए लोगों ने बाल के भविष्यद्वक्ताओं को पकड़ लिया और उनको वहाँ से अलग ले गए और उनको मार डाला।

बाल के नबियों का क्या हुआ?

लोग उन्हें उठाकर ले गए और मार डाला।

19:13

तब एलिय्याह ने अहाब राजा से कहा, "जल्दी से अपने घर को भाग जा, क्योंकि बारिश होने वाली है।" जल्दी ही बादल घने हो गए, और भारी बारिश आरम्भ हो गई। यहोवा उस सूखे को समाप्त कर रहा था। इससे प्रकट हुआ कि यहोवा ही सच्चा परमेश्वर है।

19:14

जब एलिय्याह ने अपने काम को समाप्त कर दिया, तो परमेश्वर ने एलीशा नाम के एक पुरुष को अपना भविष्यद्वक्ता होने के लिए चुना। परमेश्वर ने एलीशा के माध्यम से बहुत से चमत्कार किए। एक चमत्कार नामान के साथ हुआ। वह एक शत्रु की सेना का सरदार था, परन्तु उसे त्वचा का एक बुरा रोग हो गया था। नामान ने एलीशा के बारे में सुना था, इसलिए वह एलीशा के पास आया और उससे उसे ठीक करने के लिए अनुरोध किया। एलीशा ने नामान से कहा कि जाकर यरदन नदी के पानी में सात बार डुबकी लगा ले।

एलीशा ने नामान के चर्म रोग को ठीक करने के लिए क्या करने को कहा?

उसने उससे कहा कि वह यरदन नदी में सात बार डुबकी लगाए।

19:15

नामान क्रोधित हो गया। उसने ऐसा करने से इंकार कर दिया, क्योंकि यह उसे मूर्खता का काम लगता था। परन्तु बाद में उसने अपना मन बदल लिया और जाकर यरदन नदी के पानी में सात बार डुबकी लगाई। जब अंतिम बार वह पानी से बाहर निकला तो परमेश्वर ने उसे ठीक कर दिया।

एलीशा के निर्देश सुनने के बाद नामान ने क्या किया?

पहले तो वह क्रोधित हुआ और ऐसा नहीं करेगा क्योंकि यह मूर्खतापूर्ण लग रहा था, लेकिन बाद में उसने अपना विचार बदल दिया और ऐसा किया, और पूरी तरह से चंगा हो गया।

19:16

परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों के पास अन्य बहुत से भविष्यद्वक्ताओं को भेजा। उन सब ने लोगों से मूर्तियों की उपासना करना बंद कर देने के लिए कहा। इसके बजाए, उनको एक दूसरे के साथ न्यायपूर्वक व्यवहार करना चाहिए और एक दूसरे पर दया करनी चाहिए। उन भविष्यद्वक्ताओं ने लोगों को चेतावनी दी कि उनको बुरे कामों को करना बंद कर देना है और इसके बजाए परमेश्वर की बातों का पालन करना है। यदि उन लोगों ने ऐसा नहीं किया तो परमेश्वर उनको दोषी मान कर उनका न्याय करेगा, और उनको दंडित करेगा।

भविष्यद्वक्ताओं ने लोगों से क्या करने को कहा?

उन्होंने उनसे मूर्तियों की पूजा बंद करने और दूसरों के प्रति न्याय और दया दिखाने के लिए कहा; अन्यथा, परमेश्वर उन्हें दण्ड देगा।

19:17

अधिकांश समय, उन लोगों ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया। अक्सर उन्होंने भविष्यद्वक्ताओं के साथ बुरा व्यवहार किया और यहाँ तक कि कभी कभी उनको मार डाला। एक बार, उन्होंने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता को सूखे कुएँ में डाल दिया और उसे वहाँ मरने के लिए छोड़ दिया। वह कुएँ के तल में कीचड़ में धँस गया। लेकिन तब राजा को उस पर दया आई और उसने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि यिर्मयाह के मरने से पहले उसे कुएँ से बाहर खींच ले।

आम तौर पर, लोगों ने भविष्यवक्ताओं के साथ कैसा व्यवहार किया?

लोगों ने नबियों के साथ दुर्व्यवहार किया और कभी-कभी उन्हें मार भी डाला।

लोगों ने भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह के साथ कैसा दुर्व्यवहार किया?

लोगों ने यिर्मयाह को एक सूखे कुएँ में डाल दिया और उसे वहाँ मरने के लिए छोड़ दिया।

क्या यिर्मयाह कुएँ में मरा था?

नहीं, राजा ने उस पर दया की और अपने सेवकों से यिर्मयाह को बाहर निकालने को कहा।

19:18

भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर की ओर से बोलना जारी रखा भले ही लोगों ने उनसे नफरत की। उन्होंने लोगों को चेतावनी दी कि यदि उन्होंने पश्चाताप नहीं किया तो परमेश्वर उनको नाश कर देगा। उन्होंने लोगों को यह भी स्मरण कराया कि परमेश्वर ने उनके पास मसीह को भेजने की प्रतिज्ञा की है।

भविष्यद्वक्ताओं ने लोगों को याद दिलाया कि परमेश्वर एक विशेष व्यक्ति को भेजेगा। वह व्यक्ति कौन था?

वह व्यक्ति जिसे परमेश्वर भेजेगा वह मसीहा था।

20. बंधुआई और लौटना

20:01

इस्राएल के राज्य और यहूदा के राज्य दोनों ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया। उन्होंने उस वाचा को तोड़ दिया जो परमेश्वर ने उनके साथ सीनै पर बाँधी थी। परमेश्वर ने उनको पश्चाताप करने और फिर से उसकी आराधना करने के लिए चेतावनी देने को अपने भविष्यद्वक्ताओं को भेजा, परन्तु उन्होंने उनकी बातों को मानने से इंकार कर दिया।

भविष्यवक्ताओं ने लोगों को क्या चेतावनी दी?

उन्होंने उन्हें पश्चाताप करने और फिर से परमेश्वर की आराधना करने के लिए कहा।

लोगों ने भविष्यद्वक्ताओं के सन्देश के प्रति कैसी प्रतिक्रिया दिखाई?

लोगों ने मानने से इनकार कर दिया।

20:02

अत: परमेश्वर ने उनके शत्रुओं को उन्हें नाश करने में सक्षम करने के द्वारा दोनों राज्यों को दंडित किया। अश्शूर एक अन्य देश था जो बहुत शक्तिशाली हो गया था। वे दूसरे देशों के प्रति बहुत निर्दयी भी थे। उन्होंने आकर इस्राएल के राज्य को नाश कर दिया। अश्शूरियों ने आकर इस्राएल के राज्य में बहुतों को मार डाला, जो चाहा उसे लूट लिया, और देश के कई हिस्सों को जला दिया।

किस शत्रु ने इस्राएल के राज्य को नष्ट कर दिया?

अश्शूरियों ने इस्राएल के राज्य को नष्ट कर दिया।

20:03

अश्शूरियों ने सब अगुवों, धनवान लोगों, और ऐसे लोगों को जो कीमती वस्तुएँ बना सकते थे एक साथ इकट्ठा किया और वे उनको अश्शूर देश ले गए। इस्राएल में केवल कुछ गरीब इस्राएली ही बचे।

20:04

फिर अश्शूरी लोग उस देश में रहने के लिए विदेशियों को लेकर आए। उन विदेशियों ने उन नगरों को फिर से बनाया। जो इस्राएली वहाँ बचे थे उनसे उन्होंने विवाह किया। इन लोगों के वंशज सामरी कहलाए।

सामरी कौन थे?

सामरी इस्राएलियों के वंशज थे जिन्होंने अश्शूरियों द्वारा देश में लाए गए विदेशियों से विवाह किया था।

20:05

यहूदा के राज्य के लोगों ने देखा कि कैसे परमेश्वर ने उस पर विश्वास न करने और उसकी बातों को न मानने के कारण इस्राएल के राज्य के लोगों को दंडित किया था। परन्तु तब पर भी उन्होंने कनानियों के देवताओं की मूर्तियों की उपासना की। परमेश्वर ने उनको चेतावनी देने के लिए भविष्यद्वक्ताओं को भेजा, परन्तु उन्होंने सुनने से इंकार कर दिया।

क्या यहूदा के राज्य के लोगों ने परमेश्वर की बात मानी जब उन्होंने देखा कि कैसे उसने इस्राएल के राज्य को दंड दिया था?

नहीं, वे मूर्तियों की पूजा करते रहे।

20:06

लगभग 100 वर्षों के बाद अश्शूरियों ने इस्राएल के राज्य को नाश कर दिया। परमेश्वर ने बेबीलोन के राजा, नबूकदनेस्सर को यहूदा के राज्य पर हमला करने के लिए भेजा। बेबीलोन एक शक्तिशाली देश था। यहूदा का राजा नबूकदनेस्सर का दास बनने और प्रति वर्ष उसे बहुत सारे धन का भुगतान करने के लिए सहमत हो गया।

यहूदा के राजा ने किसकी सेवा करना स्वीकार किया?

वह बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर की सेवा करने को तैयार हो गया।

20:07

परन्तु कुछ वर्षों के बाद, यहूदा के राजा ने बेबीलोन के विरुद्ध बलवा किया। अत: बेबीलोनियों ने वापिस आकर यहूदा के राज्य पर हमला कर दिया। उन्होंने यरूशलेम नगर पर कब्जा कर लिया, मंदिर को नष्ट कर दिया, और नगर और मंदिर के खजाने को लूट ले गए।

20:08

बलवा करने के कारण यहूदा के राजा को दंडित करने के लिए, नबूकदनेस्सर के सैनिकों ने राजा के पुत्र को उसके सामने मार डाला और फिर उसे अंधा कर दिया। इसके बाद, वे राजा को ले गए ताकि वह बेबीलोन के बंदीगृह में मर जाए।

जब यहूदा के राजा ने विद्रोह किया, तब नबूकदनेस्सर के सैनिकों ने उसके साथ क्या किया?

उन्होंने उसके सामने राजकुमारों को मार डाला, उसे अंधा कर दिया, और उसे बाबेल के बन्दीगृह में मरने के लिये ले गए।

20:09

नबूकदनेस्सर और उसकी सेना यहूदा के राज्य के लगभग सारे ही लोगों को बेबीलोन ले गई, केवल सबसे गरीब लोगों को पीछे छोड़ कर ताकि वे खेतों में फसल उगाएँ। समय के इस काल को बंधुआई कहा गया है जिसमें परमेश्वर के लोगों को प्रतिज्ञा के देश से निकल जाने के लिए विवश किया गया था।

उस समय को हम क्या कहते हैं जब परमेश्वर के लोगों को प्रतिज्ञा की भूमि छोड़ने के लिए विवश किया गया था?

इस अवधि को निर्वासन कहा जाता है।

20:10

भले ही परमेश्वर ने अपने लोगों को उनके पाप के लिए बंधुआई में ले जाने के द्वारा दंडित किया, तौभी वह उनको या अपनी प्रतिज्ञाओं को नहीं भूला था। परमेश्वर ने अपने लोगों की निगरानी करना जारी रखा और अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उनसे बातें करता रहा। उसने प्रतिज्ञा की कि सत्तर वर्षों के बाद, वे फिर से प्रतिज्ञा के देश में लौटेंगे।

निर्वासन के दौरान परमेश्वर ने लोगों से क्या वादा किया था?

परमेश्वर ने वादा किया कि 70 साल बाद, वे वादा किए गए देश में फिर से लौटेंगे।

20:11

लगभग सत्तर वर्षों के बाद, फारस के राजा कुस्रू ने बेबीलोन को पराजित किया, इसलिए बेबीलोन के साम्राज्य के बजाए फारस के साम्राज्य ने कई देशों पर शासन किया। इस्राएली लोग अब यहूदी कहलाते थे। उनमें से बहुतों ने अपना पूरा जीवन बेबीलोन में बिता दिया था। केवल बहुत थोड़े बूढ़े यहूदियों को ही यहूदा का देश स्मरण था।

बेबीलोनियों को पराजित करने वाला राजा कौन था?

फारसियों के राजा कुस्रू ने बेबीलोनियों को पराजित किया।

20:12

फारसी लोग बहुत सामर्थी थे, परन्तु उन्होंने अपने जीते हुए लोगों पर दया की थी। फारसी लोगों का राजा बनने के थोड़े समय के बाद, कुस्रू ने एक आदेश दिया कि कोई भी यहूदी जो यहूदा को लौटना चाहता था, वह फारस से निकल कर वापिस यहूदा को जा सकता है। यहाँ तक कि उसने उनको मंदिर को फिर से बनाने के लिए धन भी दिया। अतः बंधुआई के सत्तर वर्षों के बाद, यहूदियों का एक छोटा समूह यहूदा में यरूशलेम नगर को लौट आए।

यहूदियों के बारे में राजा कुस्रू ने क्या आदेश दिया?

उसने आदेश दिया कि जो भी यहूदी यहूदा लौटना चाहता है, वह वहाँ जा सकता है।

20:13

जब वे लोग यरूशलेम पहुँचे तो उन्होंने मंदिर को और नगर के चारों ओर की दीवार को फिर से बनाया। फारसी लोग अब भी उन पर शासन करते थे लेकिन एक बार फिर से वे प्रतिज्ञा के देश में रह रहे थे और मंदिर में आराधना कर रहे थे।

जब यहूदी यरूशलेम पहुँचे तो उन्होंने क्या किया?

उन्होंने मन्दिर और नगर के चारों ओर की शहरपनाह को फिर से बनाया।

21. परमेश्वर मसीह का प्रतिज्ञा करता है

21:01

जब परमेश्वर ने संसार की सृष्टि की थी, वह जानता था कि उसे बाद में किसी दिन मसीह को भेजना होगा। उसने आदम और हव्वा से प्रतिज्ञा की कि वह ऐसा करेगा। उसने कहा कि हव्वा से एक वंशज जन्म लेगा जो साँप के सिर को कुचलेगा। जिस साँप ने हव्वा को धोखा दिया वह निःसन्देह शैतान था। परमेश्वर का अर्थ था कि मसीह पूरी तरह से शैतान को पराजित कर देगा।

परमेश्वर ने सबसे पहले मसीहा को भेजने का फैसला कब किया?

उसने दुनिया बनाने से पहले यह तय कर लिया था।

मसीहा शैतान के साथ क्या करेगा?

मसीहा शैतान को पूरी तरह से हरा देगा।

21:02

परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की थी कि उसके द्वारा संसार की सारी जातियाँ आशीष पाएँगी। परमेश्वर बाद में किसी समय पर मसीह को भेजने के द्वारा इस प्रतिज्ञा को पूरा करेगा। मसीह संसार के हर एक जाति में से लोगों को उनके पाप से छुड़ाएगा।

परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए किसे भेजा होगा कि सभी जाति समूह इब्राहीम के द्वारा आशीषित होंगे?

वह मसीहा भेजेगा।

21:03

परमेश्वर ने मूसा से प्रतिज्ञा की थी कि भविष्य में वह मूसा के समान एक अन्य भविष्यद्वक्ता को भेजेगा। यह भविष्यद्वक्ता मसीह होगा। इस रीति से, परमेश्वर ने फिर से प्रतिज्ञा की कि वह मसीह को भेजेगा।

किस तरह से मसीहा मूसा को पसंद करेगा?

मसीहा मूसा की तरह एक नबी होगा।

21:04

परमेश्वर ने राजा दाऊद से प्रतिज्ञा की थी कि उसके एक वंशज में से मसीह होगा। वह राजा होगा और परमेश्वर के लोगों पर सदा के लिए शासन करेगा।

मसीहा राजा दाऊद से कैसे संबंधित होगा?

मसीहा दाऊद के वंशजों में से एक होगा।

21:05

परमेश्वर ने यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता से बात की और कहा कि एक दिन वह एक नई वाचा बाँधेगा। वह नई वाचा इस्राएल के साथ सीनै पर बाँधी गई पुरानी वाचा के जैसी नहीं होगी। जब लोगों के साथ वह अपनी नई वाचा को बाँधेगा, तो वह उन पर स्वयं को व्यक्तिगत रूप से प्रकट करेगा। हर एक जन उससे प्रीति रखेगा और उसकी व्यवस्था का पालन करने की इच्छा रखेगा। परमेश्वर ने कहा कि यह उसकी व्यवस्था का उनके हृदयों पर लिख देने के जैसा होगा। वे उसके लोगों होंगे, और परमेश्वर उनके पापों को क्षमा करेगा। वह मसीह होगा जो उनके साथ उस नई वाचा को बाँधेगा।

21:06

परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं ने यह भी कहा कि मसीह एक भविष्यद्वक्ता होगा। एक भविष्यद्वक्ता वह व्यक्ति है जो परमेश्वर के वचनों को सुनता है और फिर लोगों पर परमेश्वर के संदेशों की घोषणा करता है। जिसे भेजने का परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी वह मसीह एक सिद्ध भविष्यद्वक्ता होगा। अर्थात् वह मसीह परमेश्वर के संदेशों को अच्छी तरह से सुनेगा, और वह लोगों को उन संदेशों को अच्छी तरह से सिखाएगा।

21:07

इस्राएली याजकों ने लोगों के लिए परमेश्वर के आगे बलिदान चढ़ाना जारी रखा। यह बलिदान लोगों के पापों के लिए उनको परमेश्वर द्वारा दंडित किए जाने के स्थान पर चढ़ाए गए थे। याजकों ने लोगों के लिए प्रार्थना भी की। परन्तु, वह मसीह सिद्ध महायाजक होगा जो परमेश्वर को देने के लिए एक सिद्ध बलि के रूप में स्वयं को चढ़ा देगा। अर्थात्, वह कभी पाप नहीं करेगा, और जब वह स्वयं को बलि होने के लिए देगा, तो संसार का कोई भी अन्य बलि आवश्यक नहीं होगा।

कैसे मसीहा सिद्ध महायाजक होगा?

वह लोगों की ओर से स्वयं को परमेश्वर को सिद्ध बलिदान के रूप में अर्पित करेगा।

21:08

लोगों के समूहों पर राजा और प्रधान शासन करते हैं, और कभी-कभी वे गलतियाँ करते हैं। राजा दाऊद ने केवल इस्राएलियों पर शासन किया, परन्तु राजा दाऊद का वंशज मसीह पूरे संसार पर शासन करेगा, और वह सदा के लिए शासन करेगा। इसके अलावा, वह हमेशा न्यायपूर्ण रीति से शासन करेगा, और सही निर्णयों को लेगा।

मसीहा सिद्ध राजा कैसे होगा?

वह पूरी दुनिया पर हमेशा के लिए राज करेगा, न्याय से शासन करेगा और सही फैसले करेगा।

21:09

परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं ने मसीह के बारे में बहुत सी बातों को कहा। उदाहरण के लिए, मलाकी ने कहा कि मसीह के आने से पहले एक अन्य भविष्यद्वक्ता आएगा। वह भविष्यद्वक्ता बहुत महत्वपूर्ण होगा। इसके अलावा, यशायाह भविष्यद्वक्ता ने लिखा कि मसीह एक कुँआरी से जन्म लेगा। और मीका भविष्यद्वक्ता ने कहा कि मसीह बैतलहम नगर में जन्म लेगा।

यशायाह ने क्या कहा कि मसीहा के जन्म के बारे में क्या खास होगा?

मसीहा एक कुंवारी से पैदा होगा।

21:10

यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा कि मसीह गलील के क्षेत्र में वास करेगा। जो लोग बहुत दुःखी हैं मसीह उनको शान्ति देगा। वह कैदियों को भी स्वतंत्र करेगा। मसीह बीमारों को और जो सुन नहीं सकते, देख नहीं सकते, बोल नहीं सकते, या चल नहीं सकते उनको भी चंगा करेगा।

21:11

यशायाह भविष्यद्वक्ता ने यह भी कहा कि लोग मसीह से नफरत करेंगे और उसे स्वीकार करने से इंकार कर देंगे। अन्य भविष्यद्वक्ताओं ने कहा कि मसीह का एक साथी उसके विरुद्ध उठेगा। जकर्याह भविष्यद्वक्ता ने कहा कि उसका यह साथी ऐसा करने के लिए दूसरे लोगों से चाँदी के तीस सिक्के लेगा। इसके अलावा, कुछ भविष्यद्वक्ताओं ने कहा कि लोग मसीह को मार डालेंगे, और यह कि वे उसके वस्त्रों के लिए जुआ खेलेंगे।

21:12

भविष्यद्वक्ताओं ने यह भी बताया कि मसीह कैसे मरेगा। यशायाह ने भविष्यद्वाणी की कि लोग मसीह पर थूकेंगे, उसका मजाक उड़ाएँगे, और उसे पीटेंगे। वे उसे छेद देंगे और वह बड़ी पीड़ा और यातना में मर जाएगा, जबकि उसने कुछ भी गलत नहीं किया होगा।

भविष्यद्वक्ताओं के अनुसार, मसीहा कैसे मरेगा?

मसीहा के साथ बदसलूकी की जाएगी और उसे छेदा जाएगा, और बड़ी पीड़ा में उसकी मृत्यु होगी।

21:13

भविष्यद्वक्ताओं ने यह भी बताया कि मसीह पाप नहीं करेगा। वह सिद्ध होगा। परन्तु वह इसलिए मरेगा परमेश्वर उसे अन्य लोगों के पापों के कारण दंडित करेगा। उसके मरने से लोग परमेश्वर के साथ मेल करने में सक्षम होंगे। इसीलिए परमेश्वर चाहता है कि मसीह मरे।

परमेश्वर की योजना में, मसीहा को क्यों मरना पड़ा?

मसीहा सिद्ध होने के कारण मर जाएगा ताकि परमेश्वर उसे लोगों के पाप के लिए दंड दे सके ताकि वे परमेश्वर के साथ शांति प्राप्त कर सकें।

21:14

भविष्यद्वक्ताओं ने यह भी बताया कि परमेश्वर मसीह को मरे हुओं में से जीवित करेगा। यह दर्शाता है कि यह सब नई वाचा को बाँधने की परमेश्वर की योजना थी, ताकि वह उन लोगों को बचा सके जिन्होंने उसके विरुद्ध पाप किया है।

मसीहा की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा परमेश्वर क्या पूरा करेगा?

परमेश्वर नई वाचा शुरू करेगा और उन लोगों को बचाएगा जिन्होंने उसके विरुद्ध पाप किया था।

21:15

परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं पर मसीह के बारे में बहुत सी बातों को प्रकट किया, परन्तु मसीह उन भविष्यद्वक्ताओं में से किसी के भी जीवनकाल में नहीं आया था। इन भविष्यद्वाणियों के दिए जाने के 400 से अधिक वर्षों के बाद, सही समय पर, परमेश्वर मसीह को इस संसार में भेजेगा।

मसीहा के बारे में आखिरी भविष्यवाणी और दुनिया में उसके आने के बीच कितना समय बीत गया?

400 से अधिक वर्ष बीत चुके थे।

22. यूहन्ना का जन्म

22:01

अतीत में, परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ताओं से बात की थी इसलिए वे लोगों से बात कर सके थे। परन्तु उस समय से लेकर फिर 400 वर्षों के बीतने तक उसने उनसे बात नहीं की। तब परमेश्वर ने जकर्याह नाम के याजक के पास एक स्वर्गदूत को भेजा। जकर्याह और उसकी पत्नी एलीशिबा परमेश्वर का आदर करते थे। वे बहुत बूढ़े हो गए थे, और उसके कोई संतान उत्पन्न नहीं हुई थी।

कितने वर्ष बीत चुके थे जब परमेश्वर ने अपने लोगों से बात की थी?

400 साल बीत चुके थे।

जकर्याह की पत्नी इलीशिबा को क्या समस्या थी?

वह बहुत बूढ़ी थी और उसके कोई संतान नहीं थी।

22:02

उस स्वर्गदूत ने जकर्याह से कहा, "तेरी पत्नी के एक पुत्र उत्पन्न होगा। तू उसका नाम यूहन्ना रखना। परमेश्वर उसे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण करेगा, और यूहन्ना लोगों को मसीह को ग्रहण करने के लिए तैयार करेगा।" जकर्याह ने जवाब दिया, "मैं और मेरी पत्नी संतान उत्पन्न करने के लिए बहुत बूढ़े हैं! मैं कैसे जानूँ कि आप मुझसे सच कह रहे हैं?"

स्वर्गदूत ने जकर्याह से अपने बेटे का नाम रखने के लिए क्या कहा?

उसे उसका नाम यूहन्ना रखना था।

स्वर्गदूत ने कहा कि यूहन्ना अपने जीवन में क्या करेगा?

यूहन्ना लोगों को मसीहा को स्वीकार करने के लिए तैयार करेगा।

जकर्याह को विश्वास क्यों नहीं हुआ कि इलीशिबा का एक बेटा होगा?

वे बच्चे पैदा करने के लिए बहुत बूढ़े थे।

22:03

उस स्वर्गदूत ने जकर्याह को जवाब दिया, "तेरे पास इस शुभ संदेश को लाने के लिए मैं परमेश्वर के द्वारा भेजा गया हूँ। क्योंकि तूने मुझ पर विश्वास नहीं किया, इसलिए बच्चे के जन्म लेने तक तू बोलने में सक्षम नहीं होगा।" तुरन्त ही, जकर्याह बोलने में असमर्थ था। तब वह स्वर्गदूत जकर्याह के पास से चला गया। इसके बाद, जकर्याह घर लौट आया और उसकी पत्नी गर्भवती हुई।

विश्वास न करने के कारण स्वर्गदूत ने जकर्याह को कैसे दण्ड दिया?

जब तक यूहन्ना का जन्म नहीं हुआ तब तक जकर्याह बोल नहीं सकता था।

22:04

जब एलीशिबा छः महीने की गर्भवती थी, तो वही स्वर्गदूत अचानक से एलीशिबा की रिश्तेदार पर प्रकट हुआ, जिसका नाम मरियम था। मरियम कुँवारी थी और विवाह होने के लिए यूसुफ नाम के पुरुष के साथ उसकी मंगनी हो चुकी थी। स्वर्गदूत ने कहा, "तू गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी। तुझे उसका नाम यीशु रखना है। वह सर्व-शक्तिमान परमेश्वर का पुत्र होगा और सदा के लिए शासन करेगा।"

जब स्वर्गदूत मरियम को दिखाई दिया तब इलीशिबा कितने समय से गर्भवती थी?

वह छह माह की गर्भवती थी।

स्वर्गदूत ने कहा कि मरियम के साथ क्या होने वाला है?

वह गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी।

स्वर्गदूत ने किसके बारे में कहा कि यीशु होने वाला था?

वह परमप्रधान परमेश्वर का पुत्र होगा।

22:05

मरियम ने जवाब दिया, "यह कैसे होगा, क्योंकि मैं तो कुँवारी हूँ?" उस स्वर्गदूत ने समझाया, "पवित्र आत्मा तुझ पर आएगा, और परमेश्वर की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी। इसलिए वह शिशु पवित्र होगा, और वह परमेश्वर का पुत्र होगा।" जो उस स्वर्गदूत ने कहा उस पर मरियम ने विश्वास किया।

यीशु का जन्म एक चमत्कार क्यों था?

मैरी कुंवारी थी।

यीशु किसका पुत्र है?

यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

22:06

यह होने के तुरन्त बाद, मरियम ने जाकर एलीशिबा से भेंट की। जैसे ही मरियम ने उसे नमस्कार किया, एलीशिबा का शिशु उसके पेट के भीतर उछला। उनके लिए परमेश्वर ने जो किया था उसके बारे में वे स्त्रियाँ एक साथ आनन्दित हुईं। एलीशिबा के साथ तीन महीने रहने के बाद, मरियम घर लौट गई।

स्वर्गदूत के चले जाने के बाद मरियम किससे मिलने गई?

वह एलिजाबेथ से मिलने गई।

22:07

इसके बाद, एलीशिबा ने अपने बालक को जन्म दिया। जकर्याह और एलीशिबा ने उस बालक का नाम यूहन्ना रखा, जैसा कि उस स्वर्गदूत ने आदेश दिया था। तब परमेश्वर ने जकर्याह को बोलने में सक्षम किया। जकर्याह ने कहा, "परमेश्वर की स्तुति हो, क्योंकि उसने अपने लोगों की सहायता करने को स्मरण रखा है! हे मेरे पुत्र, तू सर्व-शक्तिमान परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता होगा। तू लोगों को बताएगा कि वे कैसे अपने पापों के लिए क्षमा प्राप्त कर सकते हैं! "

जकर्याह ने यूहन्ना के बारे में क्या कहा?

उसने कहा कि यूहन्ना सर्वोच्च परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता होगा और लोगों को बताएगा कि वे अपने पापों के लिए क्षमा कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

23. यीशु का जन्म

23:01

यूसुफ नाम के एक धर्मी व्यक्ति के साथ मरियम की मंगनी हो चुकी थी। जब उसने सुना कि मरियम गर्भवती है तो वह जानता था कि वह उसका बच्चा नहीं है। परन्तु, वह मरियम को बदनाम नहीं करना चाहता था, इसलिए उसने उस पर कृपा करने की और उसे चुपचाप तलाक देने की सोची। परन्तु इससे पहले कि वह ऐसा करता, एक स्वर्गदूत ने उसके स्वप्न में आकर उससे बात की।

यूसुफ कैसा आदमी था?

वह एक धर्मी व्यक्ति थे।

मरियम के गर्भवती होने के बाद से यूसुफ ने उसके साथ क्या करने की योजना बनाई?

उसने चुपचाप उसे तलाक देने की योजना बनाई।

23:02

उस स्वर्गदूत ने कहा, "हे यूसुफ, मरियम को अपनी पत्नी के रूप में लेकर आने से मत डर। उसके भीतर जो बच्चा है वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह एक पुत्र को जन्म देगी। उसका नाम यीशु रखना (जिसका अर्थ है, 'यहोवा बचाता है'), क्योंकि वह लोगों को उनके पापों से बचाएगा।"

किस वजह से यूसुफ ने अपना मन बदल लिया और मरियम से शादी कर ली?

एक स्वर्गदूत ने आकर उससे स्वप्न में कहा, “तू मरियम को अपनी पत्नी बनाने से मत डर।”

यीशु नाम का अर्थ क्या है?

इसका अर्थ है 'यहोवा बचाता है।'

23:03

अत: यूसुफ ने मरियम से विवाह किया और उसे अपनी पत्नी के रूप में घर ले आया, परन्तु उसके बच्चे को जन्म देने तक वह उसके साथ नहीं सोया।

23:04

जब मरियम के जन्म देने का समय निकट था, तो उसने और यूसुफ ने बैतलहम जाने की एक लंबी यात्रा की। उनको वहाँ जाना ही था क्योंकि रोमी अधिकारी इस्राएल में रहने वाले सभी लोगों की गिनती करना चाहते थे। वे चाहते थे कि सभी लोग वहाँ जाएँ जहाँ उनके पूर्वज रहते थे। राजा दाऊद का जन्म बैतलहम में हुआ था, और वह मरियम और यूसुफ दोनों का पूर्वज था।

यूसुफ और मरियम ने बेतलेहेम की लंबी यात्रा क्यों की?

उन्हें वहाँ जाना पड़ा क्योंकि रोमन सरकार ने सभी को वहाँ जाने के लिए कहा जहाँ उनके पूर्वज गिने जाने के लिए रहते थे।

23:05

मरियम और यूसुफ बैतलहम गए, परन्तु वहाँ जानवरों को रखने वाले स्थान के अलावा उनके ठहरने के लिए कोई स्थान नहीं था। वही स्थान था जहाँ मरियम ने अपने बच्चे को जन्म दिया। उसने उसे चरनी में लिटाया क्योंकि वहाँ उसके लिए कोई बिस्तर नहीं था। उन्होंने उसका नाम यीशु रखा।

यीशु का जन्म किस प्रकार की जगह में हुआ था?

उनका जन्म ऐसे स्थान पर हुआ था जहाँ जानवर रहते थे।

23:06

उस रात, वहाँ पास ही के खेत में कुछ चरवाहे अपने भेड़ों के झुंड की रखवाली कर रहे थे। अचानक से, एक चमकदार स्वर्गदूत उन पर प्रकट हुआ, और वे डर गए। उस स्वर्गदूत ने कहा, "मत डरो, क्योंकि मेरे पास तुम्हारे लिए शुभ संदेश है। बैतलहम में मसीह, प्रभु का जन्म हुआ है!"

चरवाहों के लिए स्वर्गदूत का क्या संदेश था?

स्वर्गदूत ने उनसे कहा, “डरो मत, क्योंकि मेरे पास तुम्हारे लिए एक शुभ समाचार है। मसीहा, मास्टर, बेथलहम में पैदा हुआ है!"

23:07

जाकर उस बालक की खोज करो, और तुम उसे कपड़े में लिपटा हुआ और चरनी में लेटा हुआ पाओगे।" अचानक से, आकाश स्वर्गदूतों से भर गया। वे परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे। उन्होंने कहा, "सारी महिमा स्वर्ग में विराजमान परमेश्वर को मिले। पृथ्वी पर उन लोगों में शान्ति हो जिनकी वह चिन्ता करता है!"

23:08

तब स्वर्गदूत चले गए। वे चरवाहे भी अपनी भेड़ों को छोड़ कर बालक को देखने गए। शीघ्र ही वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ यीशु था और उन्होंने उसे चरनी में लेटा हुआ पाया, जैसा कि उस स्वर्गदूत ने कहा था। वे बहुत उत्साहित थे। तब वे चरवाहे वापिस वहाँ लौट गए जहाँ उनकी भेड़ें थीं। उन्होंने जो कुछ भी सुना और देखा उस सब के लिए वे परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे।

जब चरवाहों ने बच्चे को पाया तो वे उसे कैसे जानेंगे?

वह एक खिला कुंड में पड़ा होगा।

बच्चे को देखने के बाद चरवाहों ने क्या किया?

उन्होंने जो कुछ सुना और देखा था, उसके लिए वे परमेश्वर की स्तुति करते हुए खेतों में लौट गए।

23:09

पूर्व में दूर एक देश में कुछ पुरुष थे। उन्होंने सितारों का अध्ययन किया था और वे बहुत बुद्धिमान थे। उन्होंने एक असामान्य सितारे को आकाश में देखा। उन्होंने कहा कि इसका अर्थ है कि यहूदियों के एक नए राजा का जन्म हुआ है। इसलिए उन्होंने उस बालक को देखने के लिए अपने देश से यात्रा करने का निर्णय किया। एक लंबी यात्रा के बाद, वे बैतलहम आए और उस घर को पाया जहाँ यीशु और उसके माता-पिता ठहरे हुए थे।

बाद में, पूर्व के ज्योतिषियों को कैसे पता चला कि यहूदियों का एक नया राजा पैदा हो गया है?

उन्होंने आकाश में एक असामान्य तारा देखा।

23:10

जब इन पुरुषों ने यीशु को अपनी माँ के साथ देखा तो उन्होंने घुटने टेक कर उसकी आराधना की। उन्होंने यीशु को कीमती उपहार दिए। फिर वे घर वापिस लौट गए।

यीशु को देखकर ज्योतिषियों ने क्या किया?

उन्होंने झुककर यीशु को दण्डवत् किया, और उसे बहुमूल्य वस्तुएँ दीं।

24. यूहन्ना यीशु को बपतिस्मा देता है

24:01

एलीशिबा और जकर्याह का पुत्र यूहन्ना, बड़ा होकर एक भविष्यद्वक्ता बन गया। वह जंगल में रहा करता था, और जंगली शहद और टिड्डियाँ खाया करता था, और ऊँट के रोम से बने कपड़े पहना करता था।

जॉन जब बड़ा हुआ तो कहाँ रहता था?

वह जंगल में रहता था।

24:02

बहुत से लोग यूहन्ना की बातें सुनने के लिए जंगल में निकल आए। उसने यह कह कर उनको प्रचार किया, "पश्चाताप करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है!"

जॉन ने लोगों को क्या संदेश दिया?

उसने कहा, “मन फिराओ, क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट है!”

24:03

जब लोगों ने यूहन्ना के संदेश को सुना, तो उनमें से बहुतों ने अपने पापों से पश्चाताप किया, और यूहन्ना ने उनको बपतिस्मा दिया। यूहन्ना को देखने लिए बहुत से धार्मिक अगुवे भी आए, परन्तु उन्होंने अपने पापों का पश्चाताप या अंगीकार नहीं किया।

यूहन्ना ने उन लोगों के साथ क्या किया जिन्होंने अपने पापों से मन फिराया?

उसने उन्हें बपतिस्मा दिया।

24:04

यूहन्ना ने धार्मिक अगुवों से कहा, "हे जहरीले साँपों! पश्चाताप करो और अपने व्यवहार को बदलो। परमेश्वर हर उस पेड़ को काट डालेगा जो अच्छा फल नहीं लाता, और वह उनको आग में झोंक देगा।" जो भविष्यद्वक्ताओं ने कहा था यूहन्ना ने उसे पूरा किया, "देख, शीघ्र ही मैं तेरे आगे अपने संदेशवाहक को भेजूँगा जो तेरे लिए मार्ग को तैयार करेगा।"

यूहन्ना ने किस समूह के लोगों की तुलना ज़हरीले साँपों से की?

उसने इस तरह से कई धार्मिक नेताओं के बारे में बात की जिन्होंने पश्चाताप करने से इनकार कर दिया।

24:05

कुछ धार्मिक अगुवों ने यूहन्ना से पूछा कि क्या वह मसीह है। यूहन्ना ने जवाब दिया, "मैं मसीह नहीं हूँ, परन्तु वह मेरे बाद आ रहा है। वह इतना महान है कि मैं उसके जूतों के फीते खोलने के भी योग्य नहीं हूँ।"

यूहन्ना का उत्तर क्या था जब यहूदियों ने उससे पूछा कि क्या वह मसीह है?

उन्होंने कहा कि वह मसीहा नहीं हैं।

24:06

अगले दिन, यीशु बपतिस्मा लेने के लिए यूहन्ना के पास आया। जब यूहन्ना ने उसे देखा, तो उसने कहा, "देखो! परमेश्वर का मेमना जो संसार के पापों को उठा कर ले जाएगा।"

जब यूहन्ना ने यीशु को बपतिस्मा लेने के लिए आते देखा तो उसने उसके लिए कौन-सी उपाधि का प्रयोग किया?

उसने उसे परमेश्वर का मेम्ना कहा जो जगत के पाप को उठा ले जाएगा।

24:07

यूहन्ना ने यीशु से कहा, "मैं तुझे बपतिस्मा देने के योग्य नहीं हूँ। बजाए इसके आवश्यक है कि तू मुझे बपतिस्मा दे।" परन्तु यीशु ने कहा, "तुझे मुझे बपतिस्मा देना चाहिए, क्योंकि करने के लिए सही काम यही है।" अतः यूहन्ना ने उसे बपतिस्मा दिया, जबकि यीशु ने कभी पाप नहीं किया था।

यूहन्ना के बपतिस्मा लेने से पहले यीशु को अपने पापों से पश्चाताप करने की ज़रूरत क्यों नहीं थी?

यीशु को पश्चाताप करने की ज़रूरत नहीं थी क्योंकि उसने कभी पाप नहीं किया था।

यीशु ने क्यों कहा कि यूहन्ना उसे बपतिस्मा दे?

उसने कहा कि यूहन्ना को उसे बपतिस्मा देना चाहिए क्योंकि यह सही काम था।

24:08

बपतिस्मा दिए जाने के बाद जब यीशु पानी से निकल कर बाहर आया, तो परमेश्वर का आत्मा कबूतर के रूप में प्रकट हुआ और नीचे आकर उस पर ठहर गया। उसी समय, परमेश्वर ने स्वर्ग से बात की। उसने कहा, "तू मेरा पुत्र है। मैं तुझसे प्रेम करता हूँ, और मैं तुझसे बहुत प्रसन्न हूँ।"

बपतिस्मा लेने के बाद यीशु के पास कौन आया?

परमेश्वर का आत्मा कबूतर के रूप में प्रकट हुआ और यीशु पर ठहर गया।

यीशु के बपतिस्मे के बाद परमेश्वर ने क्या कहा?

उसने कहा, “यह मेरा पुत्र है। मैं उससे प्यार करता हूं और मैं उससे बहुत खुश हूं।"

24:09

परमेश्वर ने यूहन्ना से कहा था, "पवित्र आत्मा नीचे आकर किसी पर ठहर जाएगा जिसे तू बपतिस्मा देगा।" वही परमेश्वर का पुत्र है परमेश्वर एक ही है। परन्तु जब यूहन्ना ने यीशु को बपतिस्मा दिया, तो उसने परमेश्वर पिता को बातें करते सुना, पुत्र परमेश्वर को देखा, जो कि यीशु है, और उसने पवित्र आत्मा को देखा।

परमेश्वर ने किसके लिए कहा था कि वह व्यक्ति होगा जिस पर पवित्र आत्मा उतरेगा और विश्राम करेगा?

वह व्यक्ति परमेश्वर का पुत्र होगा।

कितने परमेश्वर हैं?

परमेश्वर केवल एक है।

25. शैतान यीशु की परीक्षा करता है

25:01

यीशु का बपतिस्मा होने के तुरन्त बाद ही, पवित्र आत्मा उसे जंगल में ले गया। यीशु वहाँ चालीस दिन और चालीस रात था। उस समय उसने उपवास किया, और शैतान ने यीशु के पास आकर पाप करवाने के लिए उसकी परीक्षा की।

बपतिस्मा लेने के बाद यीशु कहाँ गया?

यीशु जंगल में चला गया।

यीशु को जंगल में कौन ले गया?

पवित्र आत्मा ने उसकी अगुवाई की।

यीशु ने जंगल में क्या किया?

उसने वहाँ 40 दिन और 40 रात उपवास किया।

25:02

पहले, शैतान ने यीशु से कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो इन पत्थरों को रोटी बना दे ताकि तू खा सके!"

शैतान ने यीशु को चट्टानों से क्या करने के लिए प्रलोभित किया?

उसने यीशु से कहा कि वह चट्टानों को रोटी में बदल दे ताकि वह खा सके।

25:03

परन्तु यीशु ने शैतान से कहा, "परमेश्वर के वचन में यह लिखा है, 'जीवित रहने के लिए मनुष्य को केवल रोटी की आवश्यकता नहीं है, परन्तु उनको हर उस बात की आवश्यकता है जो परमेश्वर उनसे कहता है!'"

यीशु ने क्या कहा कि लोगों को रोटी के बराबर ही चाहिए?

लोगों को वह सब कुछ चाहिए जो परमेश्वर उन्हें बताता है।

25:04

तब शैतान यीशु के मंदिर के सबसे ऊँचे सिरे पर ले गया। उसने उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो यहाँ से नीचे कूद जा, क्योंकि लिखा है, 'परमेश्वर तुझे उठाने के लिए अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा कि तेरे पाँवों पर पत्थर से ठेस न लगे।'"

शैतान ने यीशु को आगे क्या करने के लिए प्रलोभित किया?

उसने यीशु से कहा कि वह खुद को मंदिर से नीचे फेंक दे।

शैतान ने किसने कहा कि यीशु की रक्षा करेगा?

परमेश्वर अपने स्वर्गदूतों को यीशु की रक्षा करने की आज्ञा देगा।

25:05

परन्तु यीशु ने वह नहीं किया जो शैतान ने उससे करने के लिए कहा था। इसके बजाए, उसने कहा, "परमेश्वर हर एक से कहता है, 'तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न करना।'"

शैतान के जवाब में यीशु ने क्या कहा?

यीशु ने कहा कि परमेश्वर का वचन कहता है कि अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा मत लेना।

25:06

फिर शैतान ने उसे संसार के सारे राज्य दिखाए। उसने उसे दिखाया कि वे कितने शक्तिशाली थे, और वे कितने सम्पन्न थे। उसने यीशु से कहा, "मैं तुझे यह सब दूँगा यदि तू घुटने टेक कर मेरी उपासना करे।"

फिर शैतान ने यीशु को क्या देने की पेशकश की?

शैतान ने उसे दुनिया के सभी राज्य और उनकी महिमा देने की पेशकश की।

इन राज्यों को प्राप्त करने के लिए शैतान ने यीशु से क्या करने को कहा?

शैतान चाहता था कि यीशु झुके और उसकी आराधना करे।

25:07

यीशु ने जवाब दिया, "हे शैतान, मेरे पास से चला जा! परमेश्वर के वचन में वह लोगों को आदेश देता है, 'केवल अपने प्रभु परमेश्वर की आराधना करो। परमेश्वर के रूप में केवल उसी का आदर करो।'"

क्या यीशु शैतान की पूजा करने के लिए सहमत हुए?

नहीं, वह केवल परमेश्वर की आराधना करेगा और केवल परमेश्वर के रूप में उसका आदर करेगा।

25:08

यीशु ने शैतान की परीक्षा से हार नहीं मानी, इसलिए शैतान उसके पास से चला गया। तब स्वर्गदूत आकर यीशु की सेवाटहल करने लगे।

क्या शैतान यीशु को पाप कराने में समर्थ था?

नहीं, वह नहीं था।

शैतान के यीशु के चले जाने के बाद क्या हुआ?

स्वर्गदूत आए और यीशु की देखभाल की।

26. यीशु ने अपनी सेवकाई आरम्भ की

26:01

शैतान की परीक्षाओं का इंकार करने के बाद, यीशु वापिस गलील के क्षेत्र में आया। यही वह स्थान है जहाँ वह रहता था। पवित्र आत्मा उसे बहुत सामर्थ दे रहा था, और यीशु एक स्थान से दूसरे स्थान को गया और लोगों को शिक्षा दी। सभी ने उसके बारे में अच्छी बातें कहीं।

शैतान के प्रलोभनों पर जय पाने के बाद यीशु कहाँ गया?

यीशु गलील के उस क्षेत्र में गया जहाँ वह रहता था।

26:02

यीशु नासरत नगर में गया। यह वह गाँव है जहाँ वह अपने बचपन में रहा करता था। सब्त के दिन, वह आराधना करने के स्थान पर गया। अगुवों ने उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता के संदेशों की एक पुस्तक दी। वे चाहते थे कि वह उसमें से पढ़े। अतः यीशु ने उस पुस्तक को खोल कर उसके एक भाग को लोगों के लिए पढ़ा।

उस शहर का नाम क्या था जहाँ यीशु एक बच्चे के रूप में रहते थे?

वह नासरत में रहता था।

यीशु सब्त के दिन कहाँ गया था?

वह पूजा के स्थान पर गया।

आराधना के स्थान पर लोगों ने यीशु को यशायाह का पुस्तक क्यों दिया?

वे चाहते थे कि यीशु इससे पढ़ें।

26:03

यीशु ने पढ़ा, "परमेश्वर ने मुझे अपना आत्मा दिया है ताकि मैं कंगालों में सुसमाचार प्रचार कर सकूँ। उसने मुझे इसलिए भेजा है कि कैदियों को स्वतंत्र करूँ, अंधों को फिर से दृष्टि प्रदान करूँ, और उनको छुटकारा दूँ जिनको दूसरे लोग कुचल रहे हैं। यह वह समय है जब परमेश्वर हम पर कृपालु होगा और हमारी सहायता करेगा।"

26:04

फिर यीशु बैठ गया। सब लोग उसे बड़े ध्यान से देख रहे थे। वे जानते थे कि पवित्रशास्त्र का जो भाग उसने अभी पढ़ा था वह मसीह के बारे में था। यीशु ने कहा, "जो बातें मैंने अभी तुम्हारे लिए पढ़ी हैं, वे इस समय घटित हो रही हैं।" सब लोग चकित थे। उन्होंने कहा, "क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं है?"

यीशु ने पवित्रशास्त्र का जो अंश पढ़ा वह किस व्यक्ति के बारे में था?

यह मसीहा के बारे में था।

यीशु ने उस शास्त्र के बारे में क्या कहा जो उसने अभी-अभी पढ़ा था?

उन्होंने कहा कि ये चीजें तब हो रही थीं।

यीशु के गृहनगर के लोगों ने उसकी बातों पर कैसी प्रतिक्रिया दी?

वे चकित होकर कहने लगे, “क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं है?”

26:05

तब यीशु ने कहा, "यह सच है कि लोग किसी ऐसे भविष्यद्वक्ता को कभी स्वीकार नहीं करते जो उनके नगर में पला-बढ़ा हो। एलिय्याह भविष्यद्वक्ता के समय में, इस्राएल में बहुत सी विधवाएँ थीं। परन्तु जब साढ़े तीन वर्ष तक बारिश नहीं हुई तो परमेश्वर ने एलिय्याह को इस्राएल में किसी विधवा की सहायता करने के लिए नहीं भेजा। इसके बजाए, उसने एलिय्याह को किसी अन्य देश की विधवा के पास भेजा।"

जब एलिय्याह एक भविष्यद्वक्ता था, तब यीशु ने परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं द्वारा अन्य राष्ट्रों के लोगों की मदद करने का क्या उदाहरण दिया?

सूखे के दौरान एक विधवा की मदद करने के लिए परमेश्वर ने एलिय्याह को भेजा।

26:06

यीशु ने कहना जारी रखा, "और एलीशा भविष्यद्वक्ता के समय में, इस्राएल में बहुत से लोग चर्म रोग से पीड़ित थे। परन्तु एलीशा ने उनमें से किसी को भी चंगा नहीं किया। उसने केवल इस्राएल के शत्रुओं के सेनापति नामान को चंगा किया।" परन्तु जो लोग यीशु को सुन रहे थे वे यहूदी थे। इसलिए जब उन्होंने उसे यह कहते हुए सुना तो वे उस पर क्रोधित हुए।

एलीशा के भविष्यद्वक्ता होने पर यीशु ने परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं द्वारा अन्य राष्ट्रों के लोगों की मदद करने का क्या उदाहरण दिया?

यीशु ने कहा कि एलीशा ने इस्राएल के शत्रुओं के सेनापति नामान को चंगा किया।

26:07

नासरत के लोगों ने यीशु को पकड़ लिया और उसे आराधना के स्थान से घसीट कर बाहर ले गए। वे उसे मार डालने के लिए नीचे फेंकने को एक चट्टान के सिरे पर ले गए। परन्तु यीशु भीड़ में से निकल गया और नासरत नगर को छोड़ कर चला गया।

जब यीशु ने उन्हें ये कहानियाँ सुनाईं तो लोगों ने कैसी प्रतिक्रिया दी?

उन्होंने यीशु को पकड़ लिया और उसे मार डालने के लिए चट्टान से नीचे फेंकने की कोशिश की।

यीशु भीड़ से कैसे भागे?

यीशु भीड़ में से होकर चला गया और नगर से चला गया।

26:08

फिर यीशु सारे गलील के क्षेत्र में गया, और बड़ी भीड़ उसके पास आई। वे ऐसे बहुत से लोगों को लेकर आए जो बीमार और विकलांग थे। उनमें से कुछ देख, चल, सुन या बोल नहीं सकते थे, और यीशु ने उनको चंगा किया।

गलील की भीड़ ने यीशु के प्रति कैसी प्रतिक्रिया दिखाई?

वे बहुत से लोगों को जो बीमार या अपाहिज थे, उसके पास लाए ताकि वह उन्हें चंगा कर सके।

26:09

इसके अलावा, बहुत से ऐसे लोग यीशु के पास लाए गए जिनमें दुष्टात्माएँ थीं। यीशु ने दुष्टात्माओं को उनमें से निकल जाने का आदेश दिया। वे दुष्टात्माएँ अक्सर चिल्लाईं, "तू परमेश्वर का पुत्र है!" भीड़ के लोग चकित थे, और उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की।

जब दुष्टात्माओं ने यीशु को मनुष्यों में से निकलने की आज्ञा दी, तो उन्होंने कौन माना?

उन्होंने कहा कि यीशु परमेश्वर के पुत्र थे।

26:10

फिर यीशु ने बारह पुरुषों को चुना जिनको उसने अपने प्रेरित कहा। उन प्रेरितों ने उसके साथ यात्राएँ की और उससे शिक्षा प्राप्त की।

यीशु ने अपने प्रेरितों के लिए कितने लोगों को चुना?

उसने 12 आदमियों को अपना प्रेरित चुना।

27. दयालु सामरी की कहानी

27:01

एक दिन, यहूदी व्यवस्था का एक विशेषज्ञ यीशु के पास आया। वह सब को यह दिखाना चाहता था कि यीशु गलत रीति से शिक्षा दे रहा था। इसलिए उसने कहा, "हे गुरु, अनन्त जीवन पाने के लिए मैं क्या करूँ?" यीशु ने जवाब दिया, "परमेश्वर की व्यवस्था में क्या लिखा है?"

यहूदी व्यवस्था के विशेषज्ञ ने यीशु से क्या प्रश्न किया?

उसने यीशु से पूछा, “हे गुरु, अनन्त जीवन का वारिस होने के लिये मैं क्या करूं?”

जवाब में यीशु ने विशेषज्ञ से क्या सवाल पूछा?

उसने उससे पूछा, “परमेश्वर की व्यवस्था में क्या लिखा है?”

27:02

उस व्यक्ति ने कहा, "वह कहती है कि अपने परमेश्वर से अपने सारे मन, सारे प्राण, सारी सामर्थ, और सारी बुद्धि से प्रेम रख। और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।" यीशु ने जवाब दिया, "तू एकदम सही है! यदि तू ऐसा करे, तो तुझे अनन्त जीवन प्राप्त होगा।"

परमेश्वर का नियम किसे कहता है कि हमें प्रेम करना चाहिए?

हमें अपने परमेश्वर यहोवा और अपने पड़ोसी से प्रेम करना चाहिए।

27:03

परन्तु वह व्यवस्था का विशेषज्ञ लोगों को दिखाना चाहता था कि उसका जीवन जीने का तरीका सही था। इसलिए उसने यीशु से पूछा, "ठीक है, तो मेरा पड़ोसी कौन है?"

यहूदी व्यवस्था के विशेषज्ञ ने यह क्यों पूछा कि उसका पड़ोसी कौन है?

वह यह साबित करना चाहता था कि उसके जीने का तरीका सही था।

27:04

यीशु ने उस व्यवस्था के विशेषज्ञ को एक कहानी बताने के द्वारा जवाब दिया। "एक यहूदी व्यक्ति था जो एक सड़क से होकर यरूशलेम से यरीहो की यात्रा कर रहा था।"

27:05

"परन्तु कुछ डाकुओं ने उसे देखा और उस पर हमला कर दिया। उन्होंने उसका सब कुछ ले लिया और उसे लगभग मरने तक मारा-पीटा। तब वे चले गए।"

यीशु की कहानी में, यहूदी व्यक्ति के साथ क्या हुआ जब वह यात्रा कर रहा था?

लुटेरों ने उस पर हमला किया, उसका सब कुछ ले लिया और उसे तब तक पीटा जब तक वह लगभग मर नहीं गया।

27:06

"उसके तुरन्त बाद, एक यहूदी याजक उसी सड़क से होकर गुजरा। उस याजक ने उस व्यक्ति को सड़क पर पड़ा हुआ देखा। जब उसने उसे देखा तो वह सड़क की दूसरी ओर जाकर आगे बढ़ गया। उसने उस व्यक्ति को पूरी तरह से अनदेखा कर दिया।"

घायल आदमी को देखने वाला पहला व्यक्ति कौन था?

पहला व्यक्ति एक यहूदी याजक था।

घायल आदमी को देखकर याजक ने क्या किया?

उसने उसकी उपेक्षा की और सड़क के दूसरी ओर से गुजर गया।

27:07

"इसके बाद कुछ ही समय बीतने पर, एक लेवी उस सड़क पर आया। (लेवी यहूदियों का एक गोत्र था जिन्होंने मंदिर में याजकों की सहायता की थी।) वह लेवी भी सड़क की दूसरी ओर से निकल गया। उसने भी उस व्यक्ति को अनदेखा कर दिया।"

घायल आदमी को देखने और पास से गुजरने वाला दूसरा व्यक्ति कौन था?

इसके बाद एक लेवी आया।

घायल आदमी को देखकर लेवी ने क्या किया?

उसने उसकी उपेक्षा की और सड़क के दूसरी ओर से गुजर गया।

27:08

"अगला जन जो उस सड़क पर आया वह सामरिया का एक पुरुष था। (सामरी और यहूदी एक दूसरे से नफरत करते थे।) उस सामरी ने सड़क पर उस व्यक्ति को देखा। उसने देखा कि वह यहूदी था, परन्तु फिर भी उसने उस पर बड़ा तरस खाया। अतः वह उसके पास गया और उसके घावों पर पट्टियाँ बाँधीं।"

घायल आदमी को देखने वाला तीसरा व्यक्ति कौन था?

वह एक सामरी था।

यहूदियों और सामरियों के बीच क्या संबंध था?

वे एक दूसरे से नफरत करते थे।

27:09

"फिर उस सामरी ने उस व्यक्ति को अपने गधे पर डाला और उसे उस सड़क से एक सराय में ले गया। जहाँ पर उसने उसकी देखभाल करना जारी रखा।"

सामरी ने घायल आदमी की मदद कैसे की?

वह उसे अपने गधे पर बिठाकर सड़क के किनारे की एक सराय में ले गया, और उसकी सेवा टहल की।

27:10

अगले दिन, उस सामरी को अपनी यात्रा को जारी रखने की आवश्यकता थी। उसने उस सराय के प्रभारी व्यक्ति को कुछ धन दिया। उसने उससे कहा, "इस व्यक्ति की देखभाल करना। यदि इस धन के अलावा तेरा कुछ और धन खर्च हो तो वापिस आने पर मैं तेरे उन खर्चो का भुगतान कर दूँगा।"

सराय के अधिकारी से सामरी ने क्या कहा?

उसने उससे कहा कि वह उस आदमी की देखभाल करे, और जब वह लौटेगा तो वह उसे उन खर्चों का भुगतान कर देगा।

27:11

फिर यीशु ने उस व्यवस्था के विशेषज्ञ से पूछा, "तुम क्या सोचते हो? इन तीन लोगों में से कौन उस व्यक्ति का पड़ोसी है जिसे लूटा और पीटा गया था?" उसने जवाब दिया, "वही जो उस पर कृपालु था।" यीशु ने उससे कहा, "तू जा और ऐसा ही कर।"

लूटे गए और पीटे गए व्यक्ति के लिए तीन में से किस व्यक्ति ने पड़ोसी की तरह व्यवहार किया?

वह सामरी जो उस पर दया करता था, उसका पड़ोसी था।

28. धनी जवान शासक

28:01

एक दिन, एक धनी जवान शासक ने यीशु के पास आकर उससे पूछा, "हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?" यीशु ने उससे कहा, "तू मुझे 'उत्तम' क्यों कहता है? केवल एक ही उत्तम है और वह परमेश्वर है। परन्तु यदि तू अनन्त जीवन पाना चाहता है तो परमेश्वर की व्यवस्था का पालन कर।"

अमीर युवा शासक ने यीशु से क्या पूछा?

He asked Jesus what he must do to have eternal life.

अनन्त जीवन पाने के लिए यीशु ने युवक से क्या करने को कहा?

उसने उससे कहा कि वह परमेश्वर के नियमों का पालन करे।

28:02

"मुझे कौन कौन सी आज्ञाओं का पालन करने की आवश्यकता है?" उसने पूछा। यीशु ने जवाब दिया, "हत्या न करना। व्यभिचार न करना। चोरी न करना। झूठ मत बोलना। अपने पिता और माता का आदर करना, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना।"

28:03

परन्तु उस जवान पुरुष ने कहा, "मैं अपने बालकपन से ही इन सब आज्ञाओं का पालन करता आया हूँ। मुझे सदा के लिए जीवित रहने को अब भी क्या करने की आवश्यकता है?" यीशु ने उस पर दृष्टि की और उससे प्रेम किया।

यीशु ने जिन नियमों की सूची दी उनके बारे में युवा शासक ने क्या कहा?

उसने कहा कि वह बचपन से ही उन कानूनों का पालन करता आया है।

28:04

यीशु ने जवाब दिया, "यदि तू सिद्ध होना चाहता है तो जाकर अपना सब कुछ बेच दे और वह धन गरीबों में बाँट दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा। तब आकर मेरे पीछे हो ले।"

यीशु ने युवक से और क्या करने को कहा?

यीशु ने उससे कहा कि वह अपना सब कुछ बेच दे और पैसे गरीबों को दे दे, और फिर यीशु के पीछे हो ले।

यदि वह ऐसा करेगा तो यीशु ने अमीर युवा शासक को किस इनाम का वादा किया?

उसके पास स्वर्ग में खजाना होगा।

28:05

जो यीशु ने कहा जब उस जवान पुरुष ने सुना तो वह बहुत उदास हो गया, क्योंकि वह बहुत धनी था और उसने अपनी सारी सम्पत्ति को देना नहीं चाहा था। वह मुड़ कर यीशु के पास से चला गया।

युवा शासक उदास होकर यीशु के पास से क्यों चला गया?

वह बहुत धनवान था और अपने पास जो कुछ भी था, उसे देना नहीं चाहता था।

28:06

तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, "परमेश्वर के राज्य में धनी लोगों का प्रवेश करना अत्यन्त कठिन है! हाँ, एक धनी पुरुष के परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की तुलना में किसी ऊँट का सूई के नाके में से होकर निकल जाना आसान है।"

एक धनी व्यक्ति के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है?

परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।

28:07

जो यीशु ने कहा जब चेलों ने सुना तो वे चकित थे। उन्होंने कहा, "यदि यह ऐसा है तो परमेश्वर किसे बचाएगा?"

28:08

यीशु ने चेलों पर दृष्टि की और कहा, "लोगों के लिए स्वयं का उद्धार करना असम्भव है। परन्तु परमेश्वर के लिए कुछ भी करना असम्भव नहीं है।"

क्या एक अमीर आदमी का उद्धार संभव है?

हाँ, परमेश्वर के लिए सब कुछ संभव है।

28:09

पतरस ने यीशु से कहा, "हम चेले अपना सब कुछ छोड़ कर तेरे पीछे हो लिए हैं। तो हमारा प्रतिफल क्या होगा?"

यीशु के पीछे चलने के लिए चेलों ने क्या छोड़ा था?

वे सब कुछ छोड़ चुके थे।

28:10

यीशु ने जवाब दिया, "हर एक जन जिसने मेरे कारण घर, भाई, बहन, पिता, माता, बच्चे, या सम्पत्ति को छोड़ा है, वह उससे 100 गुना अधिक प्राप्त करेगा और अनन्त जीवन को भी पाएगा। परन्तु बहुत से जो पहले हैं वे पिछले होंगे, और बहुत से जो पिछले हैं वे पहले होंगे।"

यीशु ने कहा कि उनका प्रतिफल क्या होगा?

वे अगले संसार में 100 गुना अधिक प्राप्त करेंगे, और अनन्त जीवन भी।

यह पुरस्कार और कौन प्राप्त कर सकता है?

हर कोई जो घर, भाई, बहन, पिता, माता, बच्चों या संपत्ति को यीशु के नाम के लिए छोड़ देता है।

29. निर्दयी दास की कहानी

29:01

एक दिन, पतरस ने यीशु से पूछा, "हे स्वामी, मुझे अपने भाई को कितनी बार क्षमा करना चाहिए जब वह मेरे विरुद्ध पाप करता है? क्या सात बार तक?" यीशु ने कहा, "सात बार नहीं, परन्तु सात के सत्तर बार!" इसके द्वारा, यीशु का मतलब है कि हमें हमेशा क्षमा करना चाहिए। तब यीशु ने यह कहानी बताई।

पतरस ने यीशु से क्या प्रश्न किया?

पतरस ने यीशु से पूछा, “जब मेरा भाई मेरे विरुद्ध अपराध करे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूँ?”

पतरस ने कितनी बार सुझाव दिया कि उसे अपने भाई को क्षमा कर देना चाहिए?

उसने सुझाव दिया कि उसे उसे सात बार क्षमा कर देना चाहिए।

यीशु ने कितनी बार कहा कि उसे अपने भाई को क्षमा कर देना चाहिए?

यीशु ने कहा कि उसे उसे 70 गुना सात माफ करना चाहिए।

जब यीशु ने कहा, 70 गुना सात तो उसका क्या मतलब था?

उनका मतलब था कि हमें हमेशा माफ कर देना चाहिए।

29:02

यीशु ने कहा, "परमेश्वर का राज्य एक राजा के समान है जो अपने दास से लेखा लेना चाहता था। उसकाएक दास वर्षों से 2,00,000 रुपये के भुगतान के लिए एक बड़े कर्ज का कर्जदार था।"

29:03

परन्तु वह दास अपने कर्ज को चुका नहीं पाया, इसलिए राजा ने कहा, "इसका कर्ज चुकाने के लिए इस पुरुष को और इसके परिवार को दासों के रूप में बेच दो।"

क्या नौकर राजा को अपना भारी कर्ज चुकाने में सक्षम था?

नहीं, वह नहीं था।

राजा ने नौकर को भारी कर्ज से दंडित करने का फैसला कैसे किया?

राजा ने आदेश दिया कि उस व्यक्ति और उसके परिवार को दास के रूप में बेच दिया जाए।

29:04

"उस दास ने राजा के सामने अपने घुटनों पर गिर कर कहा, 'कृपया मेरे साथ धीरज धर, और मैं अपने कर्ज की पूरी रकम का भुगतान कर दूँगा।' राजा ने दास पर दया की, इसलिए उसने उसके सारे कर्ज को क्षमा कर दिया और उसे जाने दिया।"

राजा ने क्या किया जब नौकर ने उससे धैर्य रखने की विनती की?

राजा को नौकर पर दया आ गई और उसने उसका कर्ज माफ कर दिया।

29:05

"परन्तु जब वह दास राजा के पास से बाहर गया, तो उसे उसका एक साथी दास मिला जो उसके चार महीनों के भुगतान का कर्जदार था। उस दास ने अपने साथी दास को पकड़ लिया और कहा, 'जो तेरे ऊपर मेरा कर्ज है मुझे उसका भुगतान कर!"

नौकर ने अपने साथी नौकर के साथ क्या किया, जिस पर उसका एक छोटा सा कर्ज़ था?

उसने नौकर को पकड़ लिया और मांग की कि वह उसके द्वारा दिए गए पैसे का भुगतान करे।

29:06

"उस साथी दास ने घुटनों पर गिर कर कहा, 'कृपया मेरे साथ धीरज धर, और मैं अपने कर्ज की पूरी रकम का भुगतान कर दूँगा।' परन्तु इसके बजाए, उस दास ने अपने साथी दास को बंदीगृह में डाल दिया जब तक कि वह उस कर्ज का भुगतान न कर दे।"

नौकर ने क्या किया जब उसका साथी नौकर उसके घुटनों पर गिर गया और उसे धैर्य रखने के लिए कहा?

उसने अपने साथी नौकर को जेल में डाल दिया।

29:07

"जो कुछ हुआ था उसे कुछ अन्य दासों ने देखा और वे बहुत परेशान हुए। वे राजा के पास गए और उसे सब कुछ बताया।"

जब उसने अपने साथी नौकर को जेल में डाल दिया तो दूसरे नौकरों ने क्या किया?

वे बहुत परेशान हुए और राजा को इसके बारे में बताया।

29:08

"राजा ने उस दास को बुला कर कहा, 'हे दुष्ट दास! मैंने तेरे कर्ज को इसलिए क्षमा किया था क्योंकि तूने मुझसे विनती की थी। तुझे भी वैसा ही करना चाहिए था।' राजा इतना क्रोधित था कि उसने उस दुष्ट दास को बंदीगृह में डाल दिया जब तक कि वह अपने सारे कर्ज का वापिस भुगतान न कर दे।"

जिस सेवक ने अपने संगी सेवक को क्षमा नहीं किया उसे राजा ने किस प्रकार दण्ड दिया?

उसने उसे तब तक जेल में डाल दिया जब तक कि वह अपना सारा कर्ज वापस नहीं कर देता।

29:09

तब यीशु ने कहा, "मेरा स्वर्ग में विराजमान पिता तुम में से हर एक के साथ यही करेगा यदि तुम अपने भाई को अपने हृदय से क्षमा नहीं करते।"

यदि हम दूसरों को अपने हृदय से क्षमा नहीं करते हैं तो क्या परमेश्वर हमें क्षमा करेंगे?

नहीं, वह नहीं करेगा।

30. यीशु का पाँच हजार लोगों को भोजन खिलाना

30:01

यीशु ने अपने प्रेरितों को प्रचार करने और लोगों को शिक्षा देने के लिए बहुत से अलग-अलग गाँवों में भेजा। जब वे वहाँ लौटे जहाँ यीशु था तो उन्होंने उसे बताया कि उन्होंने क्या किया था। तब यीशु ने उनको झील के दूसरी तरफ उसके साथ एक शान्त स्थान पर जाकर कुछ समय आराम करने के लिए आमंत्रित किया। अतः वे एक नाव पर चढ़ गए और झील के दूसरी तरफ चले गए।

यीशु ने अपने प्रेरितों को गाँवों में क्या करने के लिए भेजा?

उसने उन्हें प्रचार करने और सिखाने के लिए भेजा।

यीशु अपने प्रेरितों को झील के उस पार क्यों ले गया?

उसने उन्हें थोड़ी देर आराम करने के लिए एक शांत जगह पर आमंत्रित किया।

30:02

परन्तु वहाँ बहुत से ऐसे लोग थे जिन्होंने यीशु और चेलों को नाव में जाते हुए देखा था। ये लोग उनसे आगे झील के दूसरी तरफ जाने के लिए झील के किनारे-किनारे पर भागे। अतः जब यीशु और चेले पहुँचे तो लोगों का एक बड़ा समूह उनकी प्रतीक्षा करता हुआ वहाँ पहले से था।

क्या यीशु और उसके प्रेरित अकेले रहने और आराम करने में समर्थ थे?

नहीं, बहुत से लोग उनके आगे दूसरी ओर भागे।

30:03

उस भीड़ में स्त्रियों और बच्चों की गिनती के बिना 5,000 से अधिक पुरुष थे। यीशु ने उन लोगों पर बड़ा तरस खाया। यीशु के लिए वे लोग बिना चरवाहे की भेड़ों के समान थे। इसलिए उसने उनको शिक्षा दी और उनके बीच में जो लोग बीमार थे उनको चंगा किया।

उस भीड़ के प्रति जो उनका इंतज़ार कर रही थी यीशु का रवैया क्या था?

उन्हें उन पर बड़ी दया आई।

यीशु ने लोगों के लिए अपनी करुणा कैसे प्रदर्शित की?

उसने उन्हें सिखाया और बीमारों को चंगा किया।

30:04

दिन के अंत में, चेलों ने यीशु से कहा, "अब देर हो गई है और आसपास में कोई नगर नहीं है। इन लोगों को विदा कर ताकि वे जाकर खाने के लिए कुछ लें।"

शिष्य लोगों को दूर क्यों भेजना चाहते थे?

दिन ढल चुका था और लोगों को खाने के लिए कुछ चाहिए था।

30:05

परन्तु यीशु ने चेलों से कहा, "तुम उनको खाने के लिए कुछ दो!" उन्होंने जवाब दिया, "हम ऐसा कैसे कर सकते हैं? हमारे पास केवल पाँच रोटी और दो छोटी मछलियाँ हैं।"

शिष्य सभी लोगों को खिलाने में असमर्थ क्यों थे?

उनके पास केवल पाँच रोटियाँ और दो छोटी मछलियाँ थीं।

30:06

यीशु ने अपने चेलों से कहा कि वे भीड़ के लोगों को घास पर पचास-पचास के समूहों में बैठने के लिए कहें।

30:07

तब यीशु ने पाँच रोटी और दो मछलियों को लेकर स्वर्ग की ओर देखा, और उस भोजन के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया।

यीशु ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों का क्या किया?

उसने स्वर्ग की ओर देखा और भोजन के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया।

30:08

फिर यीशु ने रोटी और मछलियों को टुकड़ों में तोड़ा। उसने लोगों को देने के लिए अपने चेलों को वे टुकड़े दे दिए। चेले उस भोजन को बाँटते रहे, और उस भोजन में कोई घटती नहीं हुई! वे सब लोग खाकर तृप्त हो गए।

यीशु ने पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ तोड़ने के बाद उनका क्या किया?

उसने स्वर्ग में अपने पिता को धन्यवाद दिया, और टुकड़ों को अपने शिष्यों को दिया ताकि वे उन्हें लोगों को दे सकें।

30:09

उसके बाद, चेलों ने उस भोजन को इकट्ठा किया जिसे खाया नहीं गया था और वह बारह टोकरियों को भरने के लिए पर्याप्त था! वह सारा भोजन उन पाँच रोटी और दो मछलियों से आया था।

सबके खाने के बाद कितना खाना बचा?

बारह टोकरियाँ भरने के लिये पर्याप्त था।

31. यीशु का पानी पर चलना

31:01

पाँच हजार लोगों को भोजन करवाने के बाद, यीशु ने अपने चेलों से नाव में जाने के लिए कहा। उसने उनको झील के दूसरी तरफ चले जाने के लिए कहा जबकि वह थोड़े समय के लिए वहीं ठहर गया। अतः चेले चले गए और यीशु ने भीड़ को विदा किया कि वे अपने घर जाएँ। इसके बाद, यीशु प्रार्थना करने के लिए एक पर्वत पर चला गया। वहाँ वह अकेला था, और उसने देर रात तक प्रार्थना की।

भीड़ को विदा करते समय यीशु ने चेलों से क्या करने को कहा?

उसने उनसे कहा कि वे एक नाव में बैठें और झील के दूसरी ओर चले जाएँ।

शिष्यों को उनकी नाव में विदा करने के बाद यीशु ने क्या किया?

वह अकेले ही प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया।

31:02

उस समय, चेले अपनी नाव को खेते हुए जा रहे थे, परन्तु हवा उनके विरुद्ध बड़ी जोर से बह रही थी। बहुत रात हो जाने पर भी वे केवल झील के बीच में ही पहुँचे थे।

रात के समय शिष्यों को क्या समस्या हुई?

हवा उनके विरुद्ध थी, सो वे झील के बीच में ही पहुंचे।

31:03

उस समय यीशु ने प्रार्थना करना समाप्त किया और अपने चेलों के पास वापिस जाना आरम्भ किया। वह नाव की तरफ जाने के लिए पानी के ऊपर चलने लगा।

यीशु उनकी नाव तक कैसे पहुंचे?

वह पानी के ऊपर उसके पास गया।

31:04

तब चेलों ने उसे देखा। वे बहुत डर गए क्योंकि उन्होंने सोचा था कि वह कोई भूत है। यीशु जानता था कि वे डर गए थे, इसलिए उसने उनको आवाज देकर कहा, "डरो मत, यह मैं हूँ!"

जब चेलों ने पहली बार यीशु को देखा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया थी?

वे बहुत डर गए क्योंकि उन्हें लगा कि वह कोई भूत है।

उनके डर को शांत करने के लिए यीशु ने उनसे क्या कहा?

उसने कहा, “डरो मत। ये मैं हूं!"

31:05

तब पतरस ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, यदि यह तू है तो मुझे पानी पर चल कर तेरे पास आने का आदेश दे।" यीशु ने पतरस से कहा, "आ!"

यीशु ने पतरस से पानी पर चलकर आने को क्यों कहा?

यीशु ने पतरस को अपने पास आने को कहा क्योंकि पतरस ने उसे ऐसा करने के लिए कहा था।

31:06

अतः पतरस नाव से उतर गया और यीशु के पास जाने के लिए पानी की सतह पर चलना आरम्भ किया। परन्तु थोड़ी दूर जाकर, उसने अपनी आँखों को यीशु से फेर लिया और लहरों को देखना और तेज हवा को महसूस करना आरम्भ कर दिया।

जब पतरस ने यीशु से अपनी आँखें फेर लीं तो उसने क्या देखा?

वह लहरों को देखने लगा और तेज हवा को महसूस करने लगा।

31:07

तब पतरस डर गया और पानी में डूबने लगा। वह चिल्लाया, "हे प्रभु, मुझे बचा!" यीशु ने उसी समय हाथ बढ़ा कर उसे पकड़ लिया। तब उसने पतरस से कहा, "तेरा विश्वास बहुत कम है! तुझे सुरक्षित रखने के लिए तूने मुझ पर भरोसा क्यों नहीं किया?"

पतरस को क्या हुआ जब वह हवा और लहरों से डरने लगा?

वह पानी में डूबने लगा।

जब पतरस ने मदद के लिए पुकारा तो यीशु ने क्या किया?

यीशु ने हाथ बढ़ाकर पतरस को पकड़ लिया।

यीशु ने पतरस को फटकार के रूप में क्या कहा?

यीशु ने कहा, “तुम्हारा विश्वास बहुत कम है! आपको सुरक्षित रखने के लिए आपने मुझ पर भरोसा क्यों नहीं किया?

31:08

तब यीशु और पतरस नाव पर चढ़ गए, और तुरन्त हवा का बहना बंद हो गया। पानी शान्त हो गया। चेलों ने चकित होकर यीशु के आगे घुटने टेक दिए। उन्होंने उसकी आराधना की और उससे कहा, "सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है।"

यीशु के नाव पर चढ़ने के बाद क्या हुआ?

हवा तुरंत बहना बंद हो गई और पानी शांत हो गया।

शिष्यों ने इस चमत्कार पर कैसी प्रतिक्रिया दी?

उन्होंने यीशु को प्रणाम किया, उसकी उपासना की, और कहा, “सचमुच, तू परमेश्वर का पुत्र है।”

32. यीशु का दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति और एक बीमार स्त्री को चंगा करना

32:01

यीशु और उसके चेले अपनी नाव में उस क्षेत्र को गए जहाँ गिरासेनी लोग रहते थे। वे उस क्षेत्र में पहुँच कर नाव से उतर गए।

32:02

वहाँ एक व्यक्ति था जो दुष्टात्मा से ग्रस्त था।

जब यीशु उस स्थान पर पहुँचा जहाँ गिरासीन लोग रहते थे, तब वह किससे मिला था?

वहां उसकी मुलाकात एक ऐसे व्यक्ति से हुई जो दुष्टात्मा से ग्रसित था।

32:03

यह व्यक्ति इतना बलशाली था कि कोई भी उसको नियंत्रित नहीं कर सका था। कई बार लोगों ने उसके हाथों और पैरों को जंजीरों से भी बाँधा, परन्तु वह उनको तोड़ देता था।

लोग दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति को क्यों रोक नहीं पाए?

दुष्टात्माओं ने उसे इतना शक्तिशाली बना दिया था कि वह उन जंजीरों को तोड़ देता था जिनसे वे उसे बांधते थे.

32:04

वह व्यक्ति उस क्षेत्र में कब्रों में रहा करता था। यह व्यक्ति पूरे दिन और पूरी रात चिल्लाया करता था। वह कपड़े नहीं पहनता था और अक्सर स्वयं को पत्थरों से घायल किया करता था।

आदमी ने कैसा व्यवहार किया?

वह रात-दिन चिल्लाता, बिना कपड़े पहने, और अपने आप को पत्थरों से घायल करता हुआ, कब्रों के बीच रहता था।

32:05

वह व्यक्ति दौड़ कर यीशु के पास आया और उसके सामने घुटने टेक दिए। तब यीशु ने उस व्यक्ति के अंदर की दुष्टात्मा से बात की और कहा, "इस व्यक्ति में से बाहर निकल आ!"

32:06

वह दुष्टात्मा ऊँची आवाज में चिल्लाई, "हे यीशु, परम प्रधान परमेश्वर के पुत्र, तेरा मुझसे क्या काम? कृपा करके मुझे मत सता!" तब यीशु ने उस दुष्टात्मा से पूछा, "तेरा नाम क्या है?" उसने जवाब दिया, "मेरा नाम सेना है, क्योंकि हम बहुत हैं।" (रोमी सेना में कई हजार सैनिकों का एक समूह एक "सेना" होती थी।)

दुष्टात्माओं का नाम क्या था?

उसका नाम सेना था।

सेना नाम का मतलब क्या होता है?

एक 'सेना' रोमन सेना में कई हजार सैनिकों का एक समूह था। इस नाम का मतलब था कि आदमी में कई दुष्टात्माएँ थीं।

32:07

उन दुष्टात्माओं ने यीशु से विनती की, "कृपा करके हमें इस क्षेत्र से बाहर मत भेज!" वहीं पास के पहाड़ पर सूअरों का एक झुंड चर रहा था। इसलिए उन दुष्टात्माओं ने यीशु से विनती की, "कृपा करके हमें उन सूअरों में भेज दे!" यीशु ने कहा, "ठीक है, उनमें चले जाओ!"

दुष्टात्माओं ने यीशु से उन्हें कहाँ भेजने की विनती की जब वे उस मनुष्य को छोड़ कर चले गए थे?

उन्होंने यीशु से उन्हें सुअरों के झुंड में भेजने के लिए कहा।

32:08

अत: वे दुष्टात्माएँ उस व्यक्ति में से निकल कर उन सूअरों में प्रवेश कर गईं। वे सूअर दौड़ कर एक खड़े टीले पर से झील में कूद गए और डूब मरे। उस झुंड में लगभग 2,000 सुअर थे।

सुअरों का क्या हुआ जब दुष्टात्माओं ने उनमें प्रवेश किया?

वे एक खड़ी तट से नीचे झील में जा गिरे और डूब गए।

जब दुष्टात्माओं ने उन्हें झील में भेजा तो कितने सुअर डूब गए?

डूबने वाले झुंड में 2,000 सुअर थे।

32:09

वहाँ पर उन सूअरों की देखभाल करने वाले लोग थे। जो कुछ हुआ था जब उन्होंने देखा तो वे नगर में भाग गए। यीशु ने जो किया था वहाँ उन्होंने सब को बताया। उस नगर के लोग निकल आए और उस व्यक्ति को देखा जिसमें दुष्टात्माएँ थीं। वह शान्ति से, कपड़े पहने हुए, और एक सामान्य व्यक्ति की तरह व्यवहार करते हुए बैठा था।

राक्षसों के चले जाने के बाद उस व्यक्ति ने कैसा व्यवहार किया?

वह शांति से बैठे, कपड़े पहने और एक सामान्य व्यक्ति की तरह व्यवहार किया।

32:10

वे लोग बहुत डरे हुए थे और उन्होंने यीशु से चले जाने के लिए कहा। अतः यीशु नाव पर चढ़ गया। वह व्यक्ति जिसमें दुष्टात्माएँ थीं उसने यीशु के साथ जाने की विनती की।

जब लोगों ने उस व्यक्ति को देखा जो चंगा हो गया था और मरे हुए सूअरों को देखा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया थी?

वे डर गए और यीशु से उन्हें छोड़ने के लिए कहा।

32:11

परन्तु यीशु ने उससे कहा, "नहीं। मैं चाहता हूँ कि तू घर जाकर सब को बताए कि परमेश्वर ने तेरे लिए क्या किया है। उनको बता कि कैसे परमेश्वर ने तुझ पर दया की थी।"

यीशु ने चंगे आदमी को यीशु के साथ जाने के बजाय क्या करने को कहा?

यीशु ने उससे कहा कि वह घर जाकर अपने मित्रों और परिवार को बताए कि परमेश्वर ने उसके लिए क्या किया है और परमेश्वर ने उस पर कैसे दया की।

32:12

इसलिए वह व्यक्ति चला गया और सब को इस बारे में बताया जो यीशु ने उसके लिए किया था। उसकी कहानी को सुनने वाला हर एक जन चकित हुआ था।

32:13

यीशु झील की दूसरी तरफ लौट आया। उसके वहाँ पहुँचने के बाद, एक बड़ी भीड़ उसके आस पास इकट्ठा हुई और उसे दबाने लगी। उस भीड़ में एक स्त्री थी जो बारह वर्षों से लहू बहने की समस्या से पीड़ित थी। उसने अपना सारा धन चिकित्सकों को दे दिया था ताकि वे उसे ठीक कर सकें, परन्तु उसका रोग और भी बिगड़ गया था।

32:14

उसने सुना था कि यीशु ने कई बीमार लोगों को ठीक किया था और उसने सोचा, "मैं निश्चित हूँ कि यदि मैं केवल यीशु के वस्त्र ही को छू लूँ, तो मैं भी ठीक हो जाऊँगी!" इसलिए वह यीशु के पीछे से आई और उसके वस्त्र को छू लिया। जैसे ही उसने उनको छुआ, लहू का बहना बंद हो गया।

लहू बहने की समस्या से ग्रस्त स्त्री यीशु के पास क्यों आई?

उसने सोचा कि यदि वह यीशु के वस्त्रों को छू लेगी, तो वह चंगी हो जाएगी।

जैसे ही उस स्त्री ने यीशु के वस्त्रों को छुआ, क्या हुआ?

उसका खून बहना बंद हो गया।

32:15

तुरन्त ही, यीशु ने जान लिया कि उसमें से सामर्थ निकला है। इसलिए उसने पीछे मुड़ कर पूछा, "मुझे किसने छुआ?" चेलों ने जवाब दिया, "यहाँ इतने सारे लोगों ने तेरे चारों ओर भीड़ लगाई हुई है, और तुझे धकेल रहे हैं। तो तूने क्यों पूछा कि मुझे किसने छुआ है?"

यीशु को कैसे पता चला कि किसी ने उसे छुआ है?

उसने महसूस किया कि उसमें स सामर्थ्य निकली थी।

32:16

वह स्त्री यीशु के सामने काँपती हुई और बहुत डरी हुई अपने घुटनों पर बैठ गई। तब उसने उसे बता दिया कि उसने क्या किया है, और यह भी कि वह ठीक हो गई है। यीशु ने उससे कहा, "तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है। शान्ति से जा।"

यीशु ने उस स्त्री से क्या कहा जब वह उसके सामने गिरी?

उसने उससे कहा, “तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है। आपको शांति मिले।"

33. एक किसान की कहानी

33:01

एक दिन, यीशु झील के किनारे के निकट था। वह लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ को शिक्षा दे रहा था। उसे सुनने के लिए इतने सारे लोग आए कि यीशु के पास उन सब से बात करने के लिए स्थान न बचा। इसलिए वह पानी में खड़ी नाव पर चढ़ गया। वहाँ वह बैठ गया और लोगों को शिक्षा दी।

33:02

यीशु ने उन्हें यह कहानी सुनाई, "एक किसान बीज बोने के लिए बाहर निकला। जब वह हाथों से बीजों को बिखेर रहा था तो कुछ बीज मार्ग पर गिरे। परन्तु पक्षियों ने आकर उन सब बीजों को खा लिया।"

रास्ते में गिरे बीज का क्या हुआ?

पक्षी आए और सब कुछ खा गए।

33:03

"दूसरे बीज पथरीली भूमि पर गिरे जहाँ बहुत कम मिट्टी थी। पथरीली भूमि पर गिरे बीज बहुत जल्दी अंकुरित हुए, परन्तु उनकी जड़ें भूमि में गहराई में जाने में सक्षम नहीं थीं। जब सूर्य निकला और गर्मी हुई तो वे पौधे मुरझा गए और मर गए।"

पथरीली भूमि पर गिरे बीज का क्या हुआ?

यह जल्दी से अंकुरित हुआ, लेकिन फिर सूख गया और गर्म होने पर मर गया।

33:04

"तौभी दूसरे बीज झाड़ियों के बीच में गिरे। उन बीजों ने बढ़ना आरम्भ किया, परन्तु काँटों ने उनको दबा दिया। इसलिए काँटेदार भूमि पर गिरे बीजों में से निकले पौधों में से कोई भी अनाज उत्पन्न नहीं कर पाया।"

कँटीली झाड़ियों में गिरे बीज का क्या हुआ?

वह बढ़ने लगा, पर कांटों ने उसे दबा दिया।

33:05

"दूसरे बीज अच्छी भूमि पर गिरे। वे बीज बढ़े और जितने बीज बोए गए थे उनसे 30, 60, और यहाँ तक कि 100 गुणा अनाज उत्पन्न किया। जो कोई भी परमेश्वर के पीछे चलना चाहता है, वह उस बात पर ध्यान दे जो मैं कह रहा हूँ!"

अच्छी भूमि पर गिरे बीज का क्या हुआ?

वह बड़ा हुआ और बोए गए बीज से 30, 60, या 100 गुना अनाज पैदा किया।

33:06

इस कहानी ने चेलों को उलझन में डाल दिया। इसलिए यीशु ने व्याख्या की, "वह बीज परमेश्वर का वचन है। वह मार्ग एक ऐसा व्यक्ति है जो परमेश्वर के वचन को सुनता है, परन्तु उसे समझता नहीं है। तब शैतान उसके पास से वचन को चुरा ले जाता है। अर्थात शैतान उसे वचन को समझने से दूर रखता है।"

क्या शिष्यों ने कहानी का अर्थ समझा?

नहीं, वे भ्रमित थे।

कहानी में बीज क्या दर्शाता है?

बीज परमेश्वर का वचन है।

पथ क्या दर्शाता है?

मार्ग वह है जो वचन को सुनता है, परन्तु उसे नहीं समझता, और शैतान उसे उस से ले लेता है।

33:07

"वह पथरीली भूमि ऐसा व्यक्ति है जो परमेश्वर के वचन को सुनता है और आनन्द के साथ उसे स्वीकार कर लेता है। परन्तु जब मुश्किल समय आता है, या जब अन्य लोग उसे सताते हैं, तो वह परमेश्वर से दूर चला जाता है। अर्थात वह परमेश्वर पर भरोसा करना बंद कर देता है।"

पथरीली जमीन क्या दर्शाती है?

पथरीली भूमि वह है, जो वचन को सुनकर आनन्द से ग्रहण करता है, परन्तु जब संकट और उपद्रव आता है, तब ठोकर खाता है।

33:08

"वह काँटेदार भूमि ऐसा व्यक्ति है जो परमेश्वर के वचन को सुनता है। परन्तु वह बहुत सारी बातों के बारे में चिन्ता करना आरम्भ कर देता है, और वह बहुत सा धन कमाने का प्रयास करता है, और वह बहुत सी चीजों को पाने का प्रयास करता है। कुछ समय के बाद, अब वह परमेश्वर को प्रेम करने में सक्षम नहीं है। इसलिए जो उसने परमेश्वर के वचन से सीखा था वह उसे परमेश्वर को प्रसन्न करने में सक्षम नहीं करता है। वह गेहूँ की डंठलों के समान है जो कोई अनाज उत्पन्न नहीं करती हैं।"

कंटीली भूमि क्या दर्शाती है?

कंटीली जमीन वह है जो शब्द सुनता है, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है, उसे कई चीजों की चिंता होने लगती है, और वह बहुत पैसा बनाने की कोशिश करता है, और वह बहुत सी चीजों को पाने की कोशिश करता है, जिससे वह खुश नहीं हो पाता परमेश्वर अब और नहीं।

33:09

"परन्तु अच्छी भूमि वह व्यक्ति है जो परमेश्वर के वचन को सुनता है, उस पर विश्वास करता है, और फल उत्पन्न करता है।"

अच्छी भूमि में बीज क्या दर्शाता है?

अच्छी भूमि में बीज वह है, जो वचन को सुनकर उस पर विश्वास करता, और फल लाता है।

34.यीशु दूसरी कहानियों की शिक्षा देता है

34:01

यीशु ने परमेश्वर के राज्य के बारे में अन्य बहुत सी कहानियाँ सुनाई। उदाहरण के लिए, उसने कहा, "परमेश्वर का राज्य एक राई के बीज के समान है जिसे किसी ने अपने खेत में बो दिया। तुम जानते हो कि राई का बीज सारे बीजों में सबसे छोटा होता है।"

सरसों के बीज की तुलना अन्य बीजों से कैसे की जाती है?

यह सबसे छोटा बीज है।

34:02

"परन्तु जब राई का बीज बढ़ जाता है तो वह मैदान के सारे पौधों में सबसे बड़ा हो जाता है, इतना बड़ा कि पक्षी आकर उसकी शाखाओं पर आराम करते हैं।"

सरसों के बीज के बढ़ने पर क्या होता है?

यह सभी खेत के पौधों में सबसे बड़ा हो जाता है।

34:03

यीशु ने एक अन्य कहानी बताई, "परमेश्वर का राज्य खमीर के समान है जिसे लेकर एक स्त्री गूंथे हुए आटे में मिला देती है तब वह सारे गूंथे हुए आटे में फैल जाता है।"

यीस्ट को ब्रेड के आटे में मिलाने पर क्या होता है?

यह पूरे आटे में फैल जाता है, जिससे यह फूल जाता है।

34:04

"स्वर्ग का राज्य उस खजाने के समान है जिसे किसी ने खेत में छिपा दिया। किसी अन्य व्यक्ति को वह खजाना मिल गया और उसने उसे पाने की बहुत चाह की। इसलिए उसने उसे फिर से गाड़ दिया। वह आनन्द से इतना भरा हुआ था कि उसने जाकर अपना सब कुछ बेच दिया ताकि वह उस खेत को खरीद सके जहाँ वह खजाना था।"

खेत में छिपा हुआ खजाना मिलने के बाद उस व्यक्ति ने क्या किया?

उसने उसे फिर से गाड़ दिया, जो कुछ उसके पास था उसे बेच दिया, और उस पैसे से खेत मोल लिया।

34:05

"स्वर्ग का राज्य एक बहुत कीमती शुद्ध मोती के समान भी है। जब कोई मोतियों का व्यापारी उसे पा लेता है तो वह उसे खरीदने के लिए अपना सब कुछ बेच देता है।"

जब मोती के व्यापारी को एक उत्तम मोती मिला तो उसने क्या किया?

उसने अपना सब कुछ बेच दिया और पैसे का इस्तेमाल उसे खरीदने के लिए किया।

34:06

वहाँ कुछ लोग थे जो सोचते थे कि परमेश्वर उनको इसलिए स्वीकार करेगा क्योंकि वे भले काम कर रहे हैं। ये लोग ऐसे लोगों को तुच्छ मानते थे जो उन भले कामों को नहीं करते थे। इसलिए यीशु ने उनको यह कहानी बताईः "दो पुरुष थे और दोनों ही प्रार्थना करने के लिए मंदिर में गए। उनमें से एक चुंगी लेने वाला था, और दूसरा एक धार्मिक अगुवा था।"

यीशु ने मंदिर में प्रार्थना कर रहे दो व्यक्तियों की कहानी किसे सुनाई?

उसने उन लोगों को कहानी सुनाई जिन्होंने सोचा था कि भगवान उन्हें स्वीकार करेंगे क्योंकि वे अच्छे काम कर रहे थे, और जो अन्य लोगों का तिरस्कार करते थे।

34:07

"उस धार्मिक अगुवे ने इस प्रकार से प्रार्थना की, 'हे परमेश्वर, तेरा धन्यवाद हो कि मैं अन्य लोगों के समान – जैसे कि डाकू, अन्यायी मनुष्य, व्यभिचारी, या यहाँ तक कि यहाँ पर उपस्थित उस चुंगी लेने वाले के समान एक पापी नहीं हूँ।'"

धर्मगुरु ने परमेश्वर का धन्यवाद क्यों किया?

उसने परमेश्वर का धन्यवाद किया क्योंकि उसने सोचा कि वह अन्य मनुष्यों की तरह पापी नहीं था।

34:08

"उदाहरण के लिए, मैं हर सप्ताह में दो बार उपवास रखता हूँ, और मैं मुझे मिलने वाले धन और सामान का दसवाँ हिस्सा तुझे देता हूँ।"

धार्मिक नेता ने क्यों सोचा कि वह धर्मी है?

वह सप्ताह में दो बार उपवास करता था और अपने धन और वस्तुओं का दसवाँ अंश देता था।

34:09

"परन्तु वह चुंगी लेने वाला उस धार्मिक अगुवे से बहुत दूर खड़ा हो गया। उसने ऊपर स्वर्ग की ओर आँखें भी नहीं उठाईं। इसके बजाए, उसने अपनी मुट्ठी से अपनी छाती को पीटा और प्रार्थना की, 'हे परमेश्वर, कृपा करके मुझ पर दया कर क्योंकि मैं एक पापी हूँ।'"

चुंगी लेनेवाले ने परमेश्वर से क्या माँगा?

उसने परमेश्वर से उस पर दया करने के लिए कहा क्योंकि वह एक पापी था।

34:10

फिर यीशु ने कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूँ, परमेश्वर ने उस चुंगी लेने वाले की प्रार्थना को सुना और उसे धर्मी घोषित किया। परन्तु उसने उस धार्मिक अगुवे की प्रार्थना को पसंद नहीं किया। परमेश्वर हर एक घमंडी के सिर को नीचा करेगा, परन्तु वह हर उस जन को आदर देगा जो स्वयं को नम्र करता है।"

परमेश्वर ने किस मनुष्य को धर्मी घोषित किया?

उसने घोषित किया कि चुंगी लेने वाला धर्मी था।

परमेश्वर हर उस व्यक्ति के साथ क्या करेगा जो विनम्र है?

वह उनका सम्मान करेगा।

35. दयालु पिता की कहानी

35:01

एक दिन, यीशु उन बहुत से लोगों को शिक्षा दे रहा था जो उसकी सुनने के लिए इकट्ठा हुए थे। ये लोग चुंगी लेने वाले और साथ ही अन्य लोग भी थे जिन्होंने मूसा की व्यवस्था का पालन करने का प्रयास नहीं किया था।

35:02

कुछ धार्मिक अगुवों ने देखा कि यीशु इन लोगों से एक मित्र के समान बात कर रहा था। इसलिए उन्होंने एक दूसरे से यह कहना आरम्भ कर दिया कि वह गलत कर रहा था। यीशु ने उनको बातें करते सुना, इसलिए उसने उनको यह कहानी बताई।

धार्मिक अगुवों ने यीशु की आलोचना क्यों की?

उन्होंने यीशु को महसूल लेने वालों और पापियों से अपने मित्र के रूप में बातें करते देखा।

35:03

"एक व्यक्ति था जिसके दो पुत्र थे। छोटे पुत्र ने अपने पिता से कहा, 'हे पिता, मुझे अभी मेरा हिस्सा चाहिए!' अतः पिता ने अपने दोनों पुत्रों के बीच में अपनी सम्पत्ति का बँटवारा कर दिया।"

छोटे बेटे ने अपने पिता से क्या माँग की?

वह तुरंत अपनी विरासत चाहता था।

35:04

"शीघ्र ही छोटा पुत्र अपना सब कुछ इकट्ठा करके दूर देश को चला गया और पापी जीवन जीने में अपने सारे धन को बर्बाद कर दिया।"

छोटे बेटे ने अपनी विरासत का क्या किया?

उसने इसे पापपूर्ण जीवन में बर्बाद कर दिया।

35:05

"इसके बाद, जहाँ छोटा पुत्र था उस देश में एक भयंकर अकाल पड़ा, और उसके पास भोजन खरीदने के लिए धन नहीं था। इसलिए उसे जो काम मिला वह सुअरों को चराने का था। वह इतना दुःखी और भूखा था कि वह सुअरों का भोजन खाना चाहता था।"

उस देश में क्या हुआ जहाँ छोटा पुत्र रहने के लिए गया था?

भीषण अकाल पड़ा था।

अकाल के दौरान जीवित रहने के लिए छोटे बेटे ने क्या किया?

उसने सूअर चराने का काम किया।

35:06

"आखिरकार, उस छोटे पुत्र ने स्वयं से कहा, 'मैं क्या कर रहा हूँ? मेरे पिता के सब सेवकों के पास खाने के लिए बहुतायत से है, फिर भी मैं यहाँ भूखा मर रहा हूँ। मैं अपने पिता के पास वापिस जाऊँगा और अपने पिता का एक सेवक बनने के लिए उससे विनती करूँगा।'"

छोटे बेटे ने घर लौटने का फैसला क्यों किया?

उसने महसूस किया कि पिता के सेवकों के पास खाने के लिए बहुत कुछ था, और फिर भी वह भूखा मर रहा था।

छोटा बेटा अपने पिता से क्या पूछने की योजना बना रहा था?

वह अपने पिता से उसे अपने नौकरों में से एक होने देने के लिए कहने जा रहा था।

35:07

"अतः उस छोटे पुत्र ने वापिस अपने पिता के घर की ओर जाना आरम्भ किया। जबकि वह अभी दूर ही था, उसके पिता ने उसे देखा और उस पर तरस खाया। वह दौड़ कर अपने पुत्र के पास गया और उसे गले लगा कर चूमा।"

छोटे पुत्र को पास आते देख पिता ने क्या किया?

उसे उस पर दया आई, वह उसके पास दौड़ा, उसे गले लगाया और उसे चूमा।

35:08

"उस पुत्र ने कहा, 'हे पिता, मैंने परमेश्वर के और तेरे विरुद्ध पाप किया है। मैं तेरा पुत्र कहलाने के लायक भी नहीं हूँ।'"

जब वे मिले तो छोटे बेटे ने अपने पिता से क्या कहा?

उसने कहा, “पिताजी, मैंने परमेश्वर और आपके विरुद्ध पाप किया है। मैं तुम्हारा पुत्र होने के योग्य नहीं हूँ।”

35:09

"परन्तु पिता ने अपने एक सेवक से कहा, 'शीघ्र जाकर सबसे अच्छा वस्त्र लेकर आओ और मेरे पुत्र को पहनाओ! उसकी उंगली में अंगूठी और उसके पैरों में जूते पहनाओ। फिर सबसे अच्छा बछड़ा मारो ताकि हम खाएँ और उत्सव मनाएँ, क्योंकि मेरा पुत्र मर गया था, परन्तु अब वह जीवित है! वह खो गया था, परन्तु अब हम ने उसे पा लिया है!'"

छोटे बेटे के कबूलनामे पर पिता की क्या प्रतिक्रिया थी?

उसने छोटे बेटे को कपड़े, एक अंगूठी और जूते पहनाए और उसकी वापसी का जश्न मनाने के लिए दावत दी।

35:10

"इसलिए लोगों ने उत्सव मनाना आरम्भ किया। कुछ समय बीतने पर, बड़ा पुत्र खेत में काम करके घर आया। उसने संगीत और नाच की आवाज को सुना और अचम्भित हुआ कि यह क्या हो रहा था।"

35:11

"जब बड़े पुत्र को मालूम हुआ कि वे इसलिए उत्सव मना रहे थे क्योंकि उसका भाई घर आ गया था, तो वह बहुत क्रोधित हुआ और घर में दाखिल नहीं हुआ। उसके पिता ने बाहर आकर उससे उनके साथ उत्सव मनाने का निवेदन किया, परन्तु उसने मना कर दिया।"

बड़े बेटे की क्या प्रतिक्रिया थी जब उसे पता चला कि उसका भाई घर आ गया है?

वह बहुत गुस्से में था और उसने घर में जाने से मना कर दिया।

35:12

"उस बड़े पुत्र ने अपने पिता से कहा, 'इन सारे वर्षों में मैंने तेरे लिए निष्ठापूर्वक काम किया! कभी भी तेरी बात को नहीं टाला, परन्तु तूने कभी मुझे एक छोटी बकरी भी नहीं दी ताकि मैं अपने मित्रों के साथ दावत कर सकूँ। परन्तु तेरे इस पुत्र ने तेरे धन को पापी काम करने में बर्बाद कर दिया है। और अब जब वह आया है तो उसके लिए उत्सव मनाने को तूने सबसे अच्छे बछड़े को मार डाला!'"

बड़े बेटे की अपने पिता से क्या शिकायत थी?

बड़े बेटे ने कहा कि उसने अपने पिता के लिए ईमानदारी से काम किया है, और उसके पिता ने उसे जश्न मनाने के लिए एक छोटी सी बकरी भी नहीं दी। परन्तु उस ने अपके पुत्र के लिथे जो उसके पिता का धन खा गया या, उत्तम से अच्छा बछड़ा कटवाया।

35:13

"पिता ने जवाब दिया, 'हे मेरे पुत्र, तू हमेशा मेरे साथ है, और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है। परन्तु हमारे लिए उत्सव मनाना सही है क्योंकि तेरा भाई मर गया था, परन्तु अब वह जीवित है। वह खो गया था, परन्तु अब हम ने उसे पा लिया है!'"

अब पिता की कितनी संपत्ति बड़े बेटे की थी?

पिता का सब कुछ अब बड़े बेटे का था।

पिता ने अपने छोटे बेटे की वापसी का जश्न मनाने का क्या कारण बताया?

उनका बेटा मर चुका था, लेकिन अब जिंदा था। वह खो गया था, लेकिन अब मिल गया था।

36. रूपान्तरण

36:01

एक दिन, यीशु ने अपने तीन चेलों, पतरस, याकूब, और यूहन्ना को अपने साथ में लिया। (यह यूहन्ना नाम का चेला वही व्यक्ति नहीं है जिसने यीशु को बपतिस्मा दिया था।) वे प्रार्थना करने के लिए एक ऊँचे पहाड़ पर गए।

यीशु किसे अपने साथ पहाड़ पर ले गया?

उसने अपने तीन शिष्यों- पतरस, याकूब और यूहन्ना को लिया।

36:02

जब यीशु प्रार्थना कर रहा था तो उसका चेहरा सूर्य के समान उज्जवल हो गया। उसके वस्त्र उजियाले के समान सफेद हो गए, जैसा पृथ्वी पर कोई कर सके उससे भी बढ़ कर सफेद।

जब यीशु प्रार्थना कर रहा था तो उसमें क्या बदलाव आया?

उसका मुख सूर्य के समान उज्ज्वल हो गया और उसके वस्त्र प्रकाश के समान श्वेत हो गए।

36:03

तब मूसा और एलिय्याह भविष्यद्वक्ता प्रकट हुए। ये पुरुष इस पृथ्वी पर इस समय से सैकड़ों वर्ष पहले रहा करते थे। उन्होंने यीशु से उसकी मृत्यु के विषय में बात की, क्योंकि वह शीघ्र ही यरूशलेम में मर जाएगा।

वे दो व्यक्ति कौन थे जो यीशु के साथ प्रकट हुए थे?

मूसा और नबी एलिय्याह प्रकट हुए।

यह चमत्कारिक क्यों था कि मूसा और एलिय्याह यीशु के साथ प्रकट हुए?

इससे पहले वे दोनों सैकड़ों वर्ष जीवित रहे।

मूसा और एलिय्याह यीशु के साथ क्या चर्चा कर रहे थे?

उन्होंने यीशु की मृत्यु के बारे में बात की।

यीशु कहाँ मरने वाला था?

वह यरूशलेम में मरने वाला था।

36:04

जब मूसा और एलिय्याह यीशु से बातें कर रहे थे तब पतरस ने यीशु से कहा, "हमारे लिए यहाँ होना भला है। हम तीन मंडपों को बनाएँ, एक तेरे लिए, एक मूसा के लिए, और एक एलिय्याह के लिए।" परन्तु पतरस नहीं जानता था कि वह क्या कह रहा है।

पतरस ने सुझाव दिया कि वे यीशु, मूसा और एलिय्याह के लिए क्या करें?

वह तीन मण्डप बनाना चाहता था, एक यीशु के लिए, एक मूसा के लिए और एक एलिय्याह के लिए।

36:05

जब पतरस बात कर रहा था, तो एक उजले बादल नीचे आकर उन पर छा गया। फिर उन्होंने बादल में से एक आवाज को आते हुए सुना। उसने कहा, "यह मेरा पुत्र है जिससे मैं प्रेम करता हूँ। मैं उससे प्रसन्न हूँ। उसकी सुनो।" वे तीनों चेले डर गए और मुर्छित होकर भूमि पर गिर गए।

चमकीले बादल की आवाज ने शिष्यों से क्या कहा?

इसने कहा, “यह मेरा पुत्र है जिससे मैं प्रेम करता हूँ। मैं उससे प्रसन्न हूं। उसे सुनो।"

36:06

तब यीशु ने उनको छुआ और कहा, "डरो मत। उठ जाओ।" जब उन्होंने चारों ओर देखा, तो जो एक जन अभी भी वहाँ था वह यीशु था।

36:07

यीशु और वे तीनों चेले उस पहाड़ से वापिस नीचे उतर आए। तब यीशु ने उनसे कहा, "अभी जो यहाँ हुआ उसकी चर्चा किसी से न करना। मैं शीघ्र ही मर जाऊँगा और फिर जीवित हो जाऊँगा। उसके बाद, तुम लोगों को बता सकते हो।"

जो कुछ उन्होंने देखा उसके बारे में यीशु ने चेलों से क्या करने को कहा?

उसने उनसे कहा कि पहाड़ पर जो हुआ उसके बारे में तब तक किसी को मत बताना जब तक कि वह मर कर जीवित न हो जाए।

37. यीशु द्वारा लाज़र को मृतकों में से जिलाया जाना

37:01

लाज़र नाम का एक व्यक्ति था। उसकी दो बहनें थीं जिनके नाम मरियम और मार्था थे। वे सब यीशु के घनिष्ठ मित्र थे। एक दिन, किसी ने यीशु को बताया कि लाज़र बहुत बीमार था। जब यीशु ने यह सुना तो उसने कहा, "यह बीमारी लाज़र के मरने के साथ समाप्त नहीं होगी। इसके बजाए, यह लोगों को परमेश्वर का आदर करने के लिए प्रेरित करेगी।"

यीशु ने कहा कि लाज़र की बीमारी का अन्तिम परिणाम क्या होगा?

यह परमेश्वर की महिमा के लिए होगा।

37:02

यीशु अपने मित्रों से प्रेम करता था, परन्तु जहाँ वह था वहाँ उसने दो दिनों तक प्रतीक्षा की। उन दो दिनों के बाद, उसने अपने चेलों से कहा, "आओ, वापिस यहूदिया को चलें।" चेलों ने जवाब दिया, "परन्तु हे गुरु, अभी कुछ ही समय पहले वहाँ के लोग तुझे मार डालना चाहते थे!" यीशु ने कहा, "हमारा मित्र लाज़र सो गया है, और मुझे उसे जगाना है।"

लाज़र की बीमारी के बारे में सुनने के बाद यीशु ने क्या किया?

वह जहाँ था वहाँ दो दिन और रुका।

जब यीशु ने यहूदिया जाने का निश्चय किया तो शिष्य क्यों चिंतित थे?

वे चिन्तित थे क्योंकि यहूदिया के लोग यीशु को मार डालना चाहते थे।

37:03

यीशु के चेलों ने जवाब दिया, "हे प्रभु, यदि लाज़र सो रहा है, तो वह ठीक हो जाएगा।" तब यीशु ने उनसे स्पष्ट रूप से कह दिया, "लाज़र मर गया है। मैं आनन्दित हूँ कि मैं वहाँ नहीं था, ताकि तुम मुझ पर विश्वास कर सको।"

जब यीशु ने कहा कि लाज़र सो गया है, तो उसके चेलों का क्या मतलब था?

उन्हें लगा कि वह अभी सो रहा है और ठीक हो जाएगा।

यीशु ने स्पष्ट रूप से चेलों को लाज़र के बारे में क्या बताया?

यीशु ने कहा कि लाजर मर गया था।

यीशु क्यों खुश था कि जब लाज़र मरा तो वह वहाँ नहीं था?

यीशु खुश था क्योंकि कुछ ऐसा होगा जिससे उसके चेले उस पर विश्वास करने लगेंगे।

37:04

जब यीशु लाज़र के गाँव पहुँचा तो लाज़र को मरे हुए पहले से ही चार दिन हो चुके थे। मार्था यीशु से मिलने के लिए बाहर आई और कहा, "हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई न मरता। परन्तु मैं विश्वास करती हूँ कि जो कुछ भी तू परमेश्वर से माँगेगा वह तुझे देगा।"

लाजर को मरे हुए कितना समय हो गया था?

उसे मरे चार दिन हो गए थे।

क्या मार्था को विश्वास था कि यीशु लाज़र को चंगा कर सकता था?

हाँ, उसे विश्वास था कि वह कर सकता है।

37:05

यीशु ने जवाब दिया, "पुनरुत्थान और जीवन मैं हूँ। जो कोई मुझ पर विश्वास करता है यदि वह मर भी जाए तौभी जीएगा। जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह कभी नहीं मरेगा। क्या तू इस पर विश्वास करती है?" मार्था ने जवाब दिया, "हे प्रभु, मैं विश्वास करती हूँ कि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है।"

विश्वासियों का क्या होगा क्योंकि यीशु पुनरुत्थान और जीवन हैं?

जो कोई यीशु पर विश्वास करता है वह मरने पर भी जीवित रहेगा, और जो कोई यीशु पर विश्वास करता है वह कभी न मरेगा।

मार्था का मानना था कि यीशु कौन था?

वह मानती थी कि वह मसीहा, परमेश्वर का पुत्र है।

37:06

तब मरियम आई। उसने यीशु के चरणों में गिर कर कहा, "हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई न मरता।" यीशु ने उससे पूछा, "तुमने लाज़र को कहाँ रखा है?" उन्होंने उसे बताया, "कब्र में। आ और देख ले।" तब यीशु रोने लगा।

37:07

वह कब्र एक गुफा थी जिसके द्वारा पर एक पत्थर को लुढ़काया गया था। जब यीशु कब्र पर पहुँचा तो उसने उनसे कहा, "पत्थर को हटा दो।" परन्तु मार्था ने कहा, "उसे मरे हुए चार दिन हो चुके हैं। उसमें से दुर्गंध आती होगी।"

लाजर को मरे हुए कितना समय हो गया था?

उसे मरे चार दिन हो गए थे।

37:08

यीशु ने जवाब दिया, "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि यदि तुम मुझ पर विश्वास करो तो परमेश्वर के सामर्थ को देखोगे?" इसलिए उन्होंने पत्थर को हटा दिया।

37:09

तब यीशु ने ऊपर स्वर्ग की ओर देख कर कहा, "हे पिता, मेरी सुन लेने के लिए मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ। मैं जानता हूँ कि तू हमेशा मेरी सुनता है, परन्तु मैंने यह यहाँ पर खड़े इन सब लोगों की सहायता करने के लिए कहा ताकि ये विश्वास करें कि तूने मुझे भेजा है।" तब यीशु ने आवाज लगाई, "हे लाज़र, बाहर निकल आ!"

यीशु ने ज़ोर से पिता का धन्यवाद क्यों किया?

उसने ऐसा इसलिए किया कि लोग विश्वास करें कि पिता ने उसे भेजा है।

यीशु ने लाज़र को क्या करने की आज्ञा दी?

उसने लाजर को कब्र से बाहर आने की आज्ञा दी!

37:10

अतः लाज़र बाहर निकल आया! वह अभी भी कफन में लिपटा हुआ था। यीशु ने उससे कहा, "इस कफन को निकालने में उसकी सहायता करो और उसे स्वतंत्र करो।" इस चमत्कार के कारण बहुत से यहूदियों ने यीशु पर विश्वास किया।

37:11

परन्तु यहूदियों के धार्मिक अगुवे यीशु से जलने लगे, इसलिए वे योजना बनाने के लिए एक साथ इकट्ठा हुए कि कैसे यीशु और लाज़र को मार डाला जाए।

यहूदियों के धार्मिक अगुवों ने जब चमत्कार देखा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया थी?

उन्होंने यीशु से ईर्ष्या की और उसे और लाजर को मारने की योजना बनाई।

38. यीशु के साथ विश्वासघात

38:01

हर वर्ष, यहूदी लोग फसह का पर्व मनाते थे। यह इस बारे में एक उत्सव था कि कई शताब्दियों पहले परमेश्वर ने उनके पूर्वजों को मिस्र के दासत्व से छुड़ाया था। लगभग तीन वर्ष के बाद यीशु ने सार्वजनिक रूप से प्रचार करना और शिक्षा देना आरम्भ किया। यीशु ने अपने चेलों को बताया कि वह उनके साथ यरूशलेम में फसह के पर्व को मनाना चाहता है, और यह भी कि वह वहाँ मार डाला जाएगा।

फ़सह पर्व का क्या अर्थ था जिसे यहूदी हर वर्ष मनाते थे?

फसह का पर्व इस बात का उत्सव था कि कैसे परमेश्वर ने यहूदियों के पूर्वजों को मिस्र की गुलामी से मुक्त किया था।

38:02

यीशु के चेलों में एक यहूदा नाम का व्यक्ति था। यहूदा प्रेरितों के धन की थैली रखने का प्रभारी था, परन्तु अक्सर वह उस थैली में से पैसे निकाल लिया करता था। यीशु और चेलों के यरूशलेम में पहुँचने के बाद यहूदा यहूदी अगुवों के पास गया। उसने धन के बदले में यीशु को उनके हाथ पकड़वाने का प्रस्ताव रखा। वह जानता था कि यहूदी अगुवे स्वीकार नहीं करते थे कि यीशु ही मसीह था। वह जानता था कि वे उसे मार डालना चाहते थे।

यहूदी अगुवों को यीशु को धोखा देने के बदले में यहूदा क्या चाहता था?

उसने धन के बदले यीशु को पकड़वाने की पेशकश की।

38:03

महायाजक के कहने पर यहूदी अगुवों ने यीशु को उनके हाथों में पकड़वाने के लिए यहूदा को तीस चाँदी के सिक्के दिए। यह उसी प्रकार से हुआ जैसा कि भविष्यद्वक्ता ने कहा था कि होगा। यहूदा मान गया और धन लेकर चला गया। वह यीशु को गिरफ्तार करने में उनकी सहायता करने के लिए किसी अवसर की खोज करने लगा।

यहूदी अगुवों ने यीशु को पकड़वाने के लिए यहूदा को कितना भुगतान किया?

उन्होंने उसे चाँदी के 30 सिक्के दिए।

38:04

यरूशलेम में, यीशु ने अपने चेलों के साथ फसह का पर्व मनाया। फसह के भोज के दौरान, यीशु ने रोटी लेकर तोड़ी। उसने कहा, "इसे लो और खाओ। यह मेरा शरीर है जो मैं तुम्हारे लिए देता हूँ। इसे मेरी याद में करना।" इस प्रकार से, यीशु ने कहा कि वह उनके लिए मर जाएगा, अर्थात उनके लिए वह अपने शरीर को बलि चढ़ा देगा।

फसह के भोज में, यीशु ने रोटी के बारे में क्या कहा?

उसने कहा, "यह मेरा शरीर है, जो तुम्हारे लिए दिया जाता है।"

38:05

फिर यीशु ने एक दाखरस का प्याला लिया और कहा, "इसे पी लो। यह नई वाचा का मेरा लहू है जो कि मैं उंडेलूँगा ताकि परमेश्वर तुम्हारे पापों को क्षमा करे। हर बार इसे पीते समय मेरी याद में इसे करो जो मैं अभी कर रहा हूँ।"

यीशु ने प्याले के बारे में क्या कहा?

उसने कहा, “यह नई वाचा का मेरा लहू है जिसे मैं बहाऊंगा ताकि परमेश्वर तुम्हारे पापों को क्षमा करे।”

38:06

तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, "तुम में से एक जन मुझे पकड़वाएगा।" चेले चौंक गए, और पूछने लगे कि कौन ऐसा काम करेगा। यीशु ने कहा, "मेरा पकड़वाने वाला व्यक्ति वह है जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा देता हूँ।" तब उसने वह रोटी यहूदा को दी।

यीशु ने किसके बारे में कहा था कि वह उसके साथ विश्वासघात करेगा?

यीशु ने कहा कि जिसे वह रोटी देगा, वही उसे पकड़वाएगा।

38:07

उस रोटी को लेने के बाद, यहूदा में शैतान समा गया। यहूदा निकल कर यीशु को गिरफ्तार करने के लिए यहूदी अगुवों की सहायता करने को चला गया। यह रात का समय था।

यीशु से रोटी लेने के बाद यहूदा का क्या हुआ?

शैतान यहूदा में समा गया।

38:08

भोजन के बाद, यीशु और उसके चेले जैतून पर्वत को चले गए। यीशु ने कहा, "तुम सब आज रात मुझे छोड़ दोगे। यह लिखा हुआ है, 'मैं चरवाहे को मारूँगा और सारी भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी।'"

यीशु ने भविष्यवाणी की थी कि उस रात चेलों के साथ क्या होगा?

उन्होंने कहा कि वे सभी उन्हें छोड़ देंगे।

38:09

पतरस ने जवाब दिया, "भले ही बाकी के सब तुझे छोड़ दें, मैं नहीं छोड़ूँगा!" तब यीशु ने पतरस से कहा, "शैतान तुम सब को ले लेना चाहता है, परन्तु हे पतरस, मैंने तेरे लिए प्रार्थना की है कि तू विश्वास से चुक न जाए। फिर भी, आज की रात, मुर्गे के बाँग देने से पहले तू तीन बार इंकार करेगा कि तू मुझे जानता भी नहीं है।"

मुर्गे के बाँग देने से पहले यीशु ने क्या कहा था कि पतरस क्या करेगा?

उसने कहा कि पतरस तीन बार इनकार करेगा कि वह यीशु को जानता है।

38:10

पतरस ने तब यीशु से कहा, "भले ही मैं मर भी जाऊँ, मैं कभी भी तेरा इंकार नहीं करूँगा!" बाकी के सब चेलों ने भी यही कहा।

उनके बारे में यीशु की भविष्यवाणियों का चेलों ने क्या जवाब दिया?

उन्होंने कहा कि वे यीशु को नकारने के बजाय मर जाएंगे।

38:11

तब यीशु अपने चेलों के साथ गतसमनी नाम के स्थान पर गया। यीशु ने अपने चेलों से प्रार्थना करने के लिए कहा ताकि शैतान उनकी परीक्षा न करे। तब यीशु स्वयं प्रार्थना करने के लिए चला गया।

38:12

यीशु ने तीन बार प्रार्थना की, "हे मेरे पिता, यदि सम्भव हो तो कृपा करके यह दुःख का प्याला पीने के लिए मुझे मत दो। परन्तु यदि लोगों के पाप क्षमा किए जाने के लिए कोई और मार्ग नहीं है, तो तेरी ही इच्छा पूरी हो।" यीशु बहुत व्याकुल था और उसका पसीना लहू की बूँदों के समान था। उसे सामर्थ देने के लिए परमेश्वर ने एक स्वर्गदूत को भेजा।

गतसमनी में यीशु ने अपने पिता से क्या प्रार्थना की?

उसने अपने पिता से उसे पीड़ा का प्याला नहीं पिलाने के लिए कहा, लेकिन परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए अगर लोगों के पापों को क्षमा करने का कोई अन्य तरीका नहीं था।

38:13

हर बार प्रार्थना के बाद, यीशु अपने चेलों के पास वापिस आया, परन्तु वे सो गए थे। जब यीशु तीसरी बार लौटा तो यीशु ने कहा, "जाग जाओ! मेरा पकड़वाने वाला यहाँ है।"

यीशु के प्रार्थना करते समय चेले क्या कर रहे थे?

वे सो रहे थे।

38:14

यहूदी अगुवों, सैनिकों, और एक बड़ी भीड़ के साथ यहूदा आया। उन्होंने तलवारें और लाठियाँ ली हुई थीं। यहूदा ने यीशु के पास आकर उससे कहा, "हे गुरु, नमस्कार," और उसे चूम लिया। उसने गिरफ्तार किए जाने वाले व्यक्ति को यहूदी अगुवों पर प्रकट करने के लिए ऐसा किया था। तब यीशु ने कहा, "हे यहूदा, क्या तू एक चुम्बन से मुझे पकड़वा रहा है?"

सैनिकों को कैसे पता चला कि यीशु कौन था?

यहूदा ने यीशु को गिरफ्तार करने के संकेत के रूप में चूमा।

38:15

जब वे सैनिक यीशु को पकड़ रहे थे, तो पतरस ने अपनी तलवार निकाली और महायाजक के एक सेवक का कान काट दिया। यीशु ने कहा, "तलवार को दूर कर! मैं अपने पिता से मेरा बचाव करने के लिए स्वर्गदूतों की एक सेना के लिए विनती कर सकता हूँ। परन्तु मुझे मेरे पिता की बात माननी है।" तब यीशु ने उस व्यक्ति के कान को ठीक कर दिया। तब सारे चेले भाग गए।

यीशु का बचाव करने के लिए पतरस ने क्या किया?

उसने तलवार निकाली और महायाजक के एक सेवक का कान उड़ा दिया।

यीशु ने क्यों कहा कि उसे बचाव के लिए पतरस की ज़रूरत नहीं है?

यीशु ने कहा कि वह पिता से स्वर्गदूतों की एक सेना माँग सकता है।

यीशु के पकड़े जाने के बाद चेलों ने क्या किया?

वे सब भाग गए।

39. यीशु का परीक्षण किया जाता है।

39:01

अब यह आधी रात का समय था। वे सैनिक यीशु को महायाजक के घर ले आए, क्योंकि वह यीशु से सवाल करना चाहता था। पतरस दूर से उनका पीछा कर रहा था। जब सैनिक यीशु को घर में ले गए, तो पतरस बाहर रुक कर स्वयं को आग से गर्म करने लगा।

वह दिन का कौन सा समय था जब यहूदी अगुवों ने यीशु से प्रश्न करना आरम्भ किया?

यह मध्यरात्रि का समय था।

39:02

घर के भीतर, यहूदी अगुवों ने यीशु पर मुकद्दमा चलाया। वे उसके विरुद्ध झूठी बातों को बोलने के लिए बहुत से झूठे गवाहों को लेकर आए। हालाँकि, उनकी बातें एक दूसरे से सहमत नहीं थीं, इसलिए यहूदी अगुवे यह साबित नहीं कर पाए कि वह किसी बात का दोषी था। यीशु ने कुछ नहीं कहा।

यहूदी अगुवे यह साबित क्यों नहीं कर सके कि यीशु किसी भी चीज़ के लिए दोषी था?

झूठे गवाहों के बयान एक दूसरे से सहमत नहीं थे।

39:03

अंत में, महायाजक ने सीधे यीशु की ओर देख कर कहा, "हमें बता कि क्या तू ही जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है?"

आखिर में महायाजक ने यीशु से क्या सवाल किया?

उसने यीशु से पूछा, “क्या तू जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है?”

39:04

यीशु ने कहा, "मैं हूँ, और तुम मुझे परमेश्वर के साथ बैठा हुआ और स्वर्ग से आता हुआ भी देखोगे।" महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़ लिए क्योंकि जो यीशु ने कहा वह उस बात पर बहुत क्रोधित था। वह अन्य अगुवों पर चिल्लाया, "हमें यह बताने के लिए किसी और

गवाह की आवश्यकता नहीं है कि इस मनुष्य ने क्या किया है! तुमने स्वयं ही उसे यह कहते हुए सुन लिया है कि वह परमेश्वर का पुत्र है। उसके बारे में तुम्हारा क्या निर्णय है?"

यीशु ने महायाजक को क्या उत्तर दिया?

यीशु ने कहा, "मैं हूं, और तुम मुझे परमेश्वर के साथ बैठे, और स्वर्ग से आते हुए देखोगे।"

वह कौन सा अपराध था जो महायाजक ने कहा कि यीशु ने किया था?

उसने कहा कि यीशु ने दावा किया था कि वह परमेश्वर का पुत्र है।

39:05

सब यहूदी अगुवों ने महायाजक को जवाब दिया, "वह मरने के योग्य है!" तब उन्होंने यीशु की आँखों पर पट्टी बाँध दी, उस पर थूका, उसे मारा, और उसका मजाक उड़ाया।

39:06

और पतरस, जब वह घर के बाहर प्रतीक्षा कर रहा था। तब एक दासी लड़की ने उसे देखा। उसने उससे कहा, "तू भी यीशु के साथ था!" पतरस ने मना कर दिया। बाद में, किसी अन्य लड़की ने इसी बात को कहा, और पतरस ने फिर से मना कर दिया। अंत में, कुछ लोगों ने कहा, "हम जानते हैं कि तू यीशु के साथ था क्योंकि तुम दोनों गलील से हो।"

यीशु के परीक्षण के दौरान पतरस कहाँ था?

पतरस महायाजक के घर के बाहर प्रतीक्षा कर रहा था।

लोगों ने क्यों सोचा कि पतरस यीशु के साथ था?

पतरस और यीशु दोनों गलील के थे।

39:07

तब पतरस ने कहा, "यदि मैं इस मनुष्य को जानता हूँ तो परमेश्वर मुझे श्राप दे!" तुरन्त ही पतरस के इस तरह शपथ खाने के बाद, एक मुर्गे ने बाँग दी। यीशु ने पीछे मुड़ कर पतरस को देखा।

पतरस ने क्या कहा जब लोगों ने पूछा कि क्या वह यीशु को जानता है?

पतरस ने तीन बार इनकार किया कि वह यीशु को जानता है।

पतरस द्वारा तीसरी बार यीशु का इन्कार करने के तुरंत बाद क्या हुआ?

मुर्गे ने बाँग दी, और यीशु ने मुड़कर पतरस की ओर देखा।

39:08

पतरस वहाँ से चला गया और फूट-फूट कर रोया। उसी समय, यीशु को पकड़वाने वाले यहूदा ने देखा कि यहूदी अगुवों ने यीशु को मृत्युदंड दिया है। यहूदा बहुत दुःखी हो गया और जाकर स्वयं को मार डाला।

यहूदा ने क्या किया जब उसने देखा कि यहूदी नेताओं ने यीशु की निंदा की है?

यहूदा दुःख से भर गया और चला गया और खुद को मार डाला।

39:09

अब उस देश का राज्यपाल पिलातुस था। वह रोम के लिए काम किया करता था। यहूदी अगुवे यीशु को उसके पास लेकर आए। वे चाहते थे कि पिलातुस उसे मृत्युदंड दे और उसे मार डाले। तब पिलातुस ने यीशु से पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?"

यहूदी अगुवे यीशु को रोमी हाकिम पीलातुस के पास क्यों ले गए?

वे चाहते थे कि पीलातुस यीशु की निंदा करे और उसे मार डाले क्योंकि उनके पास स्वयं ऐसा करने का अधिकार नहीं था।

पिलातुस ने यीशु से पहला प्रश्न क्या किया था?

उसने पूछा, “क्या तू यहूदियों का राजा है?”

39:10

यीशु ने जवाब दिया, "तूने सच ही कहा है। परन्तु मेरा राज्य यहाँ पृथ्वी का नहीं है। यदि होता तो मेरे दास मेरे लिए युद्ध करते। मैं पृथ्वी पर परमेश्वर के बारे में सच बताने के लिए आया हूँ। हर एक जन जो सच से प्रेम करता है वह मेरी सुनता है।" पिलातुस ने कहा, "तो सच क्या है?"

यीशु ने क्या कहा कि वह पृथ्वी पर क्यों आया?

यीशु ने कहा कि वह धरती पर परमेश्वर के बारे में सच्चाई बताने आया है।

39:11

यीशु के साथ बात करने के बाद, पिलातुस ने बाहर भीड़ के पास जाकर कहा, "मैं ऐसा कोई कारण नहीं पाता कि यह मनुष्य मार डाले जाने के योग्य हो।" परन्तु यहूदी अगुवों और भीड़ ने चिल्ला कर कहा, "उसे क्रूस पर चढ़ा दो!" पिलातुस ने जवाब दिया, "वह कुछ भी गलत करने का दोषी नहीं है।" परन्तु वे और भी ऊँची आवाज में चिल्लाने लगे। तब पिलातुस ने तीसरी बार कहा, "वह दोषी नहीं है!"

पिलातुस ने भीड़ से कितनी बार कहा कि यीशु दोषी नहीं था?

उसने तीन बार कहा कि यीशु दोषी नहीं था।

39:12

पिलातुस डर गया कि वह भीड़ दंगे आरम्भ कर देगी, इसलिए वह अपने सैनिकों द्वारा यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए मान गया। रोमी सैनिकों ने यीशु को कोड़े लगाए, और उसको राजसी वस्त्र पहनाया, और उसके सिर पर काँटों से बना मुकुट रखा। तब वे यह कह कर उसका मजाक उड़ाने लगे, "देखो, यहूदियों का राजा!"

यदि वह विश्वास करता था कि यीशु निर्दोष है, तो पिलातुस ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की अनुमति क्यों दी?

पिलातुस डर गया कि भीड़ दंगा करने लगेगी।

रोमन सैनिकों ने यीशु के साथ कैसा व्यवहार किया?

उन्होंने यीशु को कोड़े मारे, और उसे राजकीय वस्त्र और काँटों का मुकुट पहनाया, और उसका उपहास किया।

40. यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाता है

40:01

यीशु का ठट्ठा करने के बाद, सैनिक उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले गए। उन्होंने उस क्रूस को उसी से उठवाया जिस पर उसे मरना था।

जब सिपाहियों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिथे ले गए, तो उन्होंने उसे क्या ढोया?

उन्होंने उसे वह क्रूस उठाने को कहा जिस पर वह मरेगा।

40:02

वे सैनिक यीशु को उस स्थान पर लेकर आए जो "खोपड़ी" कहलाता है और उसके हाथों और पैरों को क्रूस पर ठोक दिया। परन्तु यीशु ने कहा, "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।" उन्होंने एक तख्ती को भी उसके सिर के ऊपर टांग दिया। उस पर लिखा था, "यहूदियों का राजा।" पिलातुस ने उनसे यही लिखने के लिए कहा था।

उस स्थान का नाम क्या था जहाँ यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था?

इसे 'खोपड़ी' कहा जाता था।

सैनिकों ने यीशु को क्रूस पर कैसे लटकाया?

उन्होंने उसके हाथ और पैर को क्रूस पर ठोंक दिया।

यीशु ने उन लोगों के लिए क्या प्रार्थना की जो उसे क्रूस पर चढ़ा रहे थे?

उसने प्रार्थना की, “हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।”

यीशु के सिर के ऊपर टंगी तख्ती पर क्या लिखा था?

तख्ती पर लिखा था, "यहूदियों का राजा।"

40:03

तब सैनिकों ने यीशु के कपड़ों के लिए चिट्ठियाँ डालीं। जब उन्होंने ऐसा किया तो उन्होंने उस भविष्यद्वाणी को पूरा किया जो कहती थी, "उन्होंने मेरे वस्त्रों को आपस में बाँट लिया, और मेरे कपड़ों के लिए चिट्ठियाँ डालीं।"

सैनिकों ने यीशु के कपड़े कैसे बाँटे?

जैसा कि भविष्यवाणी की गई थी, वे उसके वस्त्र के लिए जुआ खेलने लगे।

40:04

वहाँ पर दो डाकू भी थे, जिनको सैनिकों ने उसी समय पर क्रूस पर चढ़ाया था। उन्होंने उनको यीशु की दोनों तरफ रखा था। उनमें से एक डाकू ने यीशु का मजाक उड़ाया, परन्तु दूसरे ने कहा, "क्या तू नहीं डरता कि परमेश्वर तुझे दंड देगा? हम बहुत से बुरे कामों को करने के दोषी हैं, परन्तु यह मनुष्य निर्दोष है।" फिर उसने यीशु से कहा, "जब तू अपने राज्य में आए तो कृपया मुझे याद रखना।" यीशु ने जवाब दिया, "आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।"

जिस डाकू ने यीशु का उपहास नहीं किया, उसने उससे क्या करने को कहा?

उसने यीशु से अपने राज्य में उसे याद करने के लिए कहा।

डाकू के अनुरोध का यीशु के पास क्या उत्तर था?

यीशु ने कहा, "आज, तुम मेरे साथ स्वर्गलोक में रहोगे।"

40:05

यहूदी अगुवों और भीड़ के अन्य लोगों ने यीशु का मजाक उड़ाया। उन्होंने उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस से नीचे उतर आ और स्वयं को बचा ले! तब हम तुझ पर विश्वास करेंगे।"

भीड़ यीशु से यह साबित करने के लिए क्या चाहती थी कि वह परमेश्वर का पुत्र है?

उन्होंने उससे कहा कि वह क्रूस पर से उतर आए और अपने आप को बचा ले।

40:06

तब उस सम्पूर्ण देश का आकाश पूरी तरह से काला हो गया, भले ही वह दिन के मध्य का समय था। यह दोपहर के समय काला हुआ था और तीन घंटे तक ऐसा ही रहा था।

दिन के मध्य में आकाश में कौन सी असामान्य घटना घटी?

दोपहर को एकदम अंधेरा हो गया और तीन घंटे तक अंधेरा बना रहा।

40:07

तब यीशु ने पुकार कर कहा, "पूरा हुआ! हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।" तब उसने अपने सिर को झुकाया और अपने प्राण को त्याग दिया। जब वह मरा तो एक भूकम्प आया। वह बड़ा पर्दा जो परमेश्वर की उपस्थिति से लोगों को अलग करता था ऊपर से नीचे की ओर फट कर दो भाग हो गया।

क्रूस पर से यीशु के अंतिम शब्द क्या थे?

यीशु ने पुकार कर कहा, “पूरा हुआ! हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं।”

यीशु के मरने के तुरंत बाद कौन-सी चमत्कारी घटनाएँ घटीं?

एक भूकम्प हुआ और मन्दिर का बड़ा पर्दा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया।

40:08

अपनी मृत्यु के द्वारा, यीशु ने लोगों के लिए परमेश्वर के पास आने का मार्ग खोल दिया। जब यीशु की निगरानी करने वाले एक सैनिक ने जो कुछ हुआ था यह सब देखा तो उसने कहा, "निश्चित रूप से, यह मनुष्य निर्दोष था। यह परमेश्वर का पुत्र है।"

यीशु ने अपनी मृत्यु के द्वारा क्या पूरा किया?

यीशु ने लोगों के लिए परमेश्वर के पास आने का मार्ग खोल दिया।

40:09

तब यूसुफ और नीकुदेमुस नाम के दो यहूदी अगुवे आए। वे विश्वास करते थे कि यीशु ही मसीह था। उन्होंने पिलातुस से यीशु के शरीर को माँगा। उन्होंने उसके शरीर को कपड़े में लपेटा। तब वे उसे एक चट्टान में से काट कर बनाई गई कब्र में ले गए और उसके भीतर रख दिया। तब उन्होंने उस कब्र के द्वार को बंद करने के लिए एक बड़े पत्थर को लुढ़का दिया।

किसने पीलातुस से यीशु का शव माँगा?

यूसुफ और नीकुदेमुस नाम के दो यहूदी नेताओं ने उसका शव माँगा।

उन्होंने शरीर के साथ क्या किया?

उन्होंने शव को कपड़े में लपेटा और चट्टान को काटकर बनाई गई एक कब्र में रख दिया, और फिर कब्र के सामने एक बड़ा पत्थर लुढ़का दिया।

41. परमेश्वर यीशु को मरे हुओं में से जिलाया

41:01

सैनिकों द्वारा यीशु को क्रूस पर चढ़ा देने के बाद, यहूदी अगुवों ने पिलातुस से कहा, "उस झूठे, यीशु ने कहा था कि वह तीन दिनों के बाद मरे हुओं में से जी उठेगा। किसी को यह निश्चित करने के लिए कब्र की निगरानी करनी होगी कि उसके चेले उसके शरीर को चुरा कर न ले जाएँ। यदि वे ऐसा करते हैं तो वे कहेंगे कि वह मरे हुओं में से जी उठा है।"

यीशु ने कहा कि उसकी मृत्यु के तीन दिन बाद क्या होगा?

वह मरे हुओं में से जी उठेगा।

क्या यहूदी अगुवों को विश्वास था कि यीशु फिर से जी उठेगा?

नहीं, उन्हें लगा कि वह झूठ बोल रहा है।

यहूदी अगुवों को क्या डर था कि चेले क्या करेंगे?

उन्होंने सोचा कि चेले शरीर को चुरा लेंगे और कहेंगे कि यीशु मरे हुओं में से जी उठे हैं।

41:02

पिलातुस ने कहा, "कुछ सैनिकों को ले जाओ, और जैसे तुम कर सको वैसे कब्र की निगरानी करो।" इसलिए उन्होंने उस कब्र के प्रवेशद्वार के पत्थर पर एक मोहर लगा दी। उन्होंने यह निश्चित करने के लिए वहाँ सैनिकों को भी बैठा दिया कि कोई भी उसके शरीर को चुरा न सके।

यहूदी अगुवों ने यीशु की कब्र की सुरक्षा के लिए क्या किया?

उन्होंने कब्र की रखवाली के लिए सैनिकों को रखा और कब्र के द्वार पर पत्थर पर मुहर लगा दी।

41:03

यीशु के मरने के बाद का दिन सब्त का दिन था। कोई भी सब्त के दिन काम नहीं कर सकता था, इसलिए यीशु का कोई भी मित्र कब्र पर नहीं आया था। परन्तु सब्त के बाद के दिन, सुबह बहुत भोर को, कुछ स्त्रियाँ यीशु की कब्र पर जाने के लिए तैयार हुईं। वे उसके शरीर पर और भी मसालों को लगाना चाहती थीं।

स्त्रियाँ यीशु की कब्र पर कब गईं?

सब्त के दिन के बाद भोर को वे वहाँ बहुत सवेरे गए।

41:04

उन स्त्रियों के पहुँचने से पहले, कब्र पर एक बड़ा भूकम्प हुआ। स्वर्ग से एक स्वर्गदूत ने आकर उस पत्थर को लुढ़का दिया जो कब्र के प्रवेशद्वार को ढाँके हुए था और उस पर बैठ गया। यह स्वर्गदूत उजियाले के समान चमक रहा था। कब्र पर जो सैनिक थे उन्होंने उसे देखा। वे इतना डर गए थे कि मृतकों के समान भूमि पर गिर गए।

महिलाओं के वहाँ पहुँचने से पहले कब्र पर कौन-सी चमत्कारी घटनाएँ घटीं?

एक भूकंप हुआ और एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ, उसने पत्थर को लुढ़का दिया और उस पर बैठ गया।

उस स्वर्गदूत को देखकर सैनिकों ने क्या किया?

वे डर गए और मरे हुए आदमियों की तरह ज़मीन पर गिर पड़े।

41:05

जब वे स्त्रियाँ कब्र पर पहुँचीं तो उस स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "मत डरो। यीशु यहाँ नहीं है। वह मरे हुओं में से जी उठा है, जैसा कि उसने कहा था कि वह जी उठेगा! कब्र में खोजो और देखो।" उन स्त्रियों ने कब्र के भीतर और जहाँ यीशु का शरीर रखा हुआ था वहाँ खोज की और देखा कि उसका शरीर वहाँ नहीं था!

कब्र पर पहुँचने पर स्वर्गदूत ने स्त्रियों से क्या कहा?

स्वर्गदूत ने उनसे कहा कि वे डरें नहीं, क्योंकि यीशु मरे हुओं में से जी उठे हैं। स्वर्गदूत ने उन्हें कब्र में देखने और देखने के लिए कहा।

41:06

तब उस स्वर्गदूत ने उन स्त्रियों से कहा, "जाकर उसके चेलों को बताओ, 'यीशु मरे हुओं में से जी उठा है और वह तुम्हारे आगे-आगे गलील को जाएगा।'"

स्वर्गदूत ने स्त्रियों से चेलों से क्या कहने को कहा?

उसने उनसे कहा कि वे चेलों से कहें कि यीशु मरे हुओं में से जी उठा है, और वह उन से पहिले गलील को जाएगा।

41:07

वे स्त्रियाँ अचम्भित हुईं और बहुत आनन्दित हुईं। वे चेलों को यह शुभ संदेश सुनाने के लिए दौड़ीं।

41:08

जब वे स्त्रियाँ चेलों को यह शुभ संदेश बताने के लिए अपने मार्ग पर थीं, तो यीशु उन पर प्रकट हुआ। वे उसके पैरों पर गिर पड़ीं। तब यीशु ने कहा, "मत डरो। जाकर मेरे चेलों से गलील जाने को कहो। वे वहाँ मुझे देखेंगे।"

शिष्यों से बात करने जा रही स्त्रियों को कौन दिखाई दिया?

यीशु उन्हें दिखाई दिए।

यीशु को देखकर स्त्रियों ने क्या किया?

वे उनके चरणों में गिर पड़े।

42. यीशु स्वर्ग को लौट जाता है

42:01

जिस दिन परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से जीवित किया था, उसके दो चेले पास के गाँव में जा रहे थे। चलते हुए वे यीशु के साथ जो हुआ था, उसके बारे में बातें कर रहे थे। उनको आशा थी कि वह मसीह था, परन्तु तब भी वह मार डाला गया था। अब वे स्त्रियाँ कहती हैं कि वह फिर से जीवित हो गया है। वे नहीं जानते थे कि किस बात पर विश्वास करना है।

रास्ते में चलते समय वे दोनों शिष्य किस बारे में बात कर रहे थे?

वे उस बारे में बात कर रहे थे जो यीशु के साथ हुआ था।

42:02

यीशु ने उनके पास आकर उनके साथ चलना आरम्भ किया, परन्तु वे उसे पहचान नहीं पाए। उसने पूछा कि वे किस बारे में बात कर रहे थे। उन्होंने उसे पिछले दिनों में यीशु के साथ हुई सारी घटना के बारे में बताया। उन्होंने सोचा कि वे किसी परदेशी से बातें कर रहे थे जो नहीं जानता था कि यरूशलेम में क्या हुआ था।

दो शिष्यों ने सोचा कि यीशु कौन था जब वह सड़क पर उनके पास आया?

उन्होंने सोचा कि वह कोई परदेशी है जो नहीं जानता कि यरूशलेम में क्या हुआ था।

42:03

तब यीशु ने उनको समझाया कि परमेश्वर का वचन मसीह के बारे में क्या कहता है। बहुत पहले, भविष्यद्वक्ताओं ने कहा था कि बुरे लोग मसीह को पीड़ित करेंगे और मार डालेंगे। परन्तु भविष्यद्वक्ताओं ने यह भी कहा था कि वह तीसरे दिन जी उठेगा।

भविष्यवक्ताओं ने कहा था कि मसीहा का क्या होगा?

उन्होंने कहा था कि मसीह पीड़ित होगा और मर जाएगा, लेकिन तीसरे दिन फिर से जी उठेगा.

42:04

जब वे उस नगर में पहुँचे जहाँ वे दो जन ठहरना चाहते थे, तब तक लगभग शाम हो गई थी। उन्होंने यीशु को उनके साथ ठहरने के लिए आमंत्रित किया, अतः वह उनके साथ एक घर में गया। अपने शाम के भोजन को खाने के लिए वे बैठ गए। यीशु ने एक रोटी को लेकर उसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद दिया, और फिर उसे तोड़ा। अचानक से, उन्होंने जान लिया कि वह यीशु था। परन्तु उसी समय, वह उनकी आँखों से ओझल हो गया।

यीशु क्या कर रहा था जब दो शिष्यों ने उसे पहचान लिया?

वह एक रोटी तोड़ रहा था और उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दे रहा था।

42:05

उन दो जनों ने एक दूसरे से कहा, "वह यीशु था! इसीलिए जब उसने हमें परमेश्वर के वचन को समझाया था तो हम बहुत उत्साहित थे!" तुरन्त ही, वे निकल कर वापिस यरूशलेम को गए। जब वे पहुँचे तो उन्होंने चेलों को बताया, "यीशु जीवित है! हमने उसे देखा है!"

यीशु के चले जाने के बाद दोनों शिष्यों ने क्या किया?

वे यरूशलेम लौट आए और अन्य शिष्यों को बताया कि यीशु जीवित थे और उन्होंने उन्हें देखा था।

42:06

जब चेले बात कर रहे थे, यीशु अचानक से उस कमरे में उनके साथ प्रकट हुआ। उसने कहा, "तुम्हें शान्ति मिले!" चेलों ने सोचा कि वह कोई भूत था, परन्तु यीशु ने कहा, "तुम क्यों डरते हो? तुम यह क्यों नहीं सोचते हो कि यह सचमुच में मैं, यीशु हूँ? मेरे हाथों और पैरों को देखो। भूतों के पास ऐसा शरीर नहीं होता जैसा मेरे पास है।" यह दिखाने के लिए कि वह कोई भूत नहीं था, उसने खाने के लिए कुछ माँगा। उन्होंने उसे मछली का एक टुकड़ा दिया, और उसने उसे खा लिया।

यीशु ने शिष्यों को कैसे प्रमाणित किया कि वह भूत नहीं था?

उसने मछली का एक टुकड़ा लिया और उसे खा लिया।

42:07

यीशु ने कहा, "मेरे बारे में परमेश्वर का वचन जो कुछ भी कहता है वह घटित होगा। मैंने तुमको बता दिया था कि इसका होना अवश्य है।" तब यीशु ने उनको परमेश्वर का वचन अच्छे से समझाया। उसने कहा, "बहुत पहले भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा था कि मुझ, मसीह को दुःख उठाना होगा, मरना होगा और फिर तीसरे दिन मृतकों में से जी उठना होगा।"

किस बात ने चेलों को परमेश्वर के वचन को समझने में समर्थ किया?

यीशु ने उन्हें परमेश्वर के वचन की बेहतर समझ दी।

42:08

"उन भविष्यद्वक्ताओं ने यह भी लिखा था कि मेरे चेले परमेश्वर के वचन की घोषणा करेंगे। वे हर एक को पश्चाताप करने के लिए बताएँगे। यदि वे ऐसा करते हैं तो परमेश्वर उनके पापों को क्षमा करेगा। मेरे चेले इस सन्देश का प्रचार करना यरूशलेम से आरम्भ करेंगे। तब वे सब जगह सब जातियों में जाएँगे। तुम लोग मेरी हर एक बात और काम के गवाह हो जो मैंने कहा और किया था, और उस सब के भी जो मेरे साथ हुआ।"

वह संदेश क्या था जिसका यीशु के शिष्यों को प्रचार करना था?

वे घोषणा करते थे कि सभी को पश्चाताप करना चाहिए ताकि परमेश्वर उनके पापों को क्षमा कर दे।

इस संदेश का प्रचार करने के लिए यीशु के शिष्य कहाँ थे?

वे पहले यरूशलेम में इसका प्रचार करेंगे, और फिर हर जगह सब लोगों के समूहों में जाएँगे।

42:09

अगले चालीस दिनों के दौरान, यीशु अपने चेलों पर कई बार प्रकट हुआ। एक बार तो वह एक ही समय पर 500 से अधिक लोगों पर प्रकट हुआ! उसने अपने चेलों पर कई तरीकों से साबित किया कि वह जीवित था, और उसने उनको परमेश्वर के राज्य के बारे में शिक्षा दी।

यीशु कितने समय तक चेलों को दिखाई देता रहा?

वह उन्हें 40 दिनों तक दिखाई दिया।

इस दौरान यीशु को देखने वाले शिष्यों का सबसे बड़ा समूह कितना बड़ा था?

उन्होंने एक ही समय में 500 से अधिक शिष्यों को दर्शन दिए।

42:10

यीशु ने अपने चेलों से कहा, "परमेश्वर ने मुझे स्वर्ग और पृथ्वी के हर एक जन पर शासन करने का अधिकार दिया है। इसलिए अब मैं तुम से कहता हूँ: जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ। ऐसा करने के लिए, तुमको उन्हें पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा देना है। जो कुछ भी मैंने तुमको आज्ञा दी है उन सब बातों को मानना भी तुम्हे उनको सिखाना है। याद रखो, मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगा।"

यीशु ने अपने चेलों को जाकर क्या करने की आज्ञा दी?

उसने उनसे कहा कि जाओ और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और जो कुछ उस ने उन्हें आज्ञा दी है उसका पालन करना सिखाओ।

42:11

यीशु के मरे हुओं में से जी उठने के चालीस दिनों के बाद, उसने अपने चेलों से कहा, "जब तक कि मेरा पिता तुम्हें सामर्थ नहीं देता है तब तक यरूशलेम में ठहरे रहो। वह तुम पर पवित्र आत्मा भेजने के द्वारा ऐसा करेगा।" तब यीशु स्वर्ग में चला गया, और एक बादल ने उसे उनकी दृष्टि से छिपा लिया। स्वर्ग में यीशु सब चीजों पर शासन करने परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया।

यीशु ने चेलों को यरूशलेम में प्रतीक्षा करने के लिए क्यों कहा?

उन्हें तब तक प्रतीक्षा करनी थी जब तक कि पिता उन्हें सामर्थ न दे देता और जब तक पवित्र आत्मा उन पर उतरता।

अपने पुनरुत्थान के 40 दिन बाद यीशु कहाँ गया?

वह स्वर्ग तक गया।

यीशु ने स्वर्ग में आकर क्या किया?

वह सब चीज़ों पर शासन करने के लिए परमेश्वर के दाहिने हाथ जा बैठा।

43. कलीसिया का आरम्भ

43:01

यीशु के स्वर्ग लौट जाने के बाद, चेले यरूशलेम में ही रुके जैसा कि यीशु ने उनको करने का आदेश दिया था। वहाँ के विश्वासी लोग लगातार एक साथ प्रार्थना करने के लिए इकट्ठे हुआ करते थे।

यरूशलेम में प्रतीक्षा करते समय चेले क्या कर रहे थे?

वे लगातार प्रार्थना करने के लिए इकट्ठा होते थे।

43:02

प्रति वर्ष, फसह के पर्व के 50 दिनों के बाद, यहूदी लोग पिन्तेकुस्त नाम के एक महत्वपूर्ण दिन को मनाया करते थे। पिन्तेकुस्त वह समय था जब यहूदी लोग गेहूँ की कटाई के पर्व को मनाया करते थे। सारे संसार से यहूदी लोग पिन्तेकुस्त के दिन को एक साथ मनाने के लिए यरूशलेम में आए थे। इस वर्ष, पिन्तेकुस्त मनाने का समय यीशु के स्वर्ग को चले जाने के लगभग एक सप्ताह के बाद आया था।

यहूदियों ने पिन्तेकुस्त कब मनाया?

वे फसह के पर्व के 50 दिन बाद हर साल पिन्तेकुस्त मनाते थे।

43:03

जिस समय सारे विश्वासी लोग एक साथ इकट्ठा थे, तो जिस घर में वे थे अचानक से वह तेज हवा की आवाज से भर गया। तब आग की लपटों के जैसा दिखने वाला कुछ सब विश्वासियों के सिरों के ऊपर प्रकट हुआ। वे सब पवित्र आत्मा से भर गए और उन्होंने अन्य भाषाओं में परमेश्वर की स्तुति की। ये वह भाषाएँ थीं जिनको बोलने के लिए उनको पवित्र आत्मा ने सक्षम किया था।

यीशु के मृतकों में से जी उठने के बाद पिन्तेकुस्त के दौरान विश्वासियों के साथ क्या हुआ?

तेज हवा जैसी आवाज थी, और उनके सिर पर आग की लपट जैसी कोई चीज दिखाई दे रही थी। वे पवित्र आत्मा से भर गए और अन्य भाषाओं में बोलने लगे।

43:04

जब यरूशलेम में रहने वाले लोगों ने उस शोर को सुना, तो वे भीड़ के रूप में यह देखने के लिए एक साथ आए कि क्या हो रहा था। उन्होंने विश्वासियों को परमेश्वर द्वारा किए गए बड़े-बड़े कामों की घोषणा करते हुए सुना। वे विस्मित थे क्योंकि वे उन कामों को अपनी ही भाषाओं में सुन रहे थे।

भीड़ में लोग क्यों चकित थे?

भीड़ में लोग कई अलग-अलग देशों से थे, लेकिन उनमें से प्रत्येक ने शिष्यों को अपनी मूल भाषा में बोलते हुए सुना।

43:05

इनमें से कुछ लोगों ने कहा कि वे चेले नशे में थे। परन्तु पतरस खड़ा हुआ और उनसे बोला, "मेरी बात सुनो! ये लोग नशे में नहीं हैं! इसके बजाए, जो तुम देखते हो वह वही है जो योएल भविष्यद्वक्ता ने कहा था कि होगा: परमेश्वर ने कहा, 'अंत के दिनों में, मैं अपना आत्मा उंडेलूँगा।'"

कुछ लोगों ने सोचा कि शिष्यों के इस तरह से बात करने का क्या कारण था?

उन्हें लगा कि शिष्य नशे में हैं।

पतरस ने क्या कहा कि वे इन भाषाओं को बोल रहे थे?

पतरस ने कहा कि परमेश्वर अपनी आत्मा उंडेल रहा है।

43:06

"हे इस्राएली पुरुषों, यीशु एक ऐसा मनुष्य था जिसने यह दिखाने के लिए कि वह कौन था बहुत से अनोखे काम किए थे। उसने परमेश्वर के सामर्थ से बहुत से अद्भुत कामों को किया था। तुम यह जानते हो, क्योंकि तुमने इन कामों को देखा है। परन्तु तुम ने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया!"

पतरस ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए किसे जिम्मेदार बताया?

उन्होंने कहा कि भीड़ में शामिल लोगों ने ईसा को सूली पर चढ़ा दिया।

43:07

"यीशु मर गया परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवित कर दिया। इसने उस बात को पूरा कर दिया जिसे एक भविष्यद्वक्ता ने लिखा था: 'तू अपने पवित्र जन को कब्र में सड़ने नहीं देगा।' हम गवाह है कि परमेश्वर ने यीशु को फिर से जीवित कर दिया।"

पतरस ने कैसे कहा कि यीशु फिर से जीवित हो गया?

परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया।

43:08

"परमेश्वर पिता ने अब यीशु को अपनी दाहिनी ओर बैठा कर उसे आदर दिया है। और यीशु ने हमारे लिए पवित्र आत्मा भेजा है जैसी कि उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह भेजेगा। पवित्र आत्मा ही उन कामों को होने दे रहा है जिनको तुम देख रहे और सुन रहे हो।"

किस वजह से चेले दूसरी भाषाओं में बोल पाए?

पवित्र आत्मा ने उन्हें अन्य भाषाओं में बोलने के योग्य बनाया।

43:09

"तुम ने उस मनुष्य, यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया। परन्तु निश्चित रूप से जान लो कि परमेश्वर ने यीशु को सब चीज़ों पर प्रभु और मसीह दोनों ठहराया है!"

वे दो बातें क्या थीं जो पतरस ने कही थीं कि परमेश्वर ने यीशु को बनाया?

वह परमेश्वर और मसीहा बन गया।

43:10

पतरस की सुनने वाले लोग उसके द्वारा कही गई बातों से अंदर तक हिल गए थे। इसलिए उन्होंने पतरस और चेलों से पूछा, "हे भाइयों, हमें क्या करना चाहिए?"

पतरस के संदेश का लोगों ने क्या जवाब दिया?

वे बहुत प्रभावित हुए और बोले, “भाइयो, हमें क्या करना चाहिए?”

43:11

पतरस ने उनको जवाब दिया, "तुम में से हर एक अपने पापों के लिए पश्चाताप करे ताकि परमेश्वर तुम्हारे पापों को क्षमा करे, और यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले। तब वह तुमको वरदान स्वरूप पवित्र आत्मा भी देगा।"

पतरस ने लोगों से क्या करने को कहा?

उसने उनसे कहा कि उन्हें अपने पापों को क्षमा करने के लिए परमेश्वर की आवश्यकता है, इसलिए उन्हें पश्चाताप करना चाहिए और यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लेना चाहिए।

43:12

पतरस ने जो कहा उस पर लगभग 3,000 लोगों ने विश्वास किया और यीशु के चेले बन गए। उन्होंने बपतिस्मा लिया और यरूशलेम की कलीसिया का हिस्सा बन गए।

उस दिन कितने लोगों ने विश्वास किया और बपतिस्मा लिया?

लगभग 3,000 लोगों ने विश्वास किया।

43:13

जब प्रेरितों ने उनको शिक्षाएँ दीं तो विश्वासियों ने लगातार सुना। वे अक्सर मिला करते थे और एक साथ भोजन किया करते थे, और उन्होंने अक्सर एक दूसरे के लिए प्रार्थना की। उन्होंने मिल कर परमेश्वर की स्तुति की और जो कुछ भी उनके पास था उन्होंने एक दूसरे के साथ साझा किया। नगर का हर एक व्यक्ति उनके लिए अच्छा विचार रखता था। प्रतिदिन, अधिक से अधिक लोग विश्वासी बनते गए।

शिष्यों ने अपना समय क्या करने में व्यतीत किया?

शिष्यों ने प्रेरितों की शिक्षा को लगातार सुना, एक साथ समय बिताया, एक साथ खाया, एक दूसरे के साथ प्रार्थना की, एक साथ परमेश्वर की स्तुति की, और सब कुछ साझा किया।

44. पतरस और यूहन्ना द्वारा एक भिखारी को चंगा करना

44:01

एक दिन, पतरस और यूहन्ना मंदिर में गए। एक अपंग व्यक्ति भीख माँगने के लिए फाटक पर बैठा हुआ था।

अपंग व्यक्ति को पतरस और यूहन्ना से क्या उम्मीद थी कि वह उसे देंगे?

वह पैसे की भीख मांग रहा था।

44:02

पतरस ने उस लंगड़े व्यक्ति की ओर देखा और कहा, "मेरे पास तुझे देने के लिए पैसा तो नहीं है। परन्तु जो मेरे पास है वह मैं तुझे देता हूँ। यीशु के नाम से, उठ और चल-फिर!"

पतरस ने लंगड़े को पैसे के बदले क्या दिया?

यीशु के नाम पर, पतरस ने उससे कहा कि उठो और चलो।

44:03

तुरन्त ही, परमेश्वर ने उस लंगड़े व्यक्ति को चंगा कर दिया। उसने इधर-उधर चलना और कूदना, और परमेश्वर की स्तुति करना आरम्भ कर दिया। मंदिर के आँगन में उपस्थित लोग अचम्भित थे।

44:04

शीघ्र ही लोगों की एक भीड़ उस व्यक्ति को देखने के लिए आई जो चंगा हो गया था। पतरस ने उनसे कहा, "यह मनुष्य ठीक है, परन्तु इस बात पर अचम्भित मत होना। हम ने इसे अपनी शक्ति से चंगा नहीं किया है, या इसलिए नहीं कि हम परमेश्वर का आदर करते हैं। बल्कि, वह यीशु है जिसने इस व्यक्ति को अपनी शक्ति से चंगा किया है, क्योंकि हम यीशु पर भरोसा करते हैं।"

पतरस ने क्या कहा कि अपाहिज आदमी चंगा हो गया?

उसने कहा कि यीशु ने अपनी शक्ति से उस व्यक्ति को चंगा किया क्योंकि पतरस और यूहन्ना ने यीशु पर विश्वास किया था।

44:05

"वह तुम ही हो जिन्होंने उस रोमी राज्यपाल को यीशु को मार डालने के लिए कहा था। तुमने उसे मार डाला जो सब को जीवन देता है। परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवित किया। तुमने नहीं समझा कि तुम क्या कर रहे थे, परन्तु जब तुम उन कामों को कर रहे थे, तो जो भविष्यद्वक्ताओं ने कहा था वह पूरा हुआ। उन्होंने कहा था कि मसीह दुःख उठाएगा और मर जाएगा। परमेश्वर ने इसे इस तरीके से होने दिया। इसलिए अब, पश्चाताप करो और परमेश्वर की ओर फिरो, ताकि वह तुम्हारे पापों को धोकर साफ कर दे।"

पतरस ने किसने कहा कि यीशु को मार डाला?

उन्होंने कहा कि भीड़ में शामिल लोगों ने रोमी गवर्नर से यीशु को मारने के लिए कहा।

जब लोगों ने यीशु को मार डाला, तो वे कौन-सी भविष्यवाणियाँ पूरी करते हैं?

भविष्यवक्ताओं ने कहा कि मसीह पीड़ित होगा और मर जाएगा।

पतरस ने लोगों से क्या कहा कि उन्हें क्या करना चाहिए?

उन्हें पश्चाताप करना चाहिए और परमेश्वर की ओर मुड़ना चाहिए, ताकि वह उनके पापों को धो दे।

44:06

जब मंदिर के अगुवों ने पतरस और यूहन्ना को सुना, तो वे बहुत घबरा गए। इसलिए उन्होंने उनको गिरफ्तार करके बंदीगृह में डाल दिया। परन्तु जो पतरस ने कहा था उस पर बहुत से लोगों ने विश्वास किया। यीशु पर विश्वास करने वालों की संख्या बढ़ कर लगभग 5,000 हो गई।

पतरस के संदेश के परिणामस्वरूप कितने लोगों ने यीशु पर विश्वास किया?

लगभग 5,000 पुरुषों ने विश्वास किया।

44:07

अगले दिन, वे यहूदी अगुवे पतरस और यूहन्ना को महायाजक और अन्य धार्मिक अगुवों के सामने लेकर आए। वे उस व्यक्ति को भी लेकर आए जो अपंग था। उन्होंने पतरस और यूहन्ना से पूछा, "किस अधिकार से तुमने उस अपंग व्यक्ति को चंगा किया?"

44:08

पतरस ने जवाब दिया, "यह व्यक्ति जो तुम्हारे सामने खड़ा है उसे यीशु मसीह की सामर्थ के द्वारा चंगा किया गया है। तुमने यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया, परन्तु परमेश्वर ने उसे फिर से जीवित कर दिया! तुमने उसे अस्वीकार कर दिया, परन्तु यीशु के सामर्थ के माध्यम के अलावा उद्धार पाने का कोई दूसरा मार्ग नहीं है!"

पतरस ने क्या कहा कि बचने का एकमात्र तरीका क्या है?

उन्होंने कहा कि बचने का एकमात्र तरीका यीशु की शक्ति है।

44:09

वे अगुवे हैरान थे कि पतरस और यूहन्ना ने बहुत साहसी रूप से बात की थी। उन्होंने देखा कि ये साधारण पुरुष थे जो कि अनपढ़ थे। परन्तु फिर उनको याद आया कि ये पुरुष यीशु के साथ रहे थे। इसलिए उन्होंने उनसे कहा, "हम तुमको बहुत अधिक दंड देंगे यदि तुम इस मनुष्य यीशु के बारे में लोगों को कोई और संदेश देते हो।" ऐसी बहुत सी बातें कहने के बाद, उन्होंने पतरस और यूहन्ना को जाने दिया।

पतरस और यूहन्ना के प्रचार से यहूदी अगुवे क्यों चकित हुए?

पतरस और यूहन्ना साधारण, अशिक्षित पुरुष थे।

यहूदी अगुवों ने अंततः पतरस और यूहन्ना के साथ क्या करने का निर्णय लिया?

उन्हें धमकाया और फिर जाने दिया।

45.स्तिफनुस और फिलिप्पुस

45:01

प्रथम मसीही अगुवों के बीच में स्तिफनुस नाम का एक पुरुष था। सब लोग उसका आदर करते थे। पवित्र आत्मा ने उसे बहुत सामर्थ और बुद्धि प्रदान की थी। स्तिफनुस ने बहुत से चमत्कार किए थे। जब उसने यीशु पर भरोसा करने के बारे में उनको शिक्षा दी तो बहुत से लोगों ने उस पर विश्वास किया।

हम स्तिफनुस के बारे में क्या सीखते हैं?

सब उसका आदर करते थे, और पवित्र आत्मा ने उसे बहुत सामर्थ्य और बुद्धि दी।

45:02

एक दिन, स्तिफनुस यीशु के बारे में शिक्षा दे रहा था, और कुछ ऐसे यहूदी आए जिन्होंने यीशु पर विश्वास नहीं किया था और उसके साथ वाद-विवाद करना आरम्भ कर दिया। वे बहुत क्रोधित हो गए, इसलिए वे धार्मिक अगुवों के पास गए और उसके बारे में झूठ बोला। उन्होंने कहा, "हमने स्तिफनुस को मूसा और परमेश्वर के बारे में बुरी बातें बोलते सुना है!" इसलिए धार्मिक अगुवों ने स्तिफनुस को गिरफ्तार कर लिया और उसे महायाजक और यहूदियों के अन्य अगुवों के सामने लेकर आए। और भी झूठे गवाह आए और उन्होंने स्तिफनुस के बारे में झूठ बोला।

कुछ यहूदियों ने स्तिफनुस पर कौन-सा झूठा आरोप लगाया?

उन्होंने कहा कि उन्होंने स्तिफनुस को मूसा और परमेश्वर के विषय में बुरी बातें कहते सुना।

45:03

महायाजक ने स्तिफनुस से पूछा, "क्या यह लोग तेरे बारे में सच कह रहे हैं?" स्तिफनुस ने महायाजक को जवाब देने के लिए बहुत सी बातों को बोलना आरम्भ कर दिया। उसने कहा कि अब्राहम के समय से यीशु के समय तक परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों के लिए बहुत से अनोखे काम किए हैं। परन्तु लोगों ने हमेशा परमेश्वर की अनाज्ञाकारिता की थी। स्तिफनुस ने कहा, "तुम लोग परमेश्वर के विरुद्ध हठीले और बलवा करने वाले हो। तुमने हमेशा पवित्र आत्मा को अस्वीकार किया, जैसे कि हमारे पूर्वजों ने हमेशा पवित्र आत्मा को अस्वीकार किया था और हमेशा उसके भविष्यद्वक्ताओं को मार डाला था। परन्तु जो उन्होंने किया था उसकी तुलना में तुमने और भी बुरा किया है! तुमने मसीह को मार डाला!"

स्तिफनुस ने कहा कि लोगों ने ऐसा क्या किया है जो उनके पूर्वजों से भी बुरा था?

उन्होंने मसीहा को मार डाला।

45:04

जब उन धार्मिक अगुवों ने यह सुना, तो वे इतने क्रोधित हो गए कि उन्होंने अपने कानों को बंद कर लिया और ऊँची आवाज में चिल्लाए। वे स्तिफनुस को घसीट कर नगर से बाहर ले गए और उसे मार डालने के लिए उसे पत्थर मारे।

स्तिफनुस के दोषारोपण पर धर्मगुरुओं ने कैसी प्रतिक्रिया दी?

वे स्तिफनुस को घसीट कर शहर के बाहर ले गए और उसे मार डालने के लिए उस पर पत्थरवाह किया।

45:05

जब स्तिफनुस मर रहा था, वह पुकार उठा, "हे यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर!" तब वह अपने घुटनों पर गिर पड़ा और फिर से पुकार उठा, "हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगाना।" तब वह मर गया।

मरने से पहले स्तिफनुस ने आखिरी बात क्या कही थी?

अन्तिम बात जो उसने कही वह यह थी, "हे स्वामी, यह पाप उन पर मत लगा।"

45:06

उस दिन, यरूशलेम में रहने वाले बहुत से लोगों ने यीशु के अनुयायियों को सताना आरम्भ कर दिया, इसलिए विश्वासी लोग अन्य स्थानों को भाग गए। परन्तु इसके बावजूद भी, जहाँ कहीं भी वे गए उन्होंने यीशु के बारे में प्रचार किया।

जब यरूशलेम में अत्याचार शुरू हुआ तो विश्वासियों ने क्या किया?

वे दूसरी जगहों पर भाग गए और जहाँ भी गए यीशु के बारे में प्रचार किया।

45:07

फिलिप्पुस नाम का यीशु का एक विश्वासी था। जैसा कि अन्य बहुत से विश्वासियों ने किया था वह भी यरूशलेम से भाग गया। वह सामरिया के क्षेत्र में चला गया। वहाँ उसने लोगों में यीशु के बारे में प्रचार किया। बहुत से लोगों ने उस पर विश्वास किया और उद्धार पाया। एक दिन, फिलिप्पुस के पास परमेश्वर की ओर से एक स्वर्गदूत आया और उससे जंगल में जाने के लिए, और एक सड़क पर चलने के लिए कहा। फिलिप्पुस वहाँ चला गया। जब वह उस सड़क पर चल रहा था, तो उसने एक व्यक्ति को अपने रथ में जाते हुए

देखा। यह व्यक्ति कूश देश का एक महत्वपूर्ण अधिकारी था। पवित्र आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा कि जाकर उस व्यक्ति के साथ-साथ चले।

फिलिप्पुस जंगल में सड़क पर किससे मिला?

फिलिप्पुस जंगल में सड़क पर किससे मिला?

45:08

इसलिए फिलिप्पुस रथ के पास गया। उसने सुना कि वह कूशी परमेश्वर के वचन को पढ़ रहा था। जो यशायाह भविष्यद्वक्ता ने लिखा था वह उसे पढ़ रहा था। वह पढ़ रहा था, "वे उसे वध की जाने वाली भेड़ के समान ले गए, और जैसे एक मेमना शान्त होता है, उसने भी एक शब्द नहीं कहा। उन्होंने उसके साथ अनुचित व्यवहार किया और उसका आदर नहीं किया। उन्होंने उसका प्राण ले लिया।"

फिलिप्पुस के संपर्क में आने पर कूशी अधिकारी क्या कर रहा था?

वह पढ़ रहा था कि भविष्यद्वक्ता यशायाह ने क्या लिखा है।

45:09

फिलिप्पुस ने उस कूशी से पूछा, "जो तू पढ़ रहा है क्या तू उसे समझता भी है?" उस कूशी ने जवाब दिया, "नहीं। जब तक कोई इसे मुझे न समझाए, तब तक मैं इसे नहीं समझ सकता। कृपा करके मेरे पास आकर बैठ। यशायाह यह अपने बारे में लिख रहा था या किसी और के?"

क्या अधिकारी उस भविष्यवाणी को समझ पाया था जिसे वह पढ़ रहा था?

नहीं, उसे समझाने के लिए किसी की जरूरत थी।

45:10

फिलिप्पुस रथ पर चढ़ कर बैठ गया। तब उसने उस कूशी व्यक्ति को वह बताया जो यशायाह ने यीशु के बारे में लिखा था। फिलिप्पुस ने परमेश्वर के वचन के बहुत से अन्य भागों की भी चर्चा की। इस तरह से, उसने उस व्यक्ति को यीशु के बारे में शुभ संदेश सुनाया।

फिलिप्पुस ने किसके बारे में कहा कि यशायाह ने किसके बारे में लिखा था?

उन्होंने कहा कि यशायाह ने यीशु के बारे में लिखा था।

45:11

फिलिप्पुस और वह कूशी चलते हुए पानी के पास आए। उस कूशी ने कहा, "देख! यहाँ पानी है! क्या मैं बपतिस्मा ले सकता हूँ?" और उसने सारथी से रथ को रोकने के लिए कहा।

जब फिलिप्पुस ने भविष्यवाणी की व्याख्या की और वे पानी के पास आए, तो कूशी ने फिलिप्पुस से क्या पूछा?

कूशी ने पूछा कि क्या वह बपतिस्मा ले सकता है।

45:12

अतः वे पानी में चले गए, और फिलिप्पुस ने उस कूशी को बपतिस्मा दिया। जब वे पानी से बाहर आए, तो पवित्र आत्मा अचानक ही फिलिप्पुस को उठा कर किसी अन्य स्थान को ले गया। वहाँ फिलिप्पुस ने लोगों को यीशु के बारे में बताना जारी रखा।

कूशी अधिकारी को बपतिस्मा देने के बाद फिलिप का क्या हुआ?

पवित्र आत्मा फिलिप्पुस को दूसरी जगह ले गया।

45:13

वह कूशी अपने घर की यात्रा पर आगे बढ़ गया। वह प्रसन्न था कि वह अब यीशु को जानता था।

फिलिप के चले जाने के बाद कूशी अधिकारी ने क्या किया?

वह अपने घर की ओर यात्रा करता रहा, खुश था कि वह यीशु को जानता था।

46. शाऊल (पौलुस) का यीशु का अनुयायी बनना

46:01

शाऊल नाम का एक व्यक्ति था जिसने यीशु पर विश्वास नहीं किया था। जब वह जवान था, तब उसने स्तिफनुस को मारने वाले लोगों के कपड़ों की निगरानी की थी। बाद में, उसने विश्वासियों को सताया था। उसने यरूशलेम में घर-घर जाकर पुरुष व स्त्री दोनों को गिरफ्तार करके बंदीगृह में डाल दिया था। तब महायाजक ने शाऊल को दमिश्क नगर में जाने की अनुमति दी। उसने वहाँ के मसीहियों को गिरफ्तार करने और उनको वापिस यरूशलेम लेकर आने के लिए शाऊल से कहा।

शाऊल दमिश्क क्यों जा रहा था?

वह वहाँ यीशु के अनुयायियों को गिरफ्तार करने और उन्हें यरूशलेम वापस लाने के लिए गया था।

46:02

अतः शाऊल ने दमिश्क जाने की यात्रा आरम्भ की। उस नगर को पहुँचने से थोड़ा ही पहले, उसके चारों ओर आकाश से एक उज्जवल प्रकाश चमका, और वह भूमि पर गिर पड़ा। शाऊल ने किसी को कहते हुए सुना, "हे शाऊल! हे शाऊल! तू मुझे क्यों सता रहा है?" शाऊल ने पूछा, "हे प्रभु, तू कौन है?" यीशु ने उसे जवाब दिया, "मैं यीशु हूँ। तू मुझे सता रहा है!"

दमिश्क के रास्ते में यीशु ने शाऊल से क्या सवाल पूछा?

उसने शाऊल से पूछा, “तू मुझे क्यों सताता है?”

46:03

जब शाऊल उठा तो वह देख नहीं सकता था। उसके मित्र उसको दमिश्क में लेकर गए थे। शाऊल ने तीन दिन तक कुछ भी खाया या पिया नहीं था।

जब शाऊल तेज रोशनी देखकर उठा तो उसके साथ क्या हुआ?

शाऊल नहीं देख सका। उसके मित्र उसे दमिश्क ले गए, और उस ने तीन दिन तक न कुछ खाया न पिया।

46:04

दमिश्क में हनन्याह नाम का एक चेला था। परमेश्वर ने उससे कहा, "उस घर को जा जहाँ शाऊल ठहरा हुआ है। अपने हाथों को उस पर रख ताकि वह फिर से देखने लगे।" परन्तु हनन्याह ने कहा, "हे प्रभु, मैंने सुना है कि इस व्यक्ति ने विश्वासियों को कैसे सताया है।" परमेश्वर ने उसे जवाब दिया, "जा! मैंने उसे यहूदियों में और दूसरी जातियों के लोगों में मेरे नाम की घोषणा करने के लिए चुन लिया है। वह मेरे नाम के लिए बहुत कष्ट सहेगा।"

हनन्याह शाऊल से बात करने से क्यों डरती थी?

उसने सुना था कि शाऊल विश्वासियों को सता रहा था।

परमेश्वर ने क्या कहा था कि उसने शाऊल को किस उद्देश्य के लिए चुना था?

परमेश्वर ने शाऊल को यहूदियों और अन्य लोगों के समूह के लोगों के लिए परमेश्वर के नाम की घोषणा करने के लिए चुना था।

46:05

अत: हनन्याह शाऊल के पास गया, अपने हाथों को उस पर रखा, और कहा, "यीशु ने, जो यहाँ आने के तेरे मार्ग में तुझ पर प्रकट हुआ था, मुझे तेरे पास भेजा है ताकि तू फिर से देखने लगे, और पवित्र आत्मा तुझे भर दे।" तुरन्त ही शाऊल फिर से देखने में सक्षम हो गया, और हनन्याह ने उसे बपतिस्मा दिया। तब शाऊल ने भोजन किया और फिर से बलवंत हो गया।

हनन्याह ने शाऊल को फिर से देखने में कैसे समर्थ किया?

उसने उस पर हाथ रखा।

शाऊल के देखने के बाद हनन्याह ने उसके साथ क्या किया?

हनन्याह ने उसे बपतिस्मा दिया।

46:06

तभी से, शाऊल ने दमिश्क में रहने वाले यहूदियों में प्रचार करना आरम्भ कर दिया। उसने कहा, "यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है!" यहूदी लोग अचम्भित थे, क्योंकि शाऊल ने तो विश्वासियों को मार डालने का प्रयास किया था, परन्तु अब उसने यीशु में विश्वास किया था। शाऊल ने यहूदियों के साथ वाद-विवाद किया। उसने दिखाया कि यीशु ही मसीह था।

शाऊल ने तुरंत यहूदियों को कौन-सा संदेश सुनाना शुरू किया?

उसने प्रचार किया, “यीशु परमेश्वर का पुत्र है!”

46:07

बहुत दिनों के बाद, यहूदियों ने शाऊल को मार डालने की योजना बनाई। उन्होंने उसे मार डालने के लिए नगर के फाटक पर लोगों को भेजा। कि उसकी निगरानी करें परन्तु शाऊल ने उस योजना के बारे में सुन लिया, और उसके मित्रों ने बच कर निकलने में उसकी सहायता की। एक रात को उन्होंने उसे टोकरी में बैठा कर नगर की दीवार से उसे नीचे उतार दिया। दमिश्क से बच कर निकलने के बाद शाऊल ने यीशु के बारे में प्रचार करना जारी रखा।

शाऊल के प्रचार का यहूदियों ने क्या जवाब दिया?

उन्होंने शाऊल को मार डालने की योजना बनाई।

शाऊल दमिश्क से कैसे भाग निकला?

उसके दोस्तों ने उसे एक टोकरी में शहर की दीवार के ऊपर से नीचे उतारा ताकि वह बच सके।

46:08

शाऊल प्रेरितों से मिलने के लिए यरूशलेम गया, परन्तु वे उससे डरते थे। तब बरनबास नाम का एक विश्वासी शाऊल को प्रेरितों के पास लेकर गया। उसने उनको बताया कि शाऊल ने कैसे साहसी होकर दमिश्क में प्रचार किया था। उसके बाद, प्रेरितों ने शाऊल को स्वीकार कर लिया।

यरूशलेम में चेलों द्वारा स्वीकार किए जाने में शाऊल की मदद किसने की?

बरनबास शाऊल को प्रेरितों के पास ले गया और उन्हें बताया कि कैसे शाऊल ने दमिश्क में साहसपूर्वक प्रचार किया।

46:09

कुछ विश्वासी जो यरूशलेम के सताव से भाग गए थे वे दूर अंताकिया नगर में चले गए थे और यीशु के बारे में प्रचार करते थे। अंताकिया में रहने वाले लोग अधिकतर यहूदी नहीं थे, परन्तु पहली बार, उनमें से बहुत से लोग विश्वासी बन गए। बरनबास और शाऊल इन नए विश्वासियों को यीशु के बारे में और अधिक सिखाने के लिए वहाँ गए और कलीसिया को मजबूत किया। यीशु पर विश्वास करने वाले पहली बार अंताकिया में ही "मसीही" कहलाए।

अन्ताकिया में विश्वासी बनने वाले लोगों के बारे में क्या अलग था?

वे यहूदी नहीं थे।

अन्ताकिया में विश्वासियों के लिए सबसे पहले किस नाम का प्रयोग किया जाने लगा?

उन्होंने उन्हें "मसीही" कहा।

46:10

एक दिन, अंताकिया के मसीही लोग उपवास के साथ प्रार्थना कर रहे थे। पवित्र आत्मा ने उनसे कहा, "मेरे लिए बरनबास और शाऊल को उस काम को करने के लिए अलग कर दो जिसे करने के लिए मैंने उनको बुलाया है।" इसलिए अंताकिया की कलीसिया ने बरनबास और शाऊल के लिए प्रार्थना की और उन पर अपने हाथों को रखा। तब उन्होंने उनको अन्य बहुत से स्थानों पर यीशु के बारे में शुभ संदेश का प्रचार करने के लिए भेज दिया। बरनबास और शाऊल ने अलग-अलग जातियों के लोगों को शिक्षा दी, और बहुत से लोगों ने यीशु में विश्वास किया।

अन्ताकिया में कलीसिया क्या कर रही थी जब पवित्र आत्मा ने उन्हें बरनबास और शाऊल को अलग करने के लिए कहा?

वे प्रार्थना और उपवास कर रहे थे।

अन्ताकिया की कलीसिया ने शाऊल और बरनबास को किस उद्देश्य से भेजा था?

उन्होंने उन्हें और भी बहुत सी जगहों में यीशु के सुसमाचार का प्रचार करने के लिये भेजा।

47. फिलिप्पी में पौलुस और सीलास

47:01

जब शाऊल ने सम्पूर्ण रोमी साम्राज्य में यात्राएँ कीं तो उसने अपने रोमी नाम "पौलुस" का उपयोग करना आरम्भ कर दिया। एक दिन, पौलुस और उसका मित्र सीलास फिलिप्पी नगर में यीशु के बारे में शुभ संदेश सुनाने के लिए गए। वे नगर के बाहर नदी के किनारे एक स्थान पर गए जहाँ लोग प्रार्थना करने के लिए इकट्ठा थे। वहाँ वे लुदिया नाम की एक स्त्री से मिले जो एक व्यापारी थी। वह परमेश्वर से प्रेम करती थी और उसकी आराधना करती थी।

शाऊल ने कौन-सा रोमी नाम इस्तेमाल करना शुरू किया?

उन्होंने "पौलुस" नाम का इस्तेमाल करना शुरू किया।

यीशु के बारे में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए पौलुस और सीलास फिलिप्पी में कहाँ गए थे?

वे नगर के बाहर नदी के किनारे एक स्थान पर गए, जहां लोग प्रार्थना करने के लिये इकट्ठे होते थे।

47:02

परमेश्वर ने लुदिया को यीशु के बारे में संदेश पर विश्वास करने के लिए सक्षम किया। पौलुस और सीलास ने उसे और उसके परिवार को बपतिस्मा दिया। उसने पौलुस और सीलास को अपने घर ठहरने के लिए आमंत्रित किया, इसलिए वे वहाँ ठहर गए।

लुदिया के लिए यीशु पर विश्वास करना किस वजह से संभव हुआ?

परमेश्वर ने लुदिया को यीशु के बारे में संदेश समझने में सक्षम बनाया।

लुदिया के विश्वास करने के बाद पौलुस और सीलास ने क्या किया?

उन्होंने लुदिया और उसके परिवार को बपतिस्मा दिया।

47:03

पौलुस और सीलास लोगों से अक्सर उस स्थान पर मिलते थे जहाँ यहूदी लोग प्रार्थना किया करते थे। प्रतिदिन जब वे वहाँ जाते थे तो एक दासी लड़की जो दुष्टात्मा द्वारा नियंत्रित थी उनका पीछा किया करती थी। इस दुष्टात्मा के माध्यम से वह लोगों का भविष्य बताया करती थी, इसलिए वह भविष्य बताने वाली के रूप में अपने स्वामियों के लिए बहुत धन कमाया करती थी।

47:04

उनके जाते समय यह दासी लड़की चिल्लाया करती थी, "ये पुरुष परम प्रधान परमेश्वर के सेवक हैं। ये तुमको उद्धार पाने का मार्ग बता रहे हैं!" वह प्रतिदिन ऐसा किया करती थी जिससे कि पौलुस नाराज़ हो गया।

दुष्टात्मा से ग्रसित दासी पौलुस और सीलास को देखकर क्या चिल्लाती रही?

वह चिल्लाई, “ये लोग परमप्रधान परमेश्वर के सेवक हैं। वे तुमको उद्धार पाने का मार्ग बता रहे हैं!”

47:05

अंत में, एक दिन जब उस दासी लड़की ने चिल्लाना आरम्भ किया, तो पौलुस ने उसकी ओर मुड़ कर उसके अंदर की दुष्टात्मा से कहा, "यीशु के नाम से इसमें से निकल जा।" उसी समय उस दुष्टात्मा ने उसे छोड़ दिया।

दुष्टात्मा की गवाही पर पौलुस ने कैसी प्रतिक्रिया दी?

पौलुस ने दुष्टात्मा को दासी को छोड़ने का आदेश दिया।

47:06

उस दासी लड़की के स्वामी बहुत क्रोधित हो गए। उनको मालूम हो गया कि बिना उस दुष्टात्मा के वह दासी लड़की लोगों को भविष्य नहीं बता सकती थी। इसका अर्थ था कि लोग अब उसके स्वामियों को पैसा नहीं देंगे कि वह उनको भविष्य बताए कि उनके साथ क्या होगा।

दासी के मालिक इस बात से नाराज़ क्यों थे कि दुष्टात्मा चला गया था?

उन्होंने महसूस किया कि लोगों को भविष्य बताने के लिए लोग अब उन्हें पैसे नहीं देंगे।

47:07

इसलिए उस दासी लड़की के स्वामी पौलुस और सीलास को रोमी अधिकारियों के पास ले गए। उन्होंने पौलुस और सीलास को पीटा, और फिर उनको बन्दीगृह में डाल दिया।

47:08

उन्होंने पौलुस और सीलास को बन्दीगृह के ऐसे हिस्से में रखा जहाँ पर सबसे अधिक सिपाही थे। यहाँ तक कि उन्होंने उनके पैरों को लकड़ी के बड़े टुकड़ों में जोड़ दिया। परन्तु पौलुस और सीलास आधी रात के समय, परमेश्वर की स्तुति के गीत गा रहे थे।

आधी रात को बन्दीगृह में पौलुस और सीलास क्या कर रहे थे?

वे परमेश्वर की स्तुति के गीत गा रहे थे।

47:09

अचानक से, एक भयानक भूकम्प हुआ! बन्दीगृह के सारे द्वार खुल गए, और सारे कैदियों की जंजीरें खुल कर गिर गईं।

जब पौलुस और सीलास गा रहे थे तब क्या हुआ?

एक भयानक भूकंप आया, जेल के दरवाजे खुल गए और कैदियों की जंजीरें गिर गईं।

47:10

तब दरोगा जाग गया। उसने देखा कि बन्दीगृह के द्वार खुले हुए थे। उसने सोचा कि सारे कैदी बच कर भाग गए थे। वह डर गया कि उनके भाग जाने के कारण रोमी अधिकारी उसे मार डालेंगे, इसलिए वह स्वयं को मार डालने के लिए तैयार हो गया! परन्तु पौलुस उसे देख कर चिल्लाया, "रुक जा! स्वयं को नुकसान न पहुँचा। हम सब यहीं हैं।"

जेलर क्यों डर गया था?

उसने सोचा कि सभी कैदी भाग गए हैं, और रोमन अधिकारी उन्हें जाने देने के लिए उसे मार डालेंगे।

47:11

उस दरोगा ने काँपते हुए पौलुस और सीलास के पास आकर पूछा, "उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूँ?" पौलुस ने जवाब दिया, "प्रभु यीशु पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।" तब वह दरोगा पौलुस और सीलास को अपने घर ले गया और उनके घावों को धोया। पौलुस ने उसके घर के सब लोगों को यीशु के बारे में शुभ संदेश सुनाया।

जेलर ने पौलुस से क्या सवाल पूछा?

उसने पूछा, “उद्धार पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?”

पौलुस ने कहा कि दारोगा को उद्धार पाने के लिए क्या करना होगा?

पौलुस ने उसे प्रभू यीशु पर विश्वास करने के लिए कहा।

47:12

दरोगा और उसके पूरे परिवार ने यीशु पर विश्वास किया, इसलिए पौलुस और सीलास ने उनको बपतिस्मा दिया। तब दरोगा ने पौलुस और सीलास को भोजन करवाया, और वे एक साथ आनन्दित हुए।

47:13

अगले दिन नगर के अगुवों ने पौलुस और सीलास को बन्दीगृह से स्वतंत्र कर दिया और फिलिप्पी से चले जाने के लिए कहा। पौलुस और सीलास लुदिया और कुछ अन्य मित्रों से मिले और उसके बाद नगर से निकल गए। यीशु के बारे में शुभ संदेश फैलता गया, और कलीसिया बढ़ती गई।

47:14

पौलुस और अन्य मसीही अगुवों ने बहुत से नगरों की यात्रा की। उन्होंने लोगों को यीशु के बारे में शुभ संदेश सुनाया। उन्होंने कलीसियाओं के विश्वासियों को उत्साहित करने और शिक्षा देने के लिए कई पत्र भी लिखे। इनमें से कुछ पत्र बाइबल की पुस्तकें बन गए।

पौलुस और यीशु के अन्य अनुयायियों द्वारा कलीसियाओं में विश्वासियों को लिखे गए कुछ पत्रों का क्या हुआ?

इनमें से कुछ पत्र बाइबल की पुस्तकें बन गए।

48.यीशु ही प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह है

48:01

जब परमेश्वर ने संसार को बनाया तो सब कुछ अच्छा था। कोई पाप नहीं था। आदम और हव्वा एक दूसरे को प्रेम करते थे, और वे परमेश्वर से प्रेम करते थे। कोई बीमारी या मृत्यु नहीं थी। परमेश्वर ऐसे ही संसार को चाहता था।

दुनिया कैसी थी जब परमेश्वर ने पहली बार इसे बनाया था?

सब कुछ सिद्ध था, और कोई पाप, बीमारी, या मृत्यु नहीं थी।

48:02

शैतान ने साँप के माध्यम से बगीचे में हव्वा से बात की, क्योंकि वह उसे धोखा देना चाहता था। तब हव्वा और आदम ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया। क्योंकि उन्होंने पाप किया था इसीलिए पृथ्वी पर रहने वाले सब जन मरते हैं।

पृथ्वी पर हर कोई क्यों मरता है?

वे मरते हैं क्योंकि आदम और हव्वा ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया था।

48:03

क्योंकि आदम और हव्वा ने पाप किया था, इसलिए कुछ और भी बुरा हुआ। वे परमेश्वर के शत्रु बन गए। जिसके परिणाम-स्वरूप, तब से हर एक जन ने पाप किया है। हर एक जन जन्म से ही परमेश्वर का शत्रु है। परमेश्वर और लोगों के बीच में शान्ति नहीं थी। परन्तु परमेश्वर शान्ति स्थापित करना चाहता था।

जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति की क्या स्थिति होती है?

वे परमेश्वर के शत्रु हैं, और उसके साथ शान्ति नहीं रखते।

48:04

परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि हव्वा का एक वंशज शैतान के सिर को कुचलेगा। उसने यह भी कहा कि शैतान उसकी एड़ी को डसेगा। दूसरे शब्दों में, शैतान मसीह को मार डालेगा, परन्तु परमेश्वर उसे फिर से जीवित कर देगा। इसके बाद, मसीह शैतान की शक्ति को हमेशा के लिए समाप्त कर देगा। कई वर्षों के बाद, परमेश्वर ने प्रकट किया कि वह मसीह यीशु है।

इसका क्या अर्थ है कि शैतान हव्वा के वंश की "एड़ी को डसेगा"?

शैतान मसीहा को मार डालेगा, परन्तु परमेश्वर उसे फिर से जीवित करने के लिए जीवित करेगा।

48:05

परमेश्वर ने उस बाढ़ से अपने परिवार को बचाया जिसे वह लानेवाला था। नूह से एक नाव बनाने के लिए कहा कि वह इस प्रकार परमेश्वर ने उन लोगों को बचाया जो उस पर विश्वास करते थे। इसी प्रकार, वे सब के सब परमेश्वर के द्वारा मार डाले जाने के योग्य थे क्योंकि उन्होंने पाप किया था। परन्तु परमेश्वर ने उन सब को बचाने के लिए यीशु को भेजा जो उस पर विश्वास करते हैं।

किस प्रकार यीशु उस नाव के समान है जिसे परमेश्वर ने प्रदान किया जब उसने बाढ़ से पृथ्वी को नष्ट किया?

परमेश्वर ने यीशु को उन लोगों को बचाने के लिए एक मार्ग के रूप में भेजा जो उस पर विश्वास करते हैं।

48:06

सैकड़ों वर्षों तक, याजक परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाते रहे। यह दर्शाता है कि लोगों ने पाप किया, और यह कि वे परमेश्वर के द्वारा उनको दंडित किए जाने के योग्य थे। परन्तु वे बलिदान उनके पापों को क्षमा नहीं कर सके थे। यीशु सबसे बड़ा महायाजक है। उसने वह किया जो कोई याजक नहीं कर सकता था। उसने वह एकमात्र बलिदान होने के लिए स्वयं को दे दिया जो हर किसी के पापों को मिटा सकता था। उसने स्वीकार किया कि परमेश्वर उन सब के पापों के लिए उसे दंडित करे। इस कारण, यीशु सिद्ध महायाजक था।

यीशु उन याजकों से किस प्रकार भिन्न है जो उससे पहले आए थे?

उसने स्वयं को एकमात्र बलिदान के रूप में पेश किया जो सभी के पाप को दूर कर सकता था।

48:07

परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, "मैं तेरे द्वारा संसार के सब कुलों को आशीष दूँगा।" यीशु इसी अब्राहम का वंशज था। परमेश्वर अब्राहम के माध्यम से सब कुलों को आशीष देता है, क्योंकि जो यीशु पर विश्वास करते हैं परमेश्वर उन सब को पाप से बचाता है। जब ये लोग यीशु पर विश्वास करते हैं, तो परमेश्वर उनको अब्राहम के वंशज मानता है।

अब्राहम से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा यीशु के द्वारा कैसे पूरी होती है?

परमेश्वर हर उस व्यक्ति को मानता है जो यीशु में विश्वास करता है, चाहे वह किसी भी समूह का हो, अब्राहम का वंशज है।

48:08

परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि वह अपना निज पुत्र, उसके लिए बलिदान कर दे। परन्तु फिर परमेश्वर ने इसहाक के बदले में बलि करने के लिए एक मेमना दिया। हम सब अपने पापों के लिए मार डाले जाने के योग्य थे! परन्तु परमेश्वर ने हमारे स्थान पर मरने के लिए यीशु को बलिदान के रूप में दिया। इसी कारण से हम यीशु को परमेश्वर का मेमना कहते हैं।

यीशु उस मेढ़े के समान कैसे है जो इसहाक के स्थान पर बलिदान किया गया था?

यीशु परमेश्वर का मेमना है, जिसे परमेश्वर ने हमारे स्थान पर बलिदान होने के लिये दिया।

48:09

जब परमेश्वर ने मिस्र पर अंतिम विपत्ति भेजी तो उसने हर एक इस्राएली परिवार से कहा कि वे एक मेमने की बलि करें। उस मेमने में कोई दोष नहीं होना चाहिए। तब अपने दरवाजे की चौखट के ऊपर और बगलों में उन्हें उसके लहू को लगाना था। जब परमेश्वर ने उस लहू को देखा तो वह उनके घरों से आगे बढ़ गया और उनके पहलौठे पुत्रों को नहीं मारा। जब यह हुआ तो परमेश्वर ने इसे फसह का पर्व कहा।

48:10

यीशु फसह के पर्व के एक मेमने की तरह है। उसने कभी पाप नहीं किया, इसलिए उसमें कुछ भी गलत नहीं था। वह फसह के पर्व के समय पर मरा। जब कोई यीशु पर विश्वास करता है, तब यीशु का लहू उस व्यक्ति के पापों की कीमत चुकाता है। यह ऐसा है जैसे कि परमेश्वर उस व्यक्ति के पास से आगे बढ़ गया, क्योंकि वह उसे दण्ड नहीं देता है।

यीशु फसह के मेम्ने के समान कैसे है?

यीशु ने कभी पाप नहीं किया और उसके साथ कुछ भी गलत नहीं है, इसलिए उसका खून (उसकी मृत्यु) परमेश्वर को छोड़ देता है और यीशु पर विश्वास करने वाले को दंडित नहीं करता है।

48:11

परमेश्वर ने इस्राएली लोगों के साथ एक वाचा बाँधी, क्योंकि वे ऐसे लोग थे जिनको परमेश्वर ने अपना होने के लिए चुना था। परन्तु अब परमेश्वर ने एक ऐसी वाचा बाँधी है जो कि सब के लिए है। यदि किसी भी जाति का कोई भी जन इस नई वाचा को स्वीकार करता है, तो वह परमेश्वर के लोगों में शामिल हो जाता है। वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह यीशु पर विश्वास करता है।

परमेश्वर के लोगों का भाग कौन हो सकता है?

किसी भी समूह का कोई भी व्यक्ति यीशु में विश्वास करके नई वाचा के द्वारा परमेश्वर के लोगों में शामिल हो सकता है।

48:12

मूसा एक ऐसा भविष्यद्वक्ता था जिसने परमेश्वर के वचन को बड़ी सामर्थ के साथ प्रचार किया था। परन्तु यीशु सब भविष्यद्वक्ताओं में सबसे बड़ा है। वह परमेश्वर है, इसलिए जो कुछ भी उसने किया और कहा वह परमेश्वर के कार्य और वचन थे। इसीलिए पवित्र-शास्त्र यीशु को परमेश्वर का वचन कहता है।

यीशु किस प्रकार सबसे महान भविष्यद्वक्ता है?

वह परमेश्वर है, इसलिए उसने जो कुछ किया और कहा वह सब परमेश्वर के कार्य और वचन थे।

48:13

परमेश्वर ने राजा दाऊद से प्रतिज्ञा की थी कि राजा के रूप में उसका एक वंशज परमेश्वर के लोगों पर सदा के लिए शासन करेगा। यीशु परमेश्वर का पुत्र और मसीह है, इसलिए वह राजा दाऊद का वंशज है जो सदा के लिए राज्य कर सकता है।

यीशु राजा दाऊद से किए गए परमेश्वर के वादे को कैसे पूरा करता है?

क्योंकि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, वह दाऊद का वंशज है जो हमेशा के लिए शासन कर सकता है।

48:14

दाऊद तो इस्राएल का राजा था, परन्तु यीशु सारे जगत का राजा है! वह फिर से आएगा और सदा के लिए न्याय और शान्ति के साथ अपने राज्य पर शासन करेगा।

किस तरह से यीशु दाऊद से बड़ा राजा है?

यीशु पूरे ब्रह्मांड का राजा है।

49. परमेश्वर की नई वाचा

49:01

एक स्वर्गदूत ने एक जवान स्त्री मरियम से कहा कि वह परमेश्वर के पुत्र को जन्म देगी। वह अभी कुँआरी थी, परन्तु पवित्र आत्मा उसके पास आया और वह गर्भवती हुई। उसने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम उसने यीशु रखा। इसीलिए, यीशु परमेश्वर और मनुष्य दोनों है।

यीशु परमेश्वर और मनुष्य दोनों कैसे हैं?

यीशु मनुष्य बन गया क्योंकि वह एक स्त्री से पैदा हुआ था। उसी समय, वह ईश्वर था और है, और पवित्र आत्मा के एक कार्य द्वारा गर्भवती हुई कुंवारी से पैदा हुआ था।

49:02

यीशु ने बहुत से चमत्कार किए जो दिखाते हैं कि वह परमेश्वर है। वह पानी पर चला और आँधी को शान्त किया। उसने बहुत से बीमार लोगों को चंगा किया और बहुत से लोगों में से दुष्टात्माओं को निकाला। उसने मरे हुए लोगों को जीवित कर दिया, और उसने पाँच रोटी और दो मछलियों को 5,000 लोगों को खिलाने के लिए पर्याप्त भोजन में परिवर्तित कर दिया।

यीशु ने कैसे साबित किया कि वह परमेश्वर है?

उन्होंने कई चमत्कार किए।

49:03

यीशु एक महान शिक्षक भी था। जो कुछ भी उसने सिखाया, वह उसने सिद्धता के साथ सिखाया। जो वह लोगों से करने के लिए कहता है वह उन्हें करना चाहिए क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र है। उदाहरण के लिए, उसने सिखाया कि तुमको अन्य लोगों को उसी रीति से प्रेम करने की आवश्यकता है जैसे तुम स्वयं को प्रेम करते हो।

हमें दूसरे लोगों से कैसे प्यार करना चाहिए?

हमें उनसे उसी तरह प्यार करना चाहिए जैसे हम खुद से प्यार करते हैं।

49:04

उसने यह भी सिखाया कि तुमको सब वस्तुओं से अधिक और अपनी संपत्ति से भी अधिक परमेश्वर को प्रेम करना चाहिए।

हमें सबसे ज्यादा किससे प्यार करना चाहिए?

हमें किसी भी चीज़ से बढ़कर परमेश्वर से प्यार करना चाहिए।

49:05

यीशु ने कहा कि संसार में किसी भी चीज को प्राप्त करने से अधिक अच्छा है परमेश्वर के राज्य में होना। उसके राज्य में तुम्हारे प्रवेश करने के लिए आवश्यक है कि परमेश्वर तुमको तुम्हारे पापों से बचाए।

किसी के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात क्या है?

सबसे महत्वपूर्ण बात परमेश्वर के राज्य से संबंधित होना है।

49:06

यीशु ने कहा कि कुछ लोग उसे ग्रहण करेंगे। परमेश्वर उन लोगों को बचाएगा। परन्तु दूसरे लोग उसे ग्रहण नहीं करेंगे। उसने यह भी कहा कि कुछ लोग अच्छी भूमि के समान हैं, क्योंकि वे यीशु के बारे में शुभ संदेश को स्वीकार कर लेते हैं, और परमेश्वर उनको बचाता है। परन्तु कुछ लोग मार्ग की कठोर भूमि के समान हैं। परमेश्वर का वचन बीज के समान मार्ग पर गिरता है, परन्तु वहाँ कुछ भी नहीं उगता है। ये लोग यीशु के बारे में संदेश को अस्वीकार कर देते हैं। वे उसके राज्य में प्रवेश करने से इंकार कर देते हैं।

लोग क्या करते हैं जब वे यीशु के संदेश को अस्वीकार करते हैं?

उन्होंने उसके राज्य में प्रवेश करने से इंकार कर दिया।

49:07

यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर पापियों से बहुत प्रेम करता है। वह उनको क्षमा करना चाहता है और उनको अपनी संतान बनाना चाहता है।

परमेश्वर पापियों के लिए क्या करना चाहता है?

वह उन्हें क्षमा करना चाहता है और उन्हें अपनी संतान बनाना चाहता है।

49:08

यीशु ने यह भी बताया कि परमेश्वर पाप से घृणा करता है। क्योंकि आदम और हव्वा ने पाप किया, इसलिए उनके सारे वंशजों ने भी पाप किया। इस संसार में रहने वाला हर एक जन पाप करता है और परमेश्वर से दूर है। हर एक जन परमेश्वर का शत्रु है।

परमेश्वर किससे घृणा करता है?

वह पाप से घृणा करता है।

49:09

परन्तु परमेश्वर ने इस संसार में रहने वाले हर एक जन से इस रीति से प्रेम किया: उसने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया ताकि परमेश्वर उनको दण्ड न दे जो उस पर विश्वास करते हैं। इसके बजाए, वे उसके साथ हमेशा के लिए रहेंगे।

49:10

तुम मरने के योग्य हो, क्योंकि तुमने पाप किया है। तुम से परमेश्वर का क्रोधित होना उचित ही है, इसकी अपेक्षा, वह यीशु पर क्रोधित हुआ। उसने यीशु को क्रूस की मृत्यु देकर दण्ड दिया।

हमारे पाप के कारण हम परमेश्वर से किस योग्य हैं?

हम मरने के लायक हैं।

यीशु के क्रूस पर मरने पर परमेश्वर ने उसके साथ क्या किया?

परमेश्वर ने यीशु को आपके और मेरे मानवजाति के पाप के लिए दंडित किया।

49:11

यीशु ने कभी पाप नहीं किया, परन्तु उसने परमेश्वर को उसे दण्ड देने दिया। उसने मर जाना स्वीकार किया। इस रीति से, तुम्हारे पापों को और इस संसार में रहने वाले हर एक जन के पापों को उठा ले जाने के लिए वह एक सिद्ध बलिदान था। यीशु ने स्वयं को परमेश्वर के लिए बलिदान कर दिया, इसलिए परमेश्वर किसी भी पाप को, यहाँ तक कि भयंकर पापों को भी क्षमा करता है।

यीशु का बलिदान संसार के प्रत्येक व्यक्ति के पापों को दूर करने में सक्षम क्यों था?

यीशु हमारे पापों को उठा सकता था क्योंकि उसने कभी पाप नहीं किया और वह सिद्ध बलिदान था।

49:12

भले ही यदि तुम बहुत से अच्छे कामों को करते हो, तो इसके द्वारा परमेश्वर तुमको नहीं बचाएगा। उसका मित्र बनने के लिए ऐसा कुछ भी नहीं है जो तुम कर सकते हो। इसकी अपेक्षा, तुमको विश्वास करना है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, और वह तुम्हारे बदले में क्रूस पर मर गया, और यह भी कि परमेश्वर ने उसे फिर से जीवित कर दिया। यदि तुम इस पर विश्वास करो, तो परमेश्वर तुम्हारे पापों की क्षमा देगा।

49:13

परमेश्वर उस हर एक जन को बचाएगा जो यीशु पर विश्वास करता है और उसे अपना प्रभु स्वीकार करता है। परन्तु वह उनको नहीं बचाएगा जो उस पर विश्वास नहीं करते हैं। यह कोई मायने नहीं रखता कि तुम धनी हो या गरीब हो, पुरुष हो या स्त्री हो, बूढ़े हो या जवान हो, या तुम कहाँ रहते हो। परमेश्वर तुम से प्रेम करता है और चाहता है कि तुम यीशु पर विश्वास करो कि वह तुम्हारा मित्र बन सके।

परमेश्वर किसे बचाएगा?

परमेश्वर उन सभी को बचाएगा जो यीशु में विश्वास करते हैं और जो उन्हें अपना प्रभू स्वीकार करते हैं।

49:14

यीशु तुमको बुला रहा है कि उस पर विश्वास करो और बपतिस्मा लो। क्या तुम विश्वास करते हो कि परमेश्वर का एकलौता पुत्र, यीशु ही मसीह है? क्या तुम विश्वास करते हो कि तुम एक पापी हो और यह कि तुम परमेश्वर द्वारा तुमको दंडित किए जाने के योग्य हो? क्या तुम विश्वास करते हो कि तुम्हारे पापों को मिटाने के लिए यीशु क्रूस पर मरा?

49:15

यदि तुम यीशु पर और जो उसने तुम्हारे लिए किया है उस पर विश्वास करते हो, तो तुम एक मसीही हो! शैतान अपने अंधकार के राज्य में अब तुम पर शासन नहीं करता है। अब परमेश्वर अपने प्रकाश के राज्य में तुम पर शासन करता है। उसने तुमको पाप करने से रोक दिया है, जिसे तुम किया करते थे। उसने तुमको एक नया, उचित जीवन दिया है।

49:16

यदि तुम एक मसीही हो तो जो यीशु ने किया है उसके कारण परमेश्वर ने तुम्हारे पापों को क्षमा कर दिया है। अब, परमेश्वर एक शत्रु की अपेक्षा तुम्हें एक घनिष्ठ मित्र मानता है।

यदि आप यीशु के अनुयायी हैं, तो क्या आप अभी भी परमेश्वर के शत्रु हैं?

नहीं, अब आप परमेश्वर के घनिष्ठ मित्र हैं।

49:17

यदि तुम परमेश्वर के मित्र हो और प्रभु यीशु के सेवक हो तो तुम उन बातों का पालन करने की इच्छा करोगे जो यीशु तुमको सिखाता है। भले ही तुम एक मसीही हो, शैतान अभी भी पाप करने के लिए तुम्हारी परीक्षा करेगा। परन्तु परमेश्वर हमेशा वह करता है जो वह कहता है कि वह करेगा। वह कहता है कि यदि तुम अपने पापों को मान लो, तो वह तुमको क्षमा कर देगा। वह तुमको पाप के विरुद्ध लड़ने का सामर्थ देगा।

क्या यीशु के अनुयायी अभी भी पाप करने के लिए प्रलोभित हैं?

हाँ, वे परीक्षा में हैं।

जब यीशु के अनुयायी पाप करते हैं तो उन्हें क्या करना चाहिए?

उन्हें अपने पापों को परमेश्वर के सामने स्वीकार करना चाहिए।

यदि हम अपने पापों को मान लें तो परमेश्वर क्या करने की प्रतिज्ञा करता है?

वह हमें क्षमा करने और हमें पाप के विरुद्ध लड़ने की शक्ति देने का वादा करता है।

49:18

परमेश्वर तुमको प्रार्थना करने और उसके वचन को पढ़ने के लिए कहता है। वह तुमको अन्य विश्वासियों के साथ मिल कर उसकी आराधना करने के लिए भी कहता है। तुमको अन्य लोगों को भी बताना है कि उसने तुम्हारे लिए क्या किया है। यदि तुम इन सब कामों को करो, तो तुम उसके एक पक्के मित्र बन जाओगे।

परमेश्वर यीशु के अनुयायियों को क्या करने के लिए कहता है उनमें से कुछ चीज़ें क्या हैं?

वह हमें प्रार्थना करने, उसके वचन का अध्ययन करने, उसकी आराधना करने और दूसरों को यह बताने के लिए कहता है कि उसने हमारे लिए क्या किया है।

50. जब यीशु वापस लौटेगा

50:01

लगभग 2,000 वर्षों से, संसार में सब स्थानों पर अधिक से अधिक लोग मसीह यीशु के बारे में शुभ संदेश को सुन रहे हैं। कलीसिया उन्नति कर रही है। यीशु ने वादा किया कि वह संसार के अंत में वापिस लौटेगा। यद्यपि वह अभी वापिस नहीं आया है, तौभी वह अपने वादे को पूरा करेगा।

पिछले 2,000 वर्षों के दौरान, यीशु में विश्वास करने वालों की संख्या का क्या हुआ है?

संख्या बढ़ती जा रही है।

50:02

जब कि हम यीशु के वापिस लौटने की प्रतीक्षा करते हैं, परमेश्वर हमसे ऐसी रीति से जीवन जीने की इच्छा करता है जो पवित्र है और जो उसका आदर करता है। जब यीशु पृथ्वी पर रह रहा था तब उसने कहा, "मेरे चेले संसार भर में सब जगहों के लोगों को परमेश्वर के राज्य के बारे में शुभ संदेश प्रचार करेंगे, और तब अंत आ जाएगा।"

जब हम यीशु के लौटने की प्रतीक्षा करते हैं तो परमेश्वर कैसे चाहता है कि हम जीवित रहें?

वह चाहता है कि हम ऐसे तरीके से जिएं जो पवित्र हो और जो उसका सम्मान करता हो।

यीशु ने कहा था कि दुनिया के अंत से पहले क्या होगा?

उनके शिष्य दुनिया में हर जगह लोगों को परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करेंगे।

50:03

बहुत सी जातियों ने अभी तक यीशु के बारे में नहीं सुना है। स्वर्ग को लौट जाने से पहले, यीशु ने मसीहियों से उन लोगों को शुभ संदेश सुनाने को कहा जिन्होंने इसे कभी नहीं सुना है। उसने कहा, "जाओ और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ!" और "कटाई करने के लिए खेत पक चुके हैं!"

50:04

यीशु ने यह भी कहा, "किसी व्यक्ति का सेवक अपने स्वामी के बड़ा नहीं होता। इस संसार के महत्वपूर्ण लोगों ने मुझसे नफरत की, और मेरे कारण वे तुमको भी सताएँगे और मार डालेंगे। इस संसार में तुम पीड़ित होओगे, परन्तु मज़बूत बनो, क्योंकि मैंने शैतान को हरा दिया है जो इस संसार पर शासन करता है। यदि तुम अंत तक मेरे विश्वासयोग्य बने रहो, तो परमेश्वर तुमको बचाएगा!"

जिस संसार ने यीशु से घृणा की, वह उसके चेलों के साथ कैसा व्यवहार करेगा?

संसार उसके शिष्यों को भी कष्ट देगा।

जो अंत तक विश्वासयोग्य रहते हैं उनके लिए परमेश्वर का क्या वादा है?

वह वायदा करता है कि परमेश्वर उन्हें बचाएगा।

50:05

यीशु ने अपने चेलों को यह समझाने के लिए एक कहानी सुनाई कि जब संसार का अंत होता है तो लोगों के साथ क्या होगा। उसने कहा, "किसी व्यक्ति ने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। जब वह सो रहा था तो उसका शत्रु आया और गेहूँ के बीजों के बीच में जंगली पौधे के बीजों को बो दिया, और फिर वह चला गया।"

दुनिया के अंत के बारे में यीशु की कहानी में, गेहूँ के बीच जंगली पौधे कैसे आ गए?

एक दुश्मन ने उन्हें लगाया।

50:06

"जब पौधे अंकुरित हुए तो सेवकों ने उस व्यक्ति से कहा, 'हे स्वामी, तूने तो अपने खेत में अच्छा बीज बोया था। तो फिर इसमें जंगली पौधे क्यों हैं?' उस व्यक्ति ने जवाब दिया, 'केवल मेरे शत्रु ही उनको बोना चाहेंगे। यह मेरा कोई शत्रु है जिसने ऐसा किया है।'"

50:07

"उन सेवकों ने अपने स्वामी को जवाब दिया, 'क्या हमें जंगली पौधों को उखाड़ देना चाहिए?' उस स्वामी ने कहा, 'नहीं। यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम कुछ गेहूँ को भी उखाड़ दोगे। कटाई के समय तक प्रतीक्षा करो। तब जंगली पौधों को गट्ठों में इकट्ठा कर लो ताकि तुम उनको जला सको। परन्तु गेहूँ को मेरे खत्ते में लेकर आओ।'"

नौकरों ने जंगली घास क्यों नहीं निकाली?

उनका स्वामी नहीं चाहता था कि वे गलती से जंगली घास के साथ-साथ गेहूँ भी काट लें।

50:08

चेलों ने इस कहानी के मतलब को नहीं समझा, इसलिए उन्होंने यीशु से उनको समझाने का निवेदन क्या। यीशु ने कहा, "अच्छा बीज बोने वाला व्यक्ति मसीह का प्रतिनिधित्व करता है। खेत संसार का प्रतिनिधित्व करता है। अच्छा बीज परमेश्वर के राज्य के लोगों का प्रतिनिधित्व करता है।"

अच्छा बीज क्या दर्शाता है?

अच्छा बीज परमेश्वर के राज्य के लोगों को दर्शाता है।

50:09

“जंगली दाने उन लोगों को दर्शाते हैं जो शैतान के हैं, जो दुष्ट है। मनुष्य का शत्रु, जिसने जंगली पौधे रोपे, वह शैतान को दर्शाता है। कटाई इस संसार के के अन्त को दर्शाती है, और कटाई करने वाले परमेश्वर के स्वर्गदूतों को दर्शाते हैं।"

फसल क्या दर्शाती है?

फसल की कटनी दुनिया के अंत का प्रतिनिधित्व करती है।

50:10

"जब संसार का अंत होगा तब स्वर्गदूत उन सब लोगों को एक साथ इकट्ठा करेंगे जो शैतान के हैं। वे स्वर्गदूत उनको एक बहुत ही धधकती आग में फेंक देंगे। वहाँ वे लोग भयंकर पीड़ा में रोएँगे और अपने दाँत पीसेंगे। परन्तु जो लोग धर्मी हैं, जिन्होंने यीशु का अनुसरण किया है, वे उनके परमेश्वर पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे।"

दुनिया के अंत में शैतान के लोगों का क्या होगा?

स्वर्गदूत उन्हें इकट्ठा करेंगे और उन्हें बहुत गर्म आग में झोंक देंगे, जहाँ वे बुरी तरह पीड़ित होंगे।

50:11

यीशु ने यह भी कहा कि वह संसार का अंत होने से पहले पृथ्वी पर लौटेगा। वह उसी तरीके से वापिस आएगा जैसे वह गया था। अर्थात, उसके पास वास्तविक शरीर होगा, और वह आकाश में बादलों पर सवार होकर आएगा। जब यीशु लौटता है, तो हर एक मसीही जो मर चुके हैं मरे हुओं में से जी उठेंगे और उससे आकाश में मिलेंगे।

यीशु किस रूप में पृथ्वी पर लौटेगा?

वह वैसे ही लौटेगा जैसे उसने छोड़ा था, एक वास्तविक शरीर के साथ, और आकाश में बादलों पर।

जब यीशु वापस आएगा, तो यीशु के प्रत्येक अनुयायी का क्या होगा जो मर चुका है?

वे भी आकाश में उससे मिलने के लिए उठेंगे।

50:12

तब जो मसीही अभी भी जीवित हैं वे आकाश में उठा लिए जाएँगे और उन दूसरे मसीहियों के साथ शामिल हो जाएँगे जो मरे हुओं में से जी उठते हैं। वे सब वहाँ यीशु के साथ होंगे। उसके बाद, यीशु अपने लोगों के साथ रहेगा। जब वे एक साथ रहते हैं तो उनके पास सदा के लिए पूरी शान्ति होगी।

जब यीशु वापस आएगा, तो यीशु के अनुयायियों का क्या होगा जो अभी तक जीवित हैं?

यीशु के अनुयायी जो जीवित हैं वे आकाश में उठा लिए जायेंगे और यीशु के अन्य अनुयायियों के साथ जुड़ेंगे जो मृतकों में से जी उठे थे।

50:13

यीशु ने उस पर विश्वास करने वाले हर एक जन को एक मुकुट देने की प्रतिज्ञा की है। वे सदा के लिए परमेश्वर के साथ हर एक चीज पर शासन करेंगे। उनके पास सिद्ध शान्ति होगी।

50:14

परन्तु परमेश्वर उन सब का न्याय करेगा जो यीशु पर विश्वास नहीं करते हैं। वह उनको नरक में डाल देगा। वहाँ वे रोएँगे और अपने दाँत पीसेंगे, और वे हमेशा पीड़ित होते रहेंगे। कभी न बुझने वाली आग उनको लगातार जलाती रहेगी, और कीड़े उनको खाने से कभी नहीं रुकेंगे।

50:15

जब यीशु वापस लौटेगा, तो वह पूरी रीति से शैतान को और उसके राज्य को नष्ट कर देगा। वह शैतान को नरक में डाल देगा। वहाँ शैतान हमेशा के लिए जलता रहेगा, उन सब के साथ जिन्होंने परमेश्वर की बातों को मानने के बजाए शैतान के पीछे चलने का चुनाव किया था।

जब यीशु वापस आएगा तो शैतान के साथ क्या करेगा?

यीशु शैतान को नरक में डालेगा, जहाँ वह हमेशा के लिए जल जाएगा।

50:16

क्योंकि आदम और हव्वा ने परमेश्वर की अनाज्ञाकारिता की थी और पाप को इस संसार में लेकर आए थे, परमेश्वर ने उसे श्राप दिया और उसे नष्ट करने का निर्णय किया। परन्तु किसी दिन परमेश्वर एक नए स्वर्ग और एक नई पृथ्वी की रचना करेगा जो सिद्ध होंगे।

50:17

यीशु और उसके लोग उस नई पृथ्वी पर रहेंगे, और वह सदा के लिए सब चीजों पर शासन करेगा। वह लोगों की आँखों से हर एक आँसू को पोंछ देगा। अब कोई भी पीड़ित या दुःखी नहीं होगा। वे रोएँगे नहीं। वे बीमार नहीं होंगे या मरेंगे नहीं। और वहाँ कुछ भी बुराई नहीं होगी। यीशु अपने राज्य पर न्यायपूर्वक, और शान्ति के साथ शासन करेगा। वह हमेशा के लिए अपने लोगों के साथ रहेगा।

नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में जीवन कैसा होगा?

यीशु अपने राज्य में न्याय और शांति से शासन करेगा, और वहाँ कोई और पीड़ा नहीं होगी।

योगदानकर्ताओं

Open Bible Stories Translation Questions योगदानकर्ताओं

Acsah Jacob
Dr. Bobby Chellappan
Antoney Raj
Hind Prakash
Jinu Jacob
Shojo John
Vipin Bhadran

Hindi Open Bible Stories योगदानकर्ताओं

Acsah Jacob
Antoney Raj
Cdr. Thomas Mathew
Dr. Bobby Chellapan
Hind Prakash
Jinu Jacob
Shojo John
Vipin Bhadran